जनयुग प्रकाशन : (१)

चीन में जोतने वालों को ज़मीन कैसे मिली ?

(सिआओ चिएन की लिखी 'How the Tillers Win Back Their Land' का हिन्दी अनुवाद)

अनुवादक
ओमप्रकाश पालीवाल

जनयुग प्रकाशन गृह, आगरा

१९५२] [सवा रुपया

प्रकाशक :—
पद्मकुमार जैन
जनयुग प्रकाशनगृह, आगरा ।

[पहला संस्करण : २००० – मार्च १९५२]

मुद्रक :—
हरेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस,
१८७४/२, नाई की मंडी, आगरा ।

निवेदन

दूसरे महायुद्ध के बाद जिस घटना ने, सारी दुनिया और खास तौर से एशिया के गुलाम देशों का सबसे अधिक ध्यान खींचा, वह थी चीन की महान् क्रांति। पहली अक्टूबर १६४६ को चीन में एक नई जनवादी सरकार कायम हुई। इस बात को अभी पूरे तीन साल नहीं बीते हैं। इतने थोड़े अरसे में महान् नेता माओ जे तुंग की रहनुमाई में चीनी राष्ट्र ने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक, सभी क्षेत्रों में भारी प्रगति कर दिखाई है। नये लोकराज की इन सफलताओं को देखकर सारा संसार चकित है।

आखिर चीन की इस आश्चर्यजनक प्रगति का रहस्य क्या है? जिस चीन में कल तक लाखों इंसान अकाल और भूख से मरते रहे हों वह आज हिन्दुस्तान जैसे जरूरतमंद देशों को लाखों टन चावल कैसे सप्लाई कर रहा है? पीकिंग और शंघाई जैसे शहरों में जहाँ कल तक दसियों हजार बहिनें अपना शरीर बेच कर रोजी कमाती थीं, वहाँ आज एक भी वेश्या क्यों नहीं नजर आती? जहाँ कल तक आम जनता–गरीब किसान और मजदूरों–के लिये 'काला अक्षर भैंस बराबर' था वहाँ आज गाँव गाँव में स्कूल कैसे खुल गये हैं?

यह सब, किसी जादू की लकड़ी फेरने या छूमंतर पढ़ देने से नहीं हुआ है। इसके पीछे इतिहास की बड़ी ताकतें काम कर रही हैं। इसके पीछे एक ठोस विचारधारा है और एक मजबूत नेतृत्व है। समाज का विकास कैसे होता है और इतिहास के क्या नियम हैं, इन्हें जानने वाली समझ है, और इस समझ को अमल की कसौटी पर कसने वाला नेतृत्व है। मार्क्स से लेकर माओ तक, मानव इतिहास की एक सदी में, यह समझ सबसे अधिक क्रांतिकारी और सच्ची साबित हो चुकी है।

आज इंसानियत इतिहास के जिस दौर से गुज़र रही है उसमें समाजशास्त्र के विद्यार्थी को सही नतीजे निकालने के लिये मसाले की कमी नहीं है। वह देख सकता है कि चीन के खेतों और रूस के कारखानों में काम करने वाली इंसानियत सिर्फ खाना कपड़ा ही नहीं पैदा कर रही, वह सदाचार और नैतिकता में भी इतिहास की अगली मंज़िल में कदम रख चुकी है। वह देख सकता है कि जैकोस्लोवेकिया की चित्र कला और पोलैंड के नाटकों, हंगेरी के संगीत और रूमानिया के साहित्य में एक नई जनवादी संस्कृति उदय हो रही है। इन पंक्तियों के लेखक को अपनी आँख से देखने का अवसर मिला है।

चीन में होने वाली इस काया पलट का श्रेय चेयरमैन माओ जे तुंग और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व को है जिन्होंने इतिहास के मौजूदा दौर में और चीन की विशेष हालतों में मार्क्सवादी लैनिनवादी समझ को लागू किया और इस तरह उसका विकास किया। माओ के शब्दों में 'मार्क्स और लैनिन की विचार धारा सचाई की खोज करने वालों का रास्ता बन्द नहीं करती है, वह तो अमल (कर्म) की कसौटी पर समझ (ज्ञान) की ओर लगातार बढ़ने वाले रास्ते पर रोशनी डालती है।'

अमल और समझ की खाई को पाटने वाले इसी दर्शन के आधार पर माओ ने चीन में एक 'नये जनवाद' का नारा दिया। चीन की आबादी का अस्सी फीसदी भाग किसान है। चीनी राष्ट्र के जीवन में उसकी खास महत्ता है। देहात के इस किसान का सबसे पक्का साथी शहर का मजदूर है। फिर बुद्धिजीवी और बीच के तबक़े के लोग हैं। इसके बाद देशभक्त पूंजीपतियों का नम्बर आता है। समाज के यह सब तबक़े, किसान और मजदूर तबके की रहनुमाई में मिलजुल कर राष्ट्र की उन्नति करेंगे, यही इस 'नये जनवाद' का अर्थ है। यह 'जनवाद' एक सीढ़ी है, एक मंज़िल है जिसे पार करके सोशलिज्म और कम्यूनिज्म की ओर बढ़ना है। नये जनवाद के इस दौरमें दो मुख्य दुश्मन हैं, (१) जमींदारी-सामंती

प्रथा और (२) विदेशी साम्राजी ताकतें। नये जनवाद में जमींदार वर्ग और उन पूंजीपतियों के लिये कोई जगह नहीं है जो विदेशी साम्राज्यवाद से गठबंधन करते हैं।

हम देखते हैं कि चीन में जो क्रांति हो रही है उसमें जमींदारी सामंती प्रथा को खतम करके खेती सुधार की नई व्यवस्था कायम करना और खेत जोतने वालों को जमीन का मालिक बनाना सबसे महत्वपूर्ण कदम है। इस बारे में चीन की नई जनवादी सरकार ने खेती सुधार कानून बनाये हैं। सहूलियत के लिये ऐसे नियम बनाये गये हैं जिनके मुताबिक देहात में हैसियत वार दरजों या तबकों की छाँट की गई है। मिसाल के तौर पर जमींदार के अलावा देहात में धनी किसान, मझोले किसान, गरीब किसान और खेत मजूर, ये चार तरह के किसान बताये गये हैं।

खेती सुधार कानून चीन के देहातों में कैसे अमल में लाया जा रहा है? देहाती समाज के अलग अलग वर्गों पर उसका क्या असर पड़ रहा है? और किसान के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में कैसे कैसे बुनियादी परिवर्तन हो रहे हैं?—इस किताब में ऐसे सवालों का जवाब मिलेगा। हिन्दुस्तान की असंख्य किसान जनता को यह समझना बहुत जरूरी है कि हमारे यहाँ जमींदारी प्रथा खतम करने का ढोल पीटने वालों में और चीन में खेती सुधार करने वालों में क्या अन्तर है। चीन के खेती सुधार कानून में कुल चालीस धाराएं हैं और यहाँ उत्तर प्रदेश के जमींदारी उन्मूलन कानून में ३४४। चीन में जनवादी सरकार पहली अक्टूबर १९४९ को कायम हुई थी और कहते हैं, हिन्दुस्तान, १५ अगस्त १९४७ को आजाद हो गया था।—फिर भी हिन्दुस्तान भूखों मरता है और चीन गल्ला भेज कर मदद करता है। ऐसा क्यों?

चीन और हिन्दुस्तान के खेती सुधारों में सबसे मोटा भेद यह है कि चीन का खेती सुधार आम किसान जनता के अपने निजी संगठनों—किसान सभाओं के ज़रिये हो रहा है। हिन्दुस्तान की

नौकरशाही इस बात को समझने की भी बुद्धि नहीं रखती। (वह बुद्धि रखती है मुझे चीन न जाने देने के लिये पासपोर्ट छीन लेने की। आठ महीने हो गये सरकार इसका कोई कारण नहीं बता रही।) दूसरा मोटा भेद यह है कि जैसे यहाँ भूमिधरों या धनी किसानों को प्रमुखता दी जारही है, चीन में बिल्कुल इसके विपरीत सबसे गरीब बेजमीन वाले खेत मजूर को प्रमुखता दी जा रही है।

बुद्ध और गाँधी के इस देश में नीति अनीति, हिंसा और अहिंसा के सवाल उठना स्वाभाविक हैं। जोतने वाले को अपनी जमीन बगैर खून खराबी हुए मिलनी ही चाहिये। लेकिन जमीदार वर्ग और ऐसी सरकार को, जो खुद हिंसा पर टिकी हो, यह सवाल उठाने का कोई हक नहीं है।

समाज के भौतिक विकास के साथ साथ उसका नैतिक और गुणात्मक विकास भी होता चलता है। एक इंसान की तरह पूरे समाज या क़ौम का आचरण [बर्ताव] इतिहास के अलग अलग दौर में बदलता जायगा। १९१७ में लैनिन ने मजदूर की डिक्टेटर शिप के लिए सोवियत बनाने का नारा दिया था। चौथाई सदी बाद कई खास देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों ने 'नये जनवाद' या 'जनता के लोकराज' का नारा दिया है जिसमें किसान मजदूर से लेकर राष्ट्रीय पूंजीपति तक शामिल हैं। इसका मतलब है ज्यादा से ज्यादा जनता को एक साथ लेकर मुख्य दुश्मन को हराना। इसका एक अर्थ यह हुआ कि जो वर्ग जितनी कम मात्रा में दूसरों का शोषण करता है उतनी ही जल्दी उसके सुधरने की उम्मीद है। खास बात यह है कि वर्ग विहीन समाज बनाने की मंजिल तक, सबसे नीचे के वर्ग [गरीब किसान मजदूर वर्ग] अगुआई करें और दूसरे वर्गों के साथ शोषण की सीमा के मुताबिक अलग अलग बर्ताव किया जाय। नीति और दर्शन के इस सवाल पर यहाँ अधिक कहने की जगह नहीं है। इस पर अलग से लिखने की जरूरत है।

अब दो शब्द अनुवाद के बारे में निवेदन करना चाहता हूँ। चीन के एक विद्वान लेखक सिआओ चिऐन ने यह 'रिपोर्ताज', कहानी की शकल में लिखकर बड़ा दिलचस्प बना दिया है। कथानक घटना-प्रधान है। खेती सुधार आन्दोलन खास है और पात्र उस के साथ चलते हैं, पर कहानी का आनन्द शुरू से अंत तक खूब रहता है। मैंने इसे पीकिंग से निकलने वाले 'पीपुल्स चाइना' से अनुवाद किया है। किताब की शकल में वह अभी मिली है। कुछ संशोधन बाद में हुए हैं। चीनी लेखक और प्रकाशक दोनों का ही मैं कृतज्ञ हूँ।

मूल लेखक के साथ अनुवाद में कितना न्याय हुआ है, मैं नहीं जानता। हिन्दुस्तान की आम जनता को ध्यान में रखकर मैंने अनुवाद किया है और भाषा आसान लिखने की कोशिश की है। लेकिन मेरी यह पहली कोशिश है। पंडित सुन्दरलाल जी के कदमों में कुछ सीखने का मौका जरूर मिला है लेकिन पूरी ईमानदारी से मुझे मंजूर कर लेना चाहिये कि मैं उनका योग्य शिष्य नहीं हूँ। जहां तक बन पड़ा है उनके सुझाये हुए शब्द स्तैमाल किये हैं। मिसाल के तौर पर Peoples Liberation Army के लिये 'आजाद चीन फौज' और Differentiation of Class Status के लिये 'हैसियत-वार दरजों की छांट।' कुछ ऐसे शब्द भी थे जिनके लिये करीब का हिन्दुस्तानी पर्यायवाची खोजना पड़ा जो हमारे देहात में प्रचलित हो। मिसाल के तौर पर Village Chairman के लिये 'मुखिया' Homestead के लिये नगला या पुरवा और Hsiang के लिये 'मंडल'। गांव से भी छोटी बस्तियां 'नगला' या 'पुरवा' कहलाती हैं; कई गाँवों को मिलाकर एक 'मंडल' होता है। जैसे उत्तर प्रदेश में जिला कांग्रेस कमेटियों के नीचे मंडल कांग्रेस कमेटियाँ हैं, ऐसे ही चीन के देहातों में मंडल किसान सभाएं हैं।

हमारे किसानों को समझने में आसानी हो इसलिये जहां फसलों का जिकर आया है, बजाय अँगरेजी महीना बताने के देहात में प्रचलित, कातिक या बैसाख (जहां जो उपयुक्त हो) की फसल

कहा गया है। इसी तरह चीनी मापदंडों 'माउ', 'तान', 'ताओ', 'शैंग' 'पिकुल' आदि की जगह बीघा, एकड़ वर्गगज या मन, सेर (हिन्दुस्तानी पर्यायवाची) शब्दों का स्तैमाल किया गया है।

जहां तक चीनी नामों का सवाल है, अंगरेजी के मुताबिक लिख दिये गये हैं। इनमें गलती हो सकती है चूँकि चीनी उच्चारण हमारे लिये बिलकुल नये हैं। पर हम यह जरूर जानते हैं कि हमारे समाज में पैंग ऐरहू भी हैं और फूचुआन भी; चुयाओ सिएन भी हैं और तुयूचैन भी। अनुवाद के पीछे यह भावना है कि वह दिन जल्द आ रहा है जब हिन्दुस्तान के फूचुआन और चुनसिंग, लीतामिंग और युलिऐन जमीन के मालिक बनेंगे और घरबार बसायेंगे। हिन्दुस्तान के देहात में 'नया सबेरा' होगा और जनता की नई संस्कृति का सूरज हर घर और हर गाँव में चमकेगा।

वह दिन लाने के लिये माओ जैसे नेतृत्व और पैंग सिनवू जैसे कार्यकर्त्ताओं की जरूरत है। अगर इस दिशा में यह अनुवाद किसी को प्रेरणा दे तो मैं अपनी सफलता मानूंगा।

अन्त में मैं भाई पदमकुमार जैन के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट किये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने इसे प्रकाशित करके मेरा उत्साह बढ़ाया है। दूसरे कामों में व्यस्त रहने और प्रेस सम्बन्धी कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने इसके प्रकाशन में पूरी दिलचस्पी ली है। इसके अलावा मैं भाई कृष्णचन्द्र नागर का भी अहसानमन्द हूं जो स्वयं किसान मोर्चे के सिपाही हैं और जिन्होंने मुझे देहात में प्रचलित शब्दों की जानकारी कराई।

आगरा
३१ मार्च १६५२

ओमप्रकाश पालीवाल

चीनी प्रकाशन की भूमिका

चीन के देहातों में हो रहे खेती सुधार की यह आँखों देखी कहानी है।

खेती सुधार ही वह मुख्य और ठोस क़दम है जो सामन्तवाद को जड़ से उखाड़े दे रहा है और खेती सुधार ने ही सदियों से शोषित किसान जनता को आज़ादी दिलाई है; चीन के उद्योगीकरण में भी यह सुधार विशेष रूप से सहायक है।

१९५१ के बसन्त तक चीन की ४० करोड़ की आबादी में से २९ करोड़ किसान जनता के लिए खेती सुधार पूरा हो चुका है। अब तक के अपूर्ण आंकड़े ये बताते हैं कि १९५० की सर्दियों और १९५१ के बसन्त तक ८ करोड़ खेत मजूर और गरीब किसानों में ढाई करोड़ एकड़ ज़मीन बांटी गई। इस तरह सामन्ती शोषण के खिलाफ मुख्य लड़ाई जीती जा चुकी है।

यह महान् आन्दोलन किसानों ने खुद सफल बनाया है। खेती सुधार जत्थों के तीन लाख तालीम पाये हुये कार्यकर्त्ताओं ने, उनकी रहनुमाई की। शासन के लिहाज से बँटे हुए चीन के चार बड़े क्षेत्रों, पूर्वी, केन्द्रीय दक्खिनी, उत्तर पश्चिमी, और दक्खिन पश्चिमी चीन में किसान सभाओं की पूरी सदस्य संख्या ८४,६००,००० है। इसमें से ७,०००,००० से ऊपर जन रक्षक दल के सदस्य हैं। सामन्ती बेड़ियाँ तोड़ दी गई हैं और किसानों की अपरिमित शक्ति को बन्धन मुक्त कर दिया गया है। खेती सुधार ने अकाल पीड़ित चीन की जगह

एक ऐसे चीन का निर्माण किया है जो अब बड़ी मिकदार में दूसरे देशों को चावल भेजने लगा है। राजसत्ता जनता के हाथ में है, इसीलिए यह सम्भव हुआ है।

विदेशों में हमारे मित्रों ने चीन में हुए इन ऐतिहासिक परिवर्तनों को ध्यान से देखा है। यह स्वाभाविक है कि वे पूरी तौर पर हमारी जीत का रहस्य समझना चाहते हैं। १९५० के बसन्त से चीन के खेती सुधार के बारे में तीन महत्वपूर्ण लेख—मालाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। (१) खेती सुधार कानून, (२) ली शाओ ची की पुस्तक 'खेती सुधार पर' और (३) 'देहात में वर्ग विश्लेषण करने के तरीके' खेती सुधार के मोटे मोटे सिद्धान्तों से लेकर बारीक से बारीक सभी मसलों तक इन लेख मालाओं में विस्तार से समझाया गया है।

लेकिन एक साधारण पाठक के लिए ऐसे वर्णन की ज़रूरत रह जाती है जिसमें खेती सुधार का वास्तविक ड्रामा शुरू से लेकर अन्त तक क्रमानुसार आगे बढ़ता हुआ दिखाया जाय।

इस कथानक का लेखक हुनान प्रान्त के एक गाँव में जनवरी १९५१ में खेती सुधार दल के साथ रहा था। हुनान प्रान्त के इसी उत्तर पूर्वी छोर पर महान् नेता माओ ने सन् १९२७ में खुद किसानों का संगठन किया था। इसके बाद लेखक दूसरे ज़िलों में गया जहाँ खेती सुधार दो महीने पहिले पूरा हो चुका था। प्रत्यक्ष निरीक्षण के आधार पर लेखक ने मुख्य घटनाओं और पात्रों का एक सजीव चित्र खींचा है। यह ज़रूर है कि लेखक ने इस नाटक में पात्र चित्रण की अपेक्षा खेती सुधार आन्दोलन को अधिक महत्ता दी है।

"अगर तुम्हारा दृष्टिकोण क्रांतिकारी है और तुम देहात की दुनियाँ देखना चाहते हो तो तुम्हें ऐसा उत्साह पैदा होगा जो पहिले कभी अनुभव नहीं किया होगा। वहाँ देखोगे कि लाखों की तादाद में वह किसान जो कल तक गुलाम था अपने जानी दुश्मनों को पछाड़ रहा है। उसका यह काम बिल्कुल दुरुस्त है और ठीक ढंग से हो रहा है। तमाम क्रांतिकारी साथियों को महसूस करना चाहिये कि अपने देश में इनकलाब लाने के लिये देहात में बहुत परिवर्तनों की जरूरत है। १६११ की क्रान्ति यह न कर सकी और इसीलिये असफल हुई। अब हम ये परिवर्तन ला रहे हैं। क्रांति के पूर्ण सफल होने में यह बात बड़ा महत्व रखती है।"

— माओ जे तुंग : १६२७ में हुनान प्रान्त के किसान आंदोलन पर रिपोर्ट।

⊛ ⊛ ⊛ ⊛

"देश की पैदावार बढ़ाने और उद्योगीकरण के लिये खेती सुधार सबसे जरूरी शर्त है। उन तमाम इलाकों में जहां खेती सुधार हो चुका है और किसानों को जमीन का मालिक बनाया गया है उनकी मिल्कियत की हिफाजत की जायगी। सभी इलाकों में किसान जनता को किसान सभाओं द्वारा संगठित करना है और 'जोतने वाले को जमीन मिले' वाली नीति पर उनका आन्दोलन मजबूत बनाना है। इस तरह के कदम उठाने हैं जिससे गुंडे खतम हों, लगान कमी हो और जमीन का बंटवारा हो।"

—धारा २७, चीनी जन राजनैतिक सलाहकार सम्मेलन का सर्वमान्य प्रोग्राम।

⊛ ⊛ ⊛ ⊛

"जमीदार वर्ग जमीन का मालिक बन कर किसान को सामंती शोषण की चक्की में पीसता है। यह तरीका खतम किया जायगा

और उसकी जगह पर किसानों की मिल्कियत लागू की जायगी। इससे देहात में पैदावार की शक्ति बढ़ेगी और खाद्य पदार्थ अधिक तादाद में पैदा होंगे, तभी नया चीन उद्योगीकरण के पथ पर चल देगा।"

—चीन की जनवादी सरकार के खेती सुधार-
कानून का उद्देश्य: धारा १।

★ ★ ★ ★

"खेती सुधार की मुख्य बात है, जमींदार वर्ग की जमीन छीन कर खेतिहर मजूरों और गरीब किसानों में बांट देना। इस प्रकार समाज में से जमींदार वर्ग का अंत होगा और उसकी जगह पर जोतने वाला जमीन का मालिक बनेगा। चीन के हजारों साल के इतिहास में यह सबसे महान् और क्रान्तिकारी कदम है ....।

"खेती सुधार एक सिलसिलेवार लेकिन महान् संघर्ष है। खेती सुधार के बारे में भविष्य में जो मुख्य नीति बर्ती जानी चाहिये वह है खेत मजूरों और गरीब किसानों पर सब से ज्यादा भरोसा करना और मझोले किसानों से एका करना; साथ ही धनी किसानों को जमींदारों की ओर से बेरुखा कर देना ताकि सामंती शोषण की कड़ियाँ, एक के बाद एक भिन्न वर्गों में भेद करती हुई टूटती चलें। इस प्रकार खेती की पैदावार में वृद्धि होगी।"

--ली शाओ ची: 'खेती सुधार कानून पर'

★ ★ ★ ★

"कोई भी शोषक वर्ग आज तक के मानव इतिहास में स्वत: ही शोषण करने से अलग नहीं हुआ है; और चीन का जमींदार वर्ग भी इस नियम का अपवाद नहीं है जिसके पीछे हजारों सालों का इतिहास है।"

—चू ऐन लाई: 'जनता की विजय और
उन्नति के लिये संघर्ष, १९५०।'

पात्र

चाओ ची मिन	हुइलिंग मंडल खेती सुधार दल के प्रधान ।
चाउ जुई सियांग	एक दुकानदार ।
चुनसिंग	बूढ़ी माँ ली की बेटी ।
चू कुआंग लिन	एक शिकमी मझोला किसान ।
चु याओ सिएन	एक धनी किसान ।
सिउंग पैंग	ज़िला कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री ।
हू पिन सान	एक जमींदार जो व्यापार भी करता है ।
कू शि यिंग	एक फेरी वाला ।
कू यू चांग	मंडल सरकार का प्रधान ।
ली चाओ ची	एक जमींदार ।
ली चैन नान	पैंग यिन तिंग का खेत मजूर ।
ली, बूढ़ी मां	या बूढ़ी दादी, एक ५२ साल की विधवा ।
ली ता मिंग	ली चाओ ची का खेत मजूर ।
लीयाओ सान	एक बढ़ई ।
लो मैंग सिउंग	जमींदार लो पी जंग का भतीजा जिसने दौलत छिपाने की कोशिश की ।
लो पी जंग	एक अपराधी जमींदार ।
लो शु मिन	महिलादल की प्रधान ।

लोयुंग निएन	जमीदार लो पी जंग का गरीब भतीजा एक किसान
पैंग वि चाओ	दस्तकार संघ का प्रधान।
पैंग एर हू	या तिएन पाओ, एक अपराधी जमींदार।
पैंग फू चुआन	पैंग एर हू का खेत मजूर।
पैंग सिन वू	खेतमजूरों और गरीब किसानों का ग्रुप नेता, बाद में गांव किसान सभा का प्रधान।
पैंग कू चांग	स्कूल मास्टर, एक क्रांतिकारी शहीद का लड़का।
पैंग शु मिन	पैंग कू चांग की बुआ।
पैंगपिन तिंग	एक अपराधी जमींदार।
पैंग चू तांग	सिनलू गांव का नया मुखिया।
शाओ सू चांग	जिला सरकार के प्रधान।
तिएन ई ची	एक क्राँतिकारी शहीद का लड़का।
तु यू चैन	एक नाविक (मल्लाह) की पत्नी, चू याओ सिएन के यहाँ दाई का काम करती थी।
यैन शू चैंग	मंडल किसान सभा के प्रधान।
युलिएन	पैंग एर हू के मकान में नौकरानी थी।

सूची

भूल सुधार

पेज	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२४	१	दिलाने	दिखाने
३१	७	पग भी	पैग यिन
४६	[illegible]	बैठ कर गया	बैठ गया
६६	१६	जिला	सूबा
८०	१७	पत्नो	बहिन

एक

आशा की पहली किरन

अगस्त के शुरू में ही हुइजिंग मंडल किसान सभा ने ऐलान किया, "कातिक की फसल का लगान जल्दी चुकाओ और खेती सुधार के लिए तैयार हो जाओ।"

फिर भी सिनलू गाँव के किसान हुनान प्रान्त के दूसरे बहुतेरे किसानों की भाँति दुबिधा में थे। खेती सुधार के ऐलान से उन्हें कुछ आशा होती थी पर साथ में थोड़ी गलतफहमी भी बनी हुई थी। बहुत कम किसान ऐसे थे जो इस घटना के पूरे और आश्चर्य जनक महत्त्व को समझते थे जो उनके और उनके बेटे पोतों के जीवन में महान् काया पलट करने वाली थी।

इसमें ताज्जुब इसलिए नहीं होना चाहिए चूंकि हजारों सालों की जमीदारी लूट ने इस इलाके की आम किसान जनता का सारा जीवन रक्त चूस लिया था। सदियाँ गुजर गईं पर किसान के जीवन में नाम मात्र की तबदीली हुई। १९२७ में जनता का राज चन्द हफ्तों रहा था। तभी उन्हें आजादी की थोड़ी झलक मिली थी। उसके बाद एक दम अंधेरा छा गया। तीस साल से कम उमर के किसानों को तो वे दिन अच्छी तरह याद भी नहीं थे और बड़े बूढ़े लोग, चाँग काई शेक के शासन में उसके अन्याचारों के कारण, उन दिनों की चर्चा करने से डरते थे। वे किसानों की विजय के उन चन्द दिनों

की आज भी याद करते हैं पर साथ ही उनके दिमाग में बाद की घटनाऐं भी सिनेमा के परदे की तरह घूम जाती हैं कि किस तरह जमीदारों को फिर बरकरार किया गया और किस तरह हुइलिंग मंडल के चारों ओर की उपजाऊ जमीन बहादुर किसानों के खून से सींची गई।

कातिक के बाद बैसाख और बैसाख के बाद कातिक आता। समय के चक्र के साथ सिनलू गाँव के किसान मशीन की तरह लगातार महनत करते रहे। उनकी हालत गाड़ी के उन पहियों की तरह थी जिन पर मनों बोझ रखा हो और वे कराह रहे हों। एक नहीं तीन तीन चार चार ज़ालिमों की शामिल और चौतरफा मार से वे दबे जा रहे थे। कुमिनताँग का कलक्टर, थानेदार, गाँव का मुखिया और वे जमीदार और साहूकार जो लगान वसूल करते थे और सूद दर सूद रुपया वसूल करने में बड़े तेज़ थे।

बैसाख की फसल आती। किसान खाद फैलाते, बीज बोते, नयें पौदे लगाते, झुलसाने वाली कड़ी धूप में सिंचाई के लिए पहर चलाते, खेत गोड़ते और धान काटते। कातिक की फसल आती। तीन बजे सबेरे ही वे उठ कर हल जोतने और सब्जी बोने चल देते। सूरज निकलते निकलते वे नाज ढो रहे होते और उसे धूप देते। इधर खाना बनाकर फारिग होते ही औरतें नंगे पैरों, दूध पीते बच्चों को अपनी पीठ से बाँध कर खेतों से सूखी घास इकट्ठा करने निकल पड़ती थीं। ऋतुओं का पहिया इसी तरह घूमता चलता था।

सिनलू गांव में यह तो सब कोई मानने लगा है कि आजादी* के बाद से किसान का जीवन सुधरने लगा है। गुन्डे खतम हो गये हैं और टैक्स कम हो गये हैं। और तो और गाँव के पास ही गल्ला

---

*आजादी से मतलब चांगकाई शेक की प्रतिक्रियावादी सरकार को हरा कर चीन की वर्तमान जनवादी सरकार की विजय से है जिसकी स्थापना पहली अक्टूबर १९४९ को घोषित की गई है। अनुवादक—

गोदाम बन गये हैं। अब किसानों को लगान चुकाने के लिए गल्ला शहर तक २० मील ढोकर नहीं ले जाना पड़ेगा। अब सिर्फ चार पाँच मील दूर मंदिर के सामने वाले गल्ला गोदाम में जमा होजाया करेगा। पर सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि जमीदारों की अकल ठिकाने आगई। पहली फसल में ही जब सरकार ने लगान कम करवाया और पेशगी जमा लगान में से वापिस दिलवाया तो किसानों ने महसूस किया कि जमीदारी लूट में कुछ कमी होने लगी है। बहुत से किसानों को गल्ला वापिस मिल गया और बहुतों को नकद दाम। सिर्फ खेतिहर मजूरों को छोड़ कर सबको सांस लेने का मौका मिला। बेचारे खेतिहर मजूरों पर तो एक चप्पा जमीन भी नहीं थी। जो किसान अब तक भिखारी बन चुके थे, उन्होंने या तो इस वापिस मिले रुपये से पास के कस्बे में कोई छोटी दुकान लगा ली या थोड़ी नई जमीन खरीद ली। इसलिए कुछ किसानों में नये भ्रम पैदा होना अस्वाभाविक नहीं था। जैसे ही उनके कंधों पर से सदियों का लदा बोझ कम हुआ वे आराम में आगये और कहने लगे:—

"जमीदार तो झुक ही गये हैं अब गिरे गिराये में लात मारने क क्या जरूरत?" या "अब हालत तो बदल ही गई है, जब तक इसी तरह सुधरती जाय, जोश में आने और जल्दबाजी करने को क्या जरूरत है?"

१९२७ की दुखदाई याद उन्हें सताती थी जो भूत की तरह उनका पिंड नहीं छोड़ती थी। वे डरते थे कि कहीं फिर वैसा ही दमन न होने लगे। शायद तख्ता पलट जाय और फिर जमीदारों की लग बने। इधर जमीदारों के लिए छोटी सी हार भी चुपचाप सहना खून का घूंट पीना था। लेकिन अब वे बहुत सीधा बनने और दबे दबे चलने की कोशिश करने लगे। हर साल अप्रैल के महीने में चिंग मिंग मेले* के अवसर पर जमीदार महोदय द्वारा देहात की जनता को

---

*हर साल इस अवसर पर लोग अपने पूर्वजों की समाधि के दर्शन करने और श्रद्धांजलि देने इकट्ठा होते थे।

उपदेश देने का रिवाज चला आता था। इस साल इस परम्परा पर चलने की बुद्धिमानी किसी जमीदार ने नहीं की। पुराने जमाने में जमीदारों के लिए, उपदेश देने के अलावा, 'अक्खड़' और 'गुस्ताख' खेत मजूरों को बोरे में बन्द करके पिटवाना एक मामूली बात थी ताकि हुकुम उदूली करने वालों को सबक मिले। एक और पुराना रिवाज यह था कि किसान सालाना लगान के अलावा जमीदार को साग सब्जी, चाय और मुर्गी के बच्चे भेंट में देते थे। लेकिन इस साल न जाने क्यों 'मालिक' जरूरत से ज्यादा महरबान थे। कहते थे, 'भाई इसे तुम अपने लिए रखो,' यह कहते समय एक हलकी कुटिल मुसकान उनके चहरे पर झलक जाती थी। इनमें कुछ तो परले सिरे के धूर्त और चालाक थे। उन्होंने अपने किसानों और खेत मजूरों को खुद भेंट देना शुरू किया ताकि उनका मुंह बन्द रहे।

इसके अलावा हमेशा से किसान अपने जमीदार को न्यौता देता था और उसको लिवाने के लिए पालकी का इन्तजाम करता था। अगर जमीदार उसका न्यौता मंजूर कर लेता तो वह अपने को धन्य मानता। पर इस साल मामला उल्टा ही रहा। जमींदारों ने किसानों को नौते देने शुरू कर दिये।

जमीदारों को भी १६२७ की याद बनी थी। वे उस दिन के इन्तजार में थे जब उन्हें फिर कुचलने का मौका मिलेगा। वे उस दिन के लिए हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे थे बल्कि बड़ी होशियारी और चालाकी से षड़यन्त्र रच रहे थे। वे सोचते थे कि इतिहास का चक्कर फिर घूमेगा और एक दिन उन्हें फिर बदला लेने का मौका मिलेगा।

टेलीफोन कम्पनी के मजदूरों ने पहलीबार गाँव वालों को खेती सुधार के बारे में बताया। चुंगयांग मेले से कुछ दिनों पहिले सिनलू गाँव वालों को खेतों के रास्ते में एक नई आकाश रेखा (टेलीफोन के तारों की) दीखने लगी। गाँव की उत्तरी सीमा पर यानी पीजिअन नदी के उस पार—जो हुइलिंग मंडल और शिमा मंडल के बीच में

होकर जाती थी, पीले पहाड़ी ढालों और उड़ते बादलों के बीच टेलीफोन के कई लट्ठे दिखाई देने लगे।

नवम्बर के शुरू में एक सुबह तीस लट्ठों से लदी एक नाव जिसमें चार वर्दीधारी मजदूर भी थे, दक्खिनी किनारे तक आई। पैंग फूचुआन ने, जो उस समय नदी किनारे लकड़ी काट रहा था, देखा कि मल्लाह नाव को पार लगाने के लिये बड़ा जोर लगा रहा था। जैसे ही नाव किनारे पर लगी उससे नहीं रहा गया और ढालपर उतरकर पूछने लगा, "शुआँग चुआन! ये लोग यहाँ क्यों आये हैं?"

मल्लाह के बोलने से पहले ही एक वर्दीधारी मजदूर ने जिसकी वर्दी पर टेलीफोन कम्पनी लिखा हुआ था, जोर से कहा—

"काहे के लिए? खेती सुधार के लिए। यही तो काम है। खेती सुधार से ही किसान अपनी जमीन के मालिक बनेंगे।"

और उसने अपने साथियों से लट्ठे किनारे पर ले चलने को कहा। पैंग फू चुआन के दिमाग में एक धुँधला विचार आया कि इन लट्ठों का उसकी भलाई से गहरा सम्बन्ध है। बिना सोचे उसने अपना सामान वहीं पटक दिया; झुककर एक लट्ठा उठाया और अपने कंधे पर रख लिया। इधर तो वह लट्ठा उठाने में लगा था उधर वह मजदूर कहता गया:— "हमको बड़ी जल्दी करनी है। जैसे ही शहर में कार्यकर्त्ताओं की मीटिंग खतम होगी, खेती सुधार दल यहाँ आजायगा। तार लगाने के काम के लिए हमारे पास केवल आठ दिन हैं।"

पैंग फूचुआन ने बड़ी चिन्ता से पूछा "क्या आप चार ही आदमी हैं? बस इतने ही हैं?"

"नहीं, हर टुकड़ी में चार चार आदमी हैं। हुइलिंग मंडल में नौ गाँव हैं तो चार नम छत्तीस हुए। आया समझ में?"— मजदूर ने उसे बताया। पैंग फू चुआन पर बड़ा असर पड़ा। यह आदमी शहर से आया है। बड़े कायदेकी बात करता है और बहुत होशियार है। फिर भी एक और सवाल पूछे बिना वह न रह सका। उसने पूछा:—

"यह टेलीफोन कहाँ जाता है ?"

कोई बेकार सवाल नहीं था। सच है कि वह कई बार फसल पर गल्ले का भुगतान करने शहर जा चुका था, पर कभी भी दस दिन से ज्यादा नहीं ठहरा था और न कभी उसने टेलीफोन देखा था या इस्तैमाल किया था।

"तुम्हें नहीं मालूम ? यह जिला सरकार तक जाता है। खेती सुधार कमेटी और उसकी सूबा कमेटी के दफ्तर तक जाता है। यही नहीं, वह सीधा चेयरमैन माओ जे-तुंग तक जाता है।"

कहते हुए मजदूर ने अपने किसान साथी की ओर सहानुभूति से देखा।

"कुमिनतांग (चीन की कांग्रेस) के बीस साल के राज्य में टेलीफोन शहरों तक ही रहा। अब गांव गांव में लगेगा। जमीदारी खतम करने के लिए हम तुम्हारी मदद करेंगे।"

पैंग फू चुआन का सर चकरा रहा था। जब सब लट्ठे उतार लिए गए और मजदूरों ने गाढ़ने की तैयारी की, उसने भी अपनी कुल्हाड़ी उठाई, कन्धे पर गठरी लटकाई और चलता बना। उसका रास्ता खाई में होकर जाता था। दूसरे ढाल के नीचे उतरते समय वह बड़े गहरे विचार में डूबा हुआ था।

जब वह ढाल के नीचे 'सेविन स्टार' नाम की जगह आया, उसने अपना सिर उठा कर पैंग चू के नगले की ओर देखा जो नंगे दरख्तों के सिरों से ऊपर दिखाई पड़ रहा था। जमीदार पैंग ऐरहू की कोठी बहुत बड़ी थी। वह अपने मालिक की तरह मोटाई में फैली हुई थी। इसके इर्द गिर्द चारों ओर बहुत सी टूटी फूटी झोपड़ियां थीं। छै साल की उम्र से ही पैंगफू चुआन अपने पिता के साथ इन्हीं में से एक झोपड़ी में रहता आया है। कई मौकों पर उसे खुद पैंग ऐरहू से नफरत हुई है; खास तौर पर जब उसे उस बड़ी कोठी में पकने वाले खाने की चीजों से महक आई है। मछली, गोश्त और न जाने क्या क्या ? जबकि उसे खुद

साल भर सिर्फ सूखे आलू ही मयस्सर हुए हैं। फिर भी पैंगफू चुआन के ख्याल से यह सब 'भाग्य' का तमाशा था। "कुछ पाना या न पाना तकदीर का खेल है। मनुष्य का कोई भी उपाय तकदीर के लिखे को नहीं मेट सकता।" दो महीने पहले ही उसकी तकदीर ने कैसा पलटा खाया। साफ नीले आसमान के नीचे एक दिन जमींदार के यहाँ से न्योता आया और उन्होंने पाँच बीघा जमीन उसे इनाम में देने को कहा। वह बड़ी अच्छी और उपजाऊ ज़मीन थी। साथ ही ज़मींदार की कोठी के बाहरी अहाते में एक कमरा उसको रहने को बता दिया गया। वह सोच रहा था कि उसकी तकदीर अब जरूर बदल रही है।

यकायक पैंग फू चुआन के दिमाग में एक धक्का लगा और उसे लगा जैसे उन लट्ठों को उठवाने में मदद करना अपने मालिक के साथ दग़ा करना है। पैंग फू चुआन सोचने लगा, जमींदार पहले चाहे जैसे रहे हों, आजादी के बाद से वे अच्छे स्वभाव के हो गये हैं। और फिर उनके अलावा इस दुनियाँ में कौन है जो उसे रोटी और कपड़ा दे?

हुनान में ज्यादातर गांव तीन तीन चार चार नगलों से मिलकर बने हैं। एक या एक से अधिक कुनबे मिलकर अपना निजी नगला या पुरवा बसा लेते थे। इन छोटे नगलों में रक्त-सम्बन्ध के लिहाज से तीन या ज्यादा से ज्यादा पाँच पीढ़ी तक बचाव रखते थे। इस तरह ये नगले छोटे छोटे सामंती गढ़ बने हुए थे। सिनलू गांव में तीन नगले थे; पैंग चू का नगला, लो का 'बड़ा घर', और ली का बगीचा। खाई से थोड़ी दूर सेविन स्टार नामका एक छोटा कस्बा था।

जब पैंग फू चुआन पैंग चू के नगले आया तो उसने स्वभावतः ही दूसरों को टेलीफोन के लट्ठों की घटना सुनाई। यह खबर बड़ी जल्दी फैल गई और दोपहर होते होते तीनों नगलों के लोग इस बात को सुन चुके थे। कुछ बूढ़े लोग अन्यमनस्क रहे। लेकिन वे भी अपने देवी देवताओं का दर्शन करने पहुंचे। उन्होंने अपने जीवन में कई नई चीजें देखी थीं, जापानी देखे थे, फिर कुमिनतांग की फौजें देखी थीं,

फिर बहुत सालों का कडुआ तजुर्बा कहता था कि यह जरूरी नहीं है कि जो चीज नई है वह अच्छे इरादे से ही की गई हो।

पर नई पीढ़ी के लोग अपनी खुशी को नहीं छिपा सके। एक एक करके वे सब जंगल और कबरिस्तान पार करते हुये खेतों में होकर नदी किनारे जाने वाली पगडन्डी पर दौड़े गये। पागल बूढ़ी मां अपने सीमित पैरों के बावजूद उस भीड़ में मौजूद थी। अब वह ५३ साल की थी फिर भी अपनी बैसाखी के सहारे उस भीड़ में घिरी हुई खड़ी थी। वह बड़े गौर से किनारे के इस पार सीधे खड़े लट्ठों को देख रही थी। उसका मुँह अधखुला था। जैसे ही किसान उस जगह पहुंचे, उन्होंने मजदूरों से सवाल पर सवाल पूछना शुरू कर दिया। पागल बूढ़ी मां ने धीरे से अपनी पतली उंगलियाँ एक मजदूर के कन्धे पर फेरते हुये कहा "आह! तुम बिल्कुल मेरे तेह-मिंग की तरह लगते हो, वह बिल्कुल तुम्हारी ही तरह लम्बा था। मैंने उसे पालपोस कर इतना बड़ा किया था।" उसकी बोली में कम्पन था और वह जल्दी ही सिसकने लगी।

"रोओ नहीं। यह तो खुशी का अवसर है" उस मजदूर ने बूढ़ी माँ को सान्त्वना देते हुये कहा, फिर अपनी पेन्सिल से कागज पर कुछ नोट कर लेने के बाद उसने सबसे कहा, "कृपया आप लोग अब कोई सवाल न कीजिये, यह टेलीफोन खेती सुधार के लिए हैं। खेती सुधार हो चुकने पर आप सब किसान भाई उन्नति करेंगे और जमीदारों का अन्त होगा। समझे? आइये, जो मजबूत हैं वे इन्हें ले चलने में मदद करें।"

इस पर सभी किसानों ने काम में हाथ बटाया। कुछ ने गड्ढे खोदे दूसरों ने लट्ठों को ढोने में मदद की। गड्ढा खोदने में खास तौर पर किसानों ने बड़ी होशियारी और फुर्ती दिखाई। मजदूरों ने इस बात की बड़ी तारीफ की। पच्छिम में अभी सूरज चमक ही रहा था कि सारा काम इतने लोगों की मदद से समय से पहले ही पूरा हो गया। हाल ही गोड़े हुये खेतों पर टेलीफोन के लट्ठों की हल्की छाप

पड़ रही थी। ऐसा मालूम होता था मानों अधिकार और स्वत्त्व की सील मोहर अपनी छाप डाल रही हो।

पगली बूढ़ी दादी भी पैंग चू के नगले में रहती थी और जब वह वापिस आयी तो हर दरवाजे पर गई और जिसने भी दरवाजा खोला, उसके सामने कहती "अहा! खेती सुधार ! खेती सुधार !! मेरा बेटा तेहमिंग अब वापिस आता ही होगा।"

पैंगसिनवू की गर्भवती पत्नी उसी समय सूअरों को वापिस घर बुलाने के लिये निकल ही रही थी कि दौड़ती हुई बूढ़ी दादी ठीक उसके सामने आने में हकबका गई और गिर पड़ी। श्रीमती पैंग को फिकर हुई कि कहीं उसे चोट तो नहीं आ गई है। उसने अपने सैनिक पति से कहा कि वह बूढ़ी दादी की बेटी चुनसिंग को बुला लावे। अब उसने बूढ़ी दादी को उठाया, कमरे में ले गई और एक स्टूल पर बिठा दिया, उस पर कुछ पानी छिड़का और उसका हाथ पकड़ कर ऐसे कहा जैसे कोई छोटे बच्चे को समझाता हो।

"बूढ़ी दादी! तुम्हारा लड़का वापिस नहीं आयगा, क्या सिनवू ने तुमसे नहीं कहा? वह सच कह रहा था। इस तरह झूठी उम्मीदें मत लगाओ। तुम इसे बर्दाश्त नहीं कर सकोगी।

"वापिस नहीं आयगा!" बूढ़ी दादी ने मशीन की तरह शब्द दुहरा दिये और फिर वह एक चीख के साथ बेहोश होकर लुढ़क गई। इधर उधर से पड़ोसी आगये और सब बात चीत कर रहे थे। चचा क्वागलिन अपनी पतली दाढ़ी पर हाथ फेरते हुये गम्भीरता से बोले "बहतर है कि उससे उसके लड़के की लड़ाई में मरने की खबर अब बिल्कुल न कही जाय। उसकी लड़की की शादी जल्दी ही होने वाली है, क्या यह बात नहीं है? इसके बाद वह बूढ़ी आत्मा बहुत तड़पेगी।"

इसी समय बूढ़ी माँ की इकलौती बेटी जो अभी निरी बच्ची ही थी, आई। बूढ़ी माँ का धूल धूसरित मलिन चेहरा देखकर वह घबरा गई। "माँ ओ माँ!" पैन्गसिन वू ने बूढ़ी माँ को अपने हाथों पर उठाकर बिस्तरे पर लिटा दिया।

कुछ ही क्षणों के बाद बूढ़ी माँ की पलकें खुलने लगीं। सबसे पहले उसकी नज़र अपनी बेटी पर पड़ी। उसने बड़े प्यार से चुनसिंग का हाथ पकड़ा और पुचकार कर, कहा "मत घबराओ बेटी, मत घबराओ!" और फिर वेदना से पीड़ित हो बोली, "तो तुम्हारा भाई चला गया है।" इसके बाद वह शान्त निश्चेष्ट और दर्द भरी निराशा में पड़ रही।

पैंगसिनबू क्रोध से तमतमा उठा। वह जानता था कितिह-मिंग मारा जा चुका है। गुस्से से उसकी आँखें भी लाल हो रही थीं। जोर से बोला "बूढ़ी दादी! चुनसिंग! जरा सोचो तो तिहमिंग को मरवाने में किसका हाथ है? क्या यह इस पाजी के बच्चे पैंगऐरहू का काम नहीं है? क्या उसी ने मुझको भी तोप की बारूद समझ कर लाम पर नहीं भेज दिया था? अगर कम्युनिस्ट नहीं होते तो आज मेरा भी कहाँ पता चलता? उन्होंने मुझे पकड़ लिया लेकिन मेरे साथ कैदी का सा बर्ताव नहीं किया। उन्होंने मुझे अपने भाई की तरह बचाया। अब मैं पैंगऐरहू के साथ अच्छी तरह निपटने को कमर कसे हुये हूँ। वर्ना अपने को मर्द कहना छोड़ दूंगा।" जब से सिनबू फौज से वापिस आया है गाँव के मामलों में खूब दिलचस्पी लेता है और गाँव के एक ग्रुप का नेता भी चुन लिया गया है।

पैंगऐरहू का नाम सभी किसानों के दिलों में भय और घृणा का संचार पैदा करने वाला था। जब जापानी यहाँ थे तो उसका भाई यिनतिंग खाँमखाँ गाँव का चौधरी बन बैठा था और वह जापानियों के पास हर तरह की चीजें उनकी खुशामद में भिजवाता था। जापान की हार के बाद उसकी जगह पैंगऐरहू ने ले ली। पूरे ४ साल तक वह हुइलिंग मण्डल का एक छत्र राजा था जो चांकाईशेक के लिये काम करता था। किसानों को हमेशा लड़ाई का चन्दा और तन्दुरुस्त आदमी भिजवाने के लिये तंग करता रहता था

आजादी ने पैंगऐरहू को उठाकर कोने में फेंक दिया। कुछ दिनों के लिये उसने अपने परिचितों और पिट्ठुओं के ज़रिये पुराने सम्मान को बनाये रखने की कोशिश की। एक दयालु और धैर्यवान

बड़े आदमी के चोले में वह किसानों को यह धमकी देने लगा। "तुम लोगों को आवेश में तेज कदम नहीं उठाने चाहिये। हम लोग कोठियों वाले और सुरक्षित जमीन जायदाद वाले हैं। हमसे बिगाड़ नहीं करना चाहिये। ऐसा काम करना चाहिये जिसमें कुछ गुन्जायश बनी रहे। वर्ना भविष्य में मन मुटाव बना रहे तो अच्छा न होगा।

फिर भी पिछले कुछ महीनों से उसने अपने किसानों और खेतिहर मजदूरों को इनाम देना शुरू किया। एक जादूगर के पिटारे की तरह से उसके मकान ने अनगिनती हरे अमरीकन कम्बल और दूसरे माल उगलना शुरू किये।

जब सिनबू इस तरह से जोरों से पैंगएरहू को कोस रहा था तो दूसरे किसान सिर्फ एक दूसरे की ओर देखने लगे पर कोई बोला नहीं। कुछने सोचा, "उसने लगान की कमी और पेशगी जमा लगान वापिस होने में ही बहुत बर्दाश्त कर लिया है, गांव के दूसरे मामलों में उसने दखल देना करीब २ छोड़ दिया है। आम तौर पर वह बहुत मुलायमी से पेश आने लगा है। पुराने मुर्दे उखाड़ने से अब क्या नतीजा?" कुछ लोग यह सोचते थे कि पैंगएरहू के पास अबभी कई तरह के हथियार और काफी स्वामिभक्त सेवक हैं। ऐसा वैसा शब्द निकालने से तुम्हारे साथ कुछ हो जाय तो" कमरे में सन्नाटा था।

चूयाओ सिऐन जो गांव में "पण्डित" के नाम से मशहूर था सबसे पहला आदमी था जिसने इन विचारों को शब्द रूप दिया। बोलने से पहले उसने अपना गला खंखारा जैसे वह कोई भविष्य वक्ता ज्योतिषी हो। फिर उसने अपना सिर खुजलाया। यह सब दिखलाने के लिये था कि वह जो कुछ कहेगा बहुत सोच समझकर और बुद्धिमानी की बात कहेगा।

"हुईलिंग मण्डल में बड़ी जल्दी खेती सुधार होगा।" उसने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा। इस बसंत में वह शहर में किसान प्रतिनिधियों की एक मीटिंग में मौजूद था और उसमें अपने लिये एक घमंड की भावना आगई थी। तभी से वह हर सामाजिक उत्सव

पर किसान प्रतिनिधियों का सा लाल बिल्ला लगाकर पहुंच जाता और सांड की तरह अकड़ा हुआ घूमता फिरता था। "खेती सुधार में हर एक को वाजिब हक मिलेगा। चेयरमैन माओ न्यायप्रिय और निष्पक्ष हैं। इसमें कोई गल्ती नहीं हो सकती।" इसके बाद वह जोर से खांसा। बड़े जमींदार और छोटे जमींदार कोई भी हों। वे हमारे बीच में ही तो हैं। वे कोई यहां से उड़ तो जायेंगे नहीं। इसलिये इतने परेशान होने की क्या जरूरत है। आखिरकार हम सब एक ही नगले के तो हैं!"

ज्यादातर किसान जो पहले से ही डरपोक थे उसकी बातों में आसानी से आगये। बहुतों ने यह राय दी कि जब तक सुधार दल न आ जाय हमें पैंगऐरहू के मसले को टाल देना चाहिये।

सिनवू ने अब अपने को अकेला पाया। उसने महसूस किया कि वह क्रोध में उत्तेजित होगया और इसलिये अपनी दलील का प्रभाव न डाल सका।

उसे याद आया कुछ दिनों पहले जिला कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री ने खेती सुधार की तैयारी के कार्यक्रम पर बोलते हुये कहा था "तुम जमींदारों को उनकी स्थिति से तब तक नहीं डिगा सकते जब तक जनता को संगठित रूप से काम करने के लिये तैयार नहीं कर लेते; और जब तक तुम्हें जमींदार को पराजित करने में कोई कोर कसर दीखती है, उत्तेजना पूर्ण कदम लेना और फिजूल ही उन्हें धमकाना उचित नहीं होगा।"

पर सिनलू गाँव के हर किसान और हर जमींदार के दिल में एक सवाल घुस बैठा था, जब से वहाँ टेलीफोन के लट्ठे लगे थे। जैसे २ एक के बाद दूसरे लट्ठे लगते जा रहे थे वह सवाल और भी बड़ा नजदीक और साफ आता था। यह क्या तब्दीली हो रही है?"

चूंकि हुइलिंग मण्डल का सरकारी दफ्तर पैंगचू के नगले में पुराने मन्दिर में खुला था और चूंकि सिनलू गाँव का नया मुखिया पैंगचू तांग खुद भी उसी घराने का था यह लाजमी था कि टेलीफोन का केन्द्र वहीं हो। सीधे खड़े टेलीफोन के लट्ठों की नई

कतार उस नगले की ओर जाती थी और हर आदमी चाहे वह बड़ा हो या छोटा बहुत उत्तेजित था।

जिस दिन टेलीफोन कम्पनी के मजदूर आये उसके दूसरे ही सुबह पैंगचू तांग ने मन्दिर के अहाते में छोटे ग्रुपों के नेताओं की सभा बुलाई जिसमें ज़िला जनवादी सरकार की ओर से आयी हुई हिदायतें देते हुये उसने कहा कि, "खेती सुधार दल २५ नवम्बर के करीब यहाँ आयेगा, इस बीच में करीब १० दिन हैं, जिनमें उन्हें गलत अफवाहों को फैलने से रोकना चाहिये और जमींदारों की तोड़ फोड़ की हरकतों का मुकाबला करना चाहिये। उन्हें चाहिये कि वे जमींदारों पर अच्छी तरह नजर रखें कि वे क्या करते हैं और साथ ही किसी भी किसान को इसलिए बुरा नहीं कहना चाहिये कि वह जमींदारों से लड़ने में हिचकिचाता है या वह जमीदारों के धोखे में आ जाता है। हजारों सालों से शोषित और धोखे में रखे जाने के बाद उनसे यह उम्मीद नहीं करनी चाहिये कि वे इतनी जल्दी सचेत हो जायेंगे। असल में हमें चाहिये कि हम जनता की वर्ग चेतना जगाने में पूरी कोशिश करें। जब ऐसा हो जाय और जनता वास्तव में उठ खड़ी हो तब बड़ी बड़ी बकवास करने वालों से लड़ना, गलत अफवाहों का खण्डन करना और जमींदारों की गैर कानूनी कार्यवाहियों को रोकना आदि काम बड़ी आसानी से सम्पन्न हो सकेंगे।

ज़मींदारों ने भी अच्छी तरह समझ लिया कि होने वाले खेती सुधार उनकी सत्ता को खतम करने वाले हैं। यह उतने आसान नहीं हैं जितने लगान कमी और पेशगी जमा लगान की वापिसी। उन्होंने अखबारों और किताबों के ज़रिए यह जान लिया था कि जनता जमींदार वर्ग को नष्ट करना चाहती थी। उस प्रथा को नष्ट करना चाहती थी, नकि जमींदारों को खुद को—और न उनकी सभी जमीन छीनी जायगी, जिससे उन पर गुजर बसर को कुछ भी न बचे। बल्कि उन्हें भी औरों के बराबर हिस्सा मिलेगा। लेकिन एक बात जरूर थी। ऐसे जमींदारों को जिन्होंने किसानों पर मनमाना जुल्म किया है, उनको हिस्सा मिलना भी तिरस्कार से देखा जाता था। अब तक गाँवों

में निरंकुश राज्य करने वाले कुछ जमींदार इस आने वाली चोट को खामोशी से बरदाश्त नहीं करना चाहते थे।

जब पैंगऐरहू को यह मालुम हुआ कि पैंगसिनबू उसको जैसे का तैसा मजा चखाना चाहता है तो उसका चेहरा उतर गया। उस की आखें बाहर को निकल आयीं। उसने अपने पाइप को मजबूत लकडी की मेज के सिरे पर दे मारा और अपनी रखैल को सम्बोधित करते हुए कहा, "आजकल कछुए और कबूतर बादशाह बने हुए हैं! मुझे क्या किसी पागल कुत्ते ने काट खाया है?"

पैंगऐरहू का पढ़ने का कमरा बहुत अच्छी तरह सजा हुआ था। झाड़ फानूस और अच्छी चित्रकारी के नमूने चारों और दिखाई पड़ रहे थे। अल्मारी और बक्सों में बहुत सी पुरानी किताबों के ढेर थे। सिर्फ एक चीज की कसर थी। दीवाल की घड़ी के नीचे एक तस्वीर थी जिस में एक दल दिखाया गया था जो कुमिनतांग के आने पर आव भगत कर रहा था। अगर वह तस्वीर अब भी वहां होती तो कोई भी देख सकता था कि पैंगऐरहू उसमें बड़े अभिमान के साथ कुमिनतांग की १०७ वीं डिवीजन के कमान्डर के साथ बैठा हुआ है। यह अब बीते दिनों की बात है लेकिन पैंगऐरहू अब भी उन दिनों को प्रसन्नता से याद करता है।

अपने दोनों हाथ पीछे की ओर मिलाये हुए वह अपने पढ़ने के कमरे में घूम रहा था। उस बड़े कमरे में वह इधर से उधर चक्कर लगा रहा था और किसी गम्भीर चिंता में लीन था। कमरे के बीच में उसके पूर्वजों का वंश वृत्त था जिसमें पिछली २० पीढ़ियों तक के नाम दर्ज थे। बहुत से और कागजों के बंडल थे जिनमें जिले के सभी रईस और कुलीन लोगों के दस्तखत थे। छत की गाटर के सहारे एक साइन बोर्ड लटका हुआ था जिसमें लिखा हुआ था "यह घर एक खुशकिस्मत सितारे से प्रकाशित है," यानी इस घर पर ईश्वरीय कृपा है।

सोच विचार में डूबे हुए पैंगऐरहू ने अपने बुजुर्गों की लगाई हुई इस तख्ती की ओर देखा मानो वह नये संकट के निवारण के लिए

उनसे सलाह मांग रहा हो। धूप बत्तियां अभी बाकी थीं। पूरी तौर पर जल नहीं पाई थीं उसने उनको ठीक से व्यवस्थित कर दिया।

अहाते के दूसरी ओर से लगातार कुछ आवाज आ रही थी पैंग ऐरहू की पत्नी बौद्ध मन्त्रों का उच्चारण कर रही थी।

"मालिक खाना तैयार है?" एक १५ साल की दुबली लड़की ने दर्वाजे पर ही खड़े होकर कहा। मालूम होता था कि उसके बदन में खून ही नहीं है। पैंग ऐरहू ने झट से कुछ गुर्राहट की, फिर यकायक उसने अपना सिर उठाया और कहा "यूलियन"? लड़की ने मुड़ कर देखा। "बताओ तो मैं तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव करता हूं"?

यूलियन जो जाने ही वाली थी एकदम आश्चर्य में पड़ गई। वह भी वातावरण में एक तब्दीली देख रही थी। एक रोज़ जब वह श्रीमती पैंग के साथ बाज़ार में सौदा खरीदने गई तो उसने बहुत से आदमी देखे। दो-दो, तीन-तीन, के गुट में बैठे हुए वे लोग किसी कुए के पास या खेतों के रास्ते में ज़ोरों से बहस कर रहे थे। दीवारों पर नारे और पोस्टर वगैरह लगे थे। एक पोस्टर में बहुत मोटे ताजे जमींदार के बगल में बहुत ही दुबला किसान बैठा था। जहाँ तक उसका अपना सवाल था, वह ८ साल से श्रीमती पैंग की सेवा करती आरही थी। उसने आज तक एक सुई या डोरे का धागा भी नहीं चुराया था लेकिन फिर भी उसे कई बार मार खानी पड़ती थी। श्रीमती पैंग से भी और छोटी रखैल से भी। एक बार दिसम्बर के महीने में छोटी रखैल का बच्चा किसी तरह बिस्तर से गिर पड़ा। इस पर यूलियन को नंगा करके हन्टर लगाये गये। इन दोनों औरतों के मुकाबले में मालिक पैंग मेहरबान कहे जा सकते हैं। ज्यादा से ज्यादा एक या दो तमाचे वे लगाते थे, इसलिये उसने कहा:--

"मालिक! आपने मेरे साथ अच्छा बर्ताव किया है।" लेकिन इन शब्दों के साथ उसकी वे आँखें, जो लगातार चूल्हे के धुँये को सहते सहते लाल पड़ गई थीं, उसकी ओर सूक्ष्म दृष्टि डाल रहीं थीं। पैंग के लिये यह फैसला जो यद्यपि लड़की ने बड़ी अनिच्छा से दिया था बहुत ही उत्तम था।

पैंग परिवार एक साथ खाना नहीं खाता था। पैंग ऐरहू, उसकी रखैल और उसका बच्चा पढ़ने के कमरे में खाना खाते थे। दोपहर के भोजन के बाद उस दिन अपनी आदत के खिलाफ वह नहीं सोया। उसने कमरे को बन्द करके खामोशी से सामान बांधना शुरू किया। रखैल उसके पास थी। शाम तक सामान बांध चुकने के बाद वह कमरे से बाहर निकला और अपने भाई के घर गया। रास्ते में वह अपने नौकर पैंग फूचुआन के घर होकर निकला।

⭑ ⭑ ⭑ ⭑

उस तमाम शाम फूचुआन धान कूट रहा था और काम करते करते उसके दिमाग में यह सवाल परेशान कर रहा था— "आखिरकार मालिक जमींदार उसके दुश्मन हैं या हितैषी ?" सिनवू ने उसके मालिक के विरुद्ध अनेकों बातें बताईं लेकिन उसके साथ मालिक का बर्ताव कितना अच्छा था। जब कि खेत पर काम करने वाले चार दूसरे नौकर निकाल दिये गये हैं, उसका ख्याल करके बर्करार रखा है। अगर मालिक पैंग खतम कर दिये जांय तो उसे कौन अपने खेत पर नौकर रखेगा और कौन खाना देगा ? मालिक पैन्ग ने यह बात कई बार साफ करदी थी और कहा था :— "खेती सुधार ? खेती सुधार का मतलब है साम्यवाद। इस साल जमीदारों का नम्बर है, अगली बार धनी किसान शिकार होंगे उसके एक साल बाद मझोले किसानों की बारी आयगी। ५ साल के अन्दर हर आदमी कौड़ी कौड़ी को मुहताज हो जायगा। यही इसका मतलब है।"

पर वास्तव में फूचुआन को भविष्य इस तरह अंधकार मय नहीं लग रहा था। उसके पास घर भर में सिर्फ एक रुई का लिहाफ था। वह भी करीब करीब चिथड़े हो गया था। लेकिन हाँ उसे याद आया मालिक पैंग ने पिछले ही महीने तो उसे एक खेत दिया था। उसे वह शाम अच्छी तरह याद है जब बड़े ही नाटकीय ढंग से मालिक पैंग ने पूर्वजों के वंश वृक्ष की ओर इशारा करते हुये कहा था :— हम सब लोग पैंग खानदान के हैं। हमें जहाँ तक हो अपनों की सहायता

करनी चाहिये लेकिन कोई भी बाहरी आदमी हमारी जमीन नहीं बटा सकता।

फूचुआन को धान कूटते हुये देखकर पैंगणेरहू ने अपना असंतोष जाहिर किया "अरे इसे छोड़ो।" उसने आदेश दिया "कौन जानता है यह चावल किसके पल्ले पड़ेगा ?" जब से टेलीफोन के लट्ठे गाढ़े गये थे वह लगातार यही रुख लेने लगा था। उसने एक बार फूचुआन से यह भी कहा था कि वह मवेशियों को घास खाने दे फलियाँ नहीं।

अपने दोनों हाथ पीछे किये हुये पैंगणेरहू एक बगल के दरवाजे होकर अपने भाई पैंगपितांग के घर की ओर चल दिया।

गांव के नये मुखिया और इन्कलाबी गुटों के नेताओं ने किसानों को समझाने में पूरी कोशिश की कि वे ठलुआ पन्थी की अफवाहों पर कतई ध्यान न दें और इस फसल का काम जल्दी खतम करें ताकि खेती सुधार कामयाबी से पूरा हो लेकिन कोशिशों के बावजूद द्वेष भरी अफवाहें फैलती रहीं और सारा सिनलू गांव बड़ी उत्तेजित हालत में था।

मिसाल के तौर पर चाउसियांग जुई को लीजिये, यह हजरत एक बिसात खाने के मालिक थे, जो सेविन स्टार स्लोप के पास वाली सड़क पर था हालाँकि इनके नाम गांव में एक इंच भी जमीन न थी फिर भी यह अपने ग्राहकों से कहते थे हम अब और अधिक चीजें खरीद कर नहीं रखने वाले हैं, कौन जानता है इस खेती सुधार के मसले में कौन शिकार बनें ?" पसरट्टे और दवाइयों के मालिकों में भी बेचैनी दिखाई दी होशियार निरीक्षकों ने बताया कि ईंटों के भट्टों से जो धुआँ निकलता है वह रोज ब रोज पतला होता जा रहा है।

कोई यह निश्चित नहीं जान पाता था कि आया यह अफवाहें गाँव में शुरू होती थीं और फिर बाद में बाजार में आती थीं या इसका उल्टा होता था। किसान लोग साग सब्जी और अंडों से भरी टोकरियाँ लेकर बाजार में बेचने आते थे। वहाँ दुकानदार उनसे बहुत से सवाल करते और शाम को जब किसान घर लौटते तो मानो

खाली टोकरियों में अफवाहें भरकर लाते। गांव के मुखिया से बहुत से उल्टे सीधे सवाल पूछे जाते "क्या यह सच है कि शादीसुदा आदमी को बिल्कुल जमीन नहीं मिलेगी ? या जमीन मिलने से पहले हर किसी को शादी करनी ही पड़ेगी ?" ऐसी बातें इतनी फैलीं कि बेचारे मामूली किसान जिनके पास सिर्फ २—४ बीघा जमीन ही थी डर गये।

तुयूचैन नाम की एक स्त्री ने चुयाओ सिऐन के परिवार में तीन महीने तक दाई का काम किया था जबकि उसका पति बाहर गया हुआ था। तभी यकायक उसकी सास ने उसे जोर देकर वापिस बुलाया। मालूम हुआ कि सास इस अफवाह से बहुत घबराई कि कहीं खेती सुधार के बाद सभी तन्दुरुस्त औरतों को मंचूरिया न भेज दिया जाय।

इस तरह के उत्तेजित वातावरण से गाँव में एक और घटना हुई। पैंग सिनव् को एक पैकिट मिला शायद किसी ने दीवाल के ऊपर होकर फैंक दिया था। उसे खोलकर देखा तो रुई की तह में लिपटा हुआ एक पुर्जा मिला, जिसमें लिखा था:—"एक पैंग दूसरे पैंग का सिर नहीं काटना चाहता यह तुम्हारे लिये चेतावनी है कि तुम अब हर मामले में टांग मत अड़ाओ !"

अफवाहों के तार मच्छरों की तरह उड़ रहे थे जिनको खतम करना मुश्किल था। गाँव के कार्यकर्त्ताओं ने अफवाहों का आखीर तक सुराग लगाने की पूरी कोशिश की। पीछा लगाते लगाते एक घर से दूसरे घर और कभी कभी तो एक गाँव से दूसरे गाँव तक जाना पड़ता। कुछ किसान जरूरत से ज्यादा सावधान थे। उन्होंने अपनी सूचना का आधार बताने से इन्कार कर दिया। वे अपना सिर हिलाकर कहते, हमें नहीं मालुम था यह जाहिर करते कि अब याद नहीं रहा कि हमने यह बात कहाँ सुनी।'

मण्डल का मुखिया हर दूसरे रोज मीटिंग बुलाता और उसमें अफवाहों का खण्डन करता। किसी अफवाह फैलाने वाले को

सजा देने से पहले किसान सभा वाले चाहते थे कि उस पर सही आरोप लगाये जायें और सच्चे गवाहों और शहादतों से साबित होने पर ही सजा मिले। इस तरह की मीटिंगों में कई गुल खिले। मालूम ह ता था कि यह सब अफवाहें तीनों बड़े जमींदारों की कोठियों में ही पैदा होती थीं। लोपीजंग की कोठी, बड़ी कोठी और पैंग ,इयों की हवेली यह तीनों ही इन अफवाहों का अड्डा मालुम देती थीं। लोपीजंग ने अपने नगले के प्रगतिशील लोगों को नये प्रकार के कपटी विद्वान बताया। उसने यह भी कानाफूसी की कि सरकार की ओर से जो चेचक का टीका लगाने की दवा हैंगयाँग से आई है उसमें जहर है। पैंगगेरहू ने तो किसान सभा का एक इश्तहार ही बे धड़क होकर फाड़ दिया था जिसमें लिखा था "जो जोतेगा ह काटेगा।" एक पुराना स्तैमाल किया हुआ बैंक का पुर्जा सड़क ५२ पड़ा हु ा पाया गया जिसमें किसी ने लिख रखा था "खेती सुधार के हर कदम पर गरीबी और भी बढ़ती जा रही है।" इसका पता लगाते लगाते मालूम हुआ कि यह सीचांग स्टोर से आया है और यह भी पता लगा कि यह पैंगपिन तांग की कारिस्तानी थी

२३ नवम्बर सन् ५० की सुबह गाँव का मुखिया और ग्रुप नेता इस समस्या पर गौर कर ही रहे थे कि इन तीनों शैतानों को बुलाकर सवाल जवाब किये जायें। उसी समय पैंगगेरहू की पत्नी ने दफ्तर में प्रवेश किया। उसके चेहरे पर आँसू झलक रहे थे अपने पैर पटकते हुये और बहुत ही दुख प्रगट करते हुये उसने अपनी छाती पीटी।

वह कोसने लगी:—ओह! बड़ा दुष्ट है। चोर कहीं का जबसे उस चुड़ैल को घर में ले आया है हम आपस में बिल्कुल नहीं बोले हैं। पिछली तमाम रात उसके कमरे में रोशनी जलती रही है। हमें तो सिर्फ आज सुबह पता लगा है कि उसने क्या किया है जब यूलियन कमरा साफ करने अन्दर गई है। वह उस छोटी गाड़ी में

भाग गया है और साथ में मेरा वह सूटकेस ले गया है जिसमें मेरे मायके से मिली हुई सब चीजें थीं।

सब कोई एक दम खड़े हो होगये। सिनवू तो इतने क्रोध में था कि वह फौरन पीछा करने की सोच रहा था।

गाँव के मुखिया ने यह सूचना फौरन टेलीफोन पर मण्डल के मुखिया को दी। फिर उसने कुछ कार्यकर्त्ताओं को श्रीमती पैंग के साथ घर में तहकीकात करने भेज दिया। दोपहर तक फोन के जरिये जिला सरकार का आदेश आया कि लोचीजंग और पैंगयिन तांग दोनों को अफवाहें फैलाने के जुर्म में फौरन गिरफ्तार कर लिया जाय। "दोनों मुजरिम" जमीदार तीन ग्रुपों के नेताओं की पहरेदारी में पीजिअन नदी के उत्तर में खेतों के सहारे जाने वाले रास्ते से जिला सरकार के दफ्तर की ओर जा रहे थे। इन तीन पहरेदारों में एक सिनवू भी था जिसके हाथ में राइफिल थी।

उनका रास्ता टेलीफोन के लट्टों की बगल में होकर निकलता था शुरू सर्दी की हवा सरसर चल रही थी। टेलीफोन के तारों से टकरा कर मधुर संगीत की आवाज में मानों कोई सन्देश लाई हो। ऐसा लगता था कि वह युग पीड़ित किसानों की वेदना की अभिव्यक्ति कर रही है। पर उस वेदना और शिकायत के साथ आशा भी झलक रही थी। हुइलिंग मंडल की उपजाऊ जमीन और उसके महनती निवासियों की भावनायें गीत बनकर हवा में उड़ रहीं थीं।

दो रोज और इसके बाद खेती सुधार दल गाँव में आ जायगा।

दो

कार्य क्षेत्र में

यद्यपि पैंग परिवार के प्राचीन मन्दिर को बने ६० वर्ष ही बीते थे लेकिन उसके सामने अर्द्ध गोलाकार में खड़े पेड़ों का इतिहास ५०० वर्ष पुराना है। यह सब कुछ होते हुए भी यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि न तो उस मन्दिर ने और न उन पेड़ों ने आज तक इतनी महत्वपूर्ण घटना का साक्षात्कार किया जो २६ नवम्बर १६५० को घटित हुई।

सामन्ती अन्ध विश्वासों के घेर में जो परम्पराएं पनपीं थीं उनको इस एक घटना ने जड़मूल से झकझोर डाला। लोग सैकड़ों की तादाद में पक्के मन्दिर की सीढ़ियों के सामने हुइलिंग मण्डल खेती सुधार की आम मीटिंग के लिए इकट्ठे हुये।

जिला अधिकारियों के आदेश के मुताबिक सुधार कार्य दल के आने से एक दिन पहिले, मन्दिर के सामने एक चबूतरा बना दिया गया था, और प्रवेशद्वार पर दो राष्ट्रीय झण्डे गाढ़ दिये गये थे। इनके कारण बड़ी बड़ी आँखों वाले चुनचंग और चिंगतेह नाम के दो दरवाजे के देवता ढक गये थे जिनकी मूर्तियों के ऊपर प्रवेश द्वार के दोनों भाग ऐसे सजाये गये थे मानों किसानों को पुराने जमाने की याद दिलाई जा रही हो। चबूतरे के पीछे जमीदारों के जुल्म की निशानी वह रेलिंग दिखाई दे रही थी, जिसका प्रयोग कैदी किसानों को बच निकलने से रोकने में किया जाता था।

झण्डों के चौखटों के बीच राष्ट्र नेता माउत्से तुंग की तस्वीर थी। उनका गम्भीर मृदुल चेहरा नीचे जमीन पर बैठे किसानों पर अपनी मन्द मुस्कान बखेर रहा था।

मन्दिर के दोनों किनारों की दीवालों पर अक्षर खुदे हुये थे एक पर लिखा था:—धार्मिक विधि का अनुकूल द्वार और दूसरा था:—पवित्रता का रास्ता।" अब इनकी जगह वहाँ किसान सभा के पदाधिकारियों, दस्तकार संघ और व्यापार मण्डल के प्रतिनिधियों के बैठने की जगह को सूचित करने वाले चिन्ह बने हुये थे।

मन्दिर की छत पर ऊपर को उठे हुये कोनों में पानी निकालने के लिए बनाई मोरियों की कतारें मानों शरद ऋतु के बादलों की ओर इस निश्चिंतगी से देख रही थीं जैसे कुछ हुआ ही न हो, मन्दिर के प्रवेश द्वार की चौकीदारी करने वाले दो पत्थर के शेर इतने निरापेक्षी नहीं मालूम पड़ते थे। उनके अधे खुले मुँह और निकले हुए दांत कोई भाव जरूर प्रगट कर रहे थे लेकिन यह कहना कठिन था कि उनसे नाराजगी टपक रही थी या मुसकराहट।

मीटिंग दस बजे होने वाली थी। बहुत सुबह से ही प्रतिनिधि लोग 'हुइलिंग मण्डल के पूरे नौ गाँवों के हर घराने से एक व्यक्ति के हिसाब से, सिनलू गाँव को चल दिये। ये लोग खेतों के रास्तों और पगडन्डियों से होकर आये जो चारों ओर जाल की तरह ऐसे फैली हुई थीं जैसे मनुष्य के शरीर में नाड़ियाँ फैली होती हैं कुछ लोग अपने हाथ में छोटे कागज के झण्डे लिए हुये थे जिन पर लिखा था—"कृषि सुधार कार्य दल के साथियो [illegible]गत है!

सैविन स्टार स्लोप के पास की वस्ती के प्रतिनिधि भी आये। उनमें कुछ लोगों के दिमाग सन्देहों और उलझनों से भरे हुये थे। वे या तो कानाफूंसी करने में लग गये या जेबों में हाथ डाल कर खामोश खड़े हो गये।

दस्तकारों और बस्तियों में फेरी लगानेवालों ने प्रसन्नता सूचक भाव प्रगट किये। वे उस मीटिंग में प्रसन्न मुद्रा में बाजा बजाते

हुये आये। लेकिन आम तौर पर सारे वातावरण में एक तहलका था। लोग ताज्जुब से देख रहे थे कि लीगार्डिन का लीचाओचू जैसा उद्दण्ड जमींदार अपने हाथ जेबों में डाले हुये एक कौने में काँपता हुआ सा खड़ा रहा जैसे कि कोई कैदी अपनी आखिरी सजा सुनने के इन्तजार में हो। लेकिन किसानों में भी एक ऐसा तबका था जिसको जमीदारों द्वारा फैलाई हुई अफवाहों ने परेशानी में डाल दिया था और जो खुद सिर्फ दो चार बीघे जमीन के ही मालिक थे फिर भी इस विचार से विचलित थे कि कहीं इसी मीटिंग में जमीन का नया बटवारा न तै कर दिया जाय। हू पिन सान जो बस्ती में एक बिसांती की दूकान का मालिक था जानबूझ कर एक थेगड़ी लगी जाकट पहिनकर आया था। जब से कृषि सुधार दल गाँव में आया उसने अपने स्टोर के अन्दर का भाग किसी को भी दिखाने से इनकार कर दिया था।

'पण्डित' चू याओ सीन बड़े ही जटिल और वेदनासे भरे भावों के शिकार हो रहे थे। यह बहुत बड़ी घटना थी और उसके योग्य अपने को साबित करने के लिये उन्होंने फिर वह लाल रेशमी बैज अपने कोट पर लगा लिया जो उन्हें एक बार कहीं किसान प्रतिनिधियों की बैठक में शामिल होने के फलस्वरूप मिला था, अब वे उस भीड़ में इधर से उधर बड़ी शान से चक्कर काट रहे थे मानो उस सारे जलसे के वे ही सभापति हों लेकिन फिर भी वे इस सचाई से बच नहीं सकते थे कि उन्होंने सिर्फ एक साल पहिले ही दो खेतिहर मजदूरों से काम करवाया था और वहुत ही बेजा सूद पर रुपया उधार दिया था वे इस बारे में बहुत अस्पष्ट तौर पर वाकिफ थे कि इस बार का आन्दोलन लगान कमी और डिपौजिट वापिसी के मुकाबले में वहुत भिन्न था। उनकी बेचैनी कम नहीं हुई जब उन्हें मालूम हुआ कि पिछली रात सुधार दल ने सलाह मशविरा के लिये कुछ किसान इट्ठे किये थे जो काफी रात गये तक मशविरा करते रहे और उसमें उन्हें नहीं बुलाया गया। जाहिरा तौर पर

दिलाने के लिए उन्होंने एक प्रसन्न मुद्रा बना रक्खी थी लेकिन अपने दिल में वह भयभीत थे और एक गहरी ईर्ष्या की भावना के शिकार थे।

सवा दस बजे, मण्डल के सभापति कू यू चाँग एक नई नीले कपड़े की जाकट पहिने, चबूतरे पर आकर बैठे। वहाँ पर जिला कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री सिउंग पैंग, दस्तकार संघ के सभापति, किसान सभा और व्यापार मण्डल के पदाधिकारीगण पहले से ही मौजूद थे। सेविन स्टार स्लोप प्राइमरी स्कूल के हैडमास्टर साहब सू जू चिआँग और सुधार दल के कुछ साथी भी वहाँ बैठे हुये थे। कू यू चाँग ने सभी को शान्त होने का आदेश दिया और इधर उधर से बातचीत की आवाजें आना बन्द हो गईं। उन्होंने इस सभा के तीन उद्देश्य बताए:—

[१] कृषि सुधार दल के कार्यकर्त्ताओं का स्वागत करना जिनके लिए पन्द्रह बीस दिन से हुलिंग मण्डल के सभी किसान आशा लगाये हुए थे और जो अब आ गए हैं।

[२] जिला पार्टी सैक्रेटरी से मौजूदा हालात पर रिपोर्ट सुनना ताकि जितनी गलतफहमी और झूंठी अफवाहें फैली हुई हैं वे हमेशा के लिए खतम की जा सकें।

[३] कृषि सुधार दल के साथी चाओ ची मिन यह समझायें कि जनवादी सरकार किसानों की समस्या पर क्या नीति अपना रही है।

अब सिउंग पैंग खड़े हुये। वे सियाँगचिन के रहने वाले थे और कद में ठिगने थे। वैसे उनकी बोली मुलायम थी लेकिन जब वे तकरीर करने खड़े होते थे तो स्वाभावतः एक बुलन्द आवाज उनके मुँह से निकलती थी।

"किसान साथियो! हम लोग कृषि सुधार करने जा रहे हैं। सभी सुधार कोई न कोई नई चीज लाते हैं और यह भी स्वाभाविक है कि हम नई चीज पर यकायक भरोसा नहीं कर पाते। चूंकि हम

उससे अपरिचित होते हैं। पर इस अवसर पर अविश्वास न तो जरूरी है और न मुनासिब। फिर भी अगर कोई किसान ऐसा रुख रखे तो उसे दोष नहीं देना चाहिये हजारों सालों की जालिम और लालची जमीदारी प्रथा ने तुम्हें तुम्हारी रोजी और शिक्षा पाने के साधनों से वंचित कर रखा है। अब इस बात का फ़ायदा उठाकर कि तुम अखबार नहीं पढ़ सकते हो और जनवादी सरकार की नीति को अच्छी तरह नहीं समझ सकते हो, जमीदार धोखा देने की कोशिश करते हैं और तरह तरह की झूठी अफवाह फैलाकर तुम्हारी मानसिक शांति भंग करते हैं ताकि तुमको खेती सुधार के काम से रोक सकें।"

"मुझे मालूम है कि वे यह अफवाह फैला रहे हैं कि चांगकाई शेक वापिस आ रहा है। लेकिन भाइयो! ज़रा सोचो यह कैसी शेखचिल्लियों जैसी बात है।

"एक साल से ज्यादा हो गया जब हमारी आजाद चीन फौज ने उस कुमिनतांग को ठोकर मार कर रसातल में फैंक दिया जिसने बीस साल से भी ज्यादा अरसे तक हमारा खून चूसा और हमारे हक छीने। हमने अस्सी लाख आदमियों की उस लुटेरी सेना को नेस्तनाबूद कर दिया है।

"उनके दिन अब गिनती के रह गये हैं। क्या वे लौटने की हिम्मत कर सकते हैं? तब तो हम उन्हें आसानी से और शीघ्रता से खतम कर सकेंगे।"

इस पर वे सभी किसान हंस पड़े। उन्हें याद आया कि पिछले दिनों कुमिनतांग सेना की कैसी हुलिया तबाह थी।

सिउंग पैंग ने बहुत स्पष्ट तरीके से उन सारी अफवाहों का खण्डन कर दिया जो बिजली की तरह सारे देहाती इलाकों में फैल गई थीं। उन्होंने इस अफवाह का हवाला देते हुए कि अमरीकी सरकार चांगकाई शेक को मदद भेजने वाली है, कहा—

"लेकिन क्या अमरीका ने चांगकाई शेक को पहिले मदद नहीं दी थी? और खुद अमरीका भी तो भुगत चुका है। हमारी

जनता के वालन्टियरों ने और कोरिया की आज़ाद फौज ने अमरीकी साम्राज्यवादियों के कोरियन रण क्षेत्र में जो दाँत खट्टे किये हैं उससे सब समझ सकते हैं कि च्यांग को अमरीकी मदद से क्या होगा?

"जमीदार लोग कहते हैं कि चांगकाई शेक हैंको वापिस आ गया है।"–सिउंग पैंग ने कहना जारी रखा, "लेकिन जब वह अपनी अस्सी लाख सेना के होते हुए नानकिंग की हिफ़ाजत न कर सका तो चन्द आदमियों के भरोसे वह हैंको कैसे आयगा? और ऐसी हालत में जब कि उसके अमरीकी दोस्त कोरिया के अन्दर अपनी खैर मना रहे हैं।"

किसान फिर हंस पड़े चूंकि दलील बहुत मज़बूत थी। सिउंग पैंग कहते गये—"इसलिये जब हम इस खेती सुधार कार्य को अंजाम दे रहे हैं, हमें अपने दिमाग बिल्कुल साफ कर लेने चाहिये। जमीदारों की भी भलाई इसी में है कि वे अपने झूंठे सपनों को तिलांजलि दे दें। तुम्हारे च्यांग को हमेशा के लिये ठोकर मार दी गई है। अपने हथियार डाल दो और जनता को समर्पण कर दो। इसी में तुम्हारा हित है। और आप किसान भाइयो! अब चूंकि आपका अपना राज है, आपको किसी से डरने की ज़रूरत नहीं है।"

जैसे ही सिउंग पैंग अपनी जगह बैठने लगे किसानों ने बड़े ज़ोर से हर्ष ध्वनि की।

सिनवू ने अपना हाथ उठाते हुए खड़े होकर ज़ोर से एक नारा लगाया 'सामन्ती जमीदार वर्ग का अन्त हो।' और सारे किसानों ने उस नारे को एक होकर दुहराया।

उस भीड़ में जो चन्द जमीदार थे वे वैसे ही अकेलापन महसूस कर रहे थे। ये विचार मुश्किल से उनके गलों में उतर रहे थे। फिर भी उन्होंने ताली पीटने की कोशिश की। पर दोनों हथेली किसी तरह मिल न सकीं।

इसके बाद सुधार दल के साथी चाओ एक चीते की सी फुर्तीली छलांग के साथ आगे बढ़े वे एक परिपक्क, समझदार किसान कार्यकर्त्ता थे। वे बहुत घूम चुके हैं और बहुत हल्का सामान अपने साथ रखते हैं। उनकी पुरानी धूमिल जाकिट की जेबों में एक फाउन्टैन पैन और एक दाँत बुरुष दिखाई पड़ रहा था। उनका चहरा पक्के भूरे रंग का था और उनके माथे पर एक दाग था जो जापानी हमले की याद दिलाता था। शांशी गुरिल्ला क्षेत्र के अन्दर बुताई में जब वे वाइस मैजिस्ट्रेट थे तब वे एक लड़ाई में उन्हें जख्मी होना पड़ा था, उस समय उनकी उम्र सिर्फ २३ साल की थी।

"साथियो ! मैं शांसी का रहने वाला हूं इसलिये शायद आप मेरी हर बात को न समझ सकें। इसलिये मैं हर शब्द बहुत धीरे और साफ साफ बोलूंगा। फिर भी अगर आप न समझ सकें तो कृपया बाद में सवाल करने से न हिचकिचायें। मैं और मेरे साथी यहीं आस पास में तब तक रहेंगे जब तक हुलिंग मण्डल का खेती सुधार का काम पूरा न हो जायगा। हम लोग आपकी पूरी आजादी के लिये यहाँ काम करेंगे। हम उन तमाम बातों को साफ और सही तरीके से समझायेंगे जो शायद आज आप नहीं समझ पा रहे हैं।"

"किसान भाइयो ! आपने सारी जिन्दगी खेत जोते हैं। और लोगों की बजाय आप यह अच्छी तरह समझ सकते हैं कि 'जोतने वाला ही अपनी जमीन का मालिक हो' कितनी जरूरी बात है। जमीदारी प्रथा तो निहायत बेइन्साफी और जुल्म का प्रतीक है। जिन लोगों ने जमीन जोती उन्हें बदले में कुछ न मिला। हर चीज उस जमीदार के पल्ले पड़ी जो कातिल की तरह आराम से घर पर बैठा रहा। फिर इसमें आश्चर्य क्यों हो कि पैदावार बहुत कम थी और कीमतें बहुत तेज थीं।

मिसाल के लिए कपास ले लो जो उद्योग की दृष्टि से बड़ी आवश्यक वस्तु है। चूंकि हम काफी कपास नहीं उपजाते इसलिए

उद्योग [Industry] अधिक उन्नति नहीं कर सका। और इसलिये कपड़ा मंहगा था और हमको हमेशा चिथड़ों में रहना पड़ा। कपड़े के व्यापारियों और उद्योगपतियों का धन्धा अच्छा नहीं चलता चूंकि उनको बहुत थोड़े रईस ग्राहकों पर निर्भर रहना पड़ता है। कृषि सुधार के बाद जब किसान अधिक कपास उपजायगा तो उद्योग उन्नति करेगा और व्यापारी वर्ग भी उन्नति करेगा चूंकि उनके ग्राहकों की श्रेणी में खुशहाल किसान जनता भी होगी।"

भीड़ में बहुतेरे सिर इस दलील की स्वीकृति में हिले।

"जब कोई दिन और रात खाने भर को जुटाने के संघर्ष में लगा रहता हो तो शिक्षा पाने की बात सोचने का समय कैसे मिल सकता है। हमारी जनता का अस्सी फीसदी भाग किसान है और उनमें से अधिकांश अशिक्षित हैं। वे कभी भी पूरी तौर पर और सच्चे मानों में इस देश के मालिक नहीं बन सकते जब तक वे सामन्ती शोषण की चक्की में पिसते रहेंगे। अगर हम सामन्ती कृषि व्यवस्था से छुटकारा नहीं पाते तो हम कैसे एक वास्तविक आजाद मजबूत और उन्नत राष्ट्र निर्माण करने की कल्पना कर सकते हैं। ये जमींदारी व्यवस्था हमारे देश के सब रोगों का मूल कारण है इसने हमें गरीब, पिछड़ा हुआ और आशक्त बनाया और हम इसलिये साम्राज्यवादियों के चंगुल में फंसे रहे। अब ये बातें हमेशा के लिए खतम होनी चाहिये।"

"१९२७ से लेकर पुराने आजाद इलाकों में यांगत्सी नदी के उत्तर और दक्षिण में खेती सुधार का काम लगातार जारी रहा है। इन २३ सालों में हमने जो तजुरबा हाँसिल किया, वह उस खेती सुधार कानून में निहित है जो हमारी केन्द्रीय जनवादी सरकार ने इस साल लागू किया है। इसलिये यह जरूरी है कि हम किसानों की पूरी आजादी के लिये खेती सुधार कानून का पालन करें। कृषि सुधार एक बड़ी जबरदस्त धरती हिलाने वाली घटना है। जो कल तक देहात की दुनिया में शासन करते थे, जो हजारों साल से जनता

के ऊपर चढ़े हुये थे वे जमीदार आज जनता की आज्ञा के आगे सिर झुकायेंगे।

"आज तक के शासित और दलित खेतिहर मजदूर, गरीब और मझोले किसान—(सबसे अधिक शोषित वर्ग) ही अब शक्तिशाली बनेंगे। कृषि सुधार का उद्देश्य उनके जीवन और उनकी शक्ति को ऊंचे स्तर पर पहुँचाना है। हम जब 'किसानों की आजादी' कहते हैं तो हमारा इन्हीं बातों से मतलब होता है।

"इसलिये हर उस व्यक्ति को जो कृषि सुधार का समर्थन करता है पहिले किसानों की सम्मति और उनके हितों की कद्र करना सीखना चाहिये। कृषि सुधार के दौरान में और बाद में भी, खेतिहर मजदूरों, गरीब और मझोले किसानों की एकता ही एक मजबूत सच्ची जनवादी हकूमत (People's Democratic Dictatorship) की बहतरीन गारन्टी हो सकती है। खास तौर पर खेतिहर मज़दूर और गरीब किसान ही देहात में होने वाले इन्कलाब की धुरी होंगे। उनको सजग होकर उठ खड़े हो जाना चाहिये :

"बहादुरी से आगे बढ़ो ! बहुत बड़ी शक्तियाँ तुम्हारे पीछे हैं। मजदूर, कम्यूनिस्ट पार्टी, जनता की फौज। ये सब तुम्हारे लिये लड़ने को तैयार हैं, तुम्हारी सहायता के लिए तैयार हैं। और राष्ट्र नेता माउजेतुंग तुम्हारी रहनुमाई पर हैं।"

इतना सब कुछ कह चुकने पर चाओ ची मिन ने खेती सुधार के उन तमाम पहलुओं पर रोशनी डाली जिन पर पिछली रात उन्होंने गाँव के मुखिया और किसान सभा के कार्यकर्ताओं के साथ परामर्श और विचार विनिमय किया था। उन्होंने खास तौर पर इस बात को समझाया कि जन मुक्ति सेना के आदमी, इन्कलाबी शहीदों के आश्रित लोग, मजदूर, नौकरी पेशेवाले लोग, फेरी वाले आदि आदि ऐसे लोग जो खेतों में काम नहीं कर पाते लेकिन दूसरे पेशों में हैं, या जो श्रम करने के अयोग्य हैं उनको जमीदारवर्ग में शुमार नहीं किया जायगा चाहे वे कुछ खेत लगान पर उठा दें। उन्होंने

गरीब किसानों का ध्यान खींचते हुए यह भी समझाया कि अब भी अमीर किसान की अर्थ व्यवस्था कायम रखना क्यों आवश्यक है। उन्होंने साबित किया कि शुरु में इससे पैदावार बढ़ाने के कार्य में सफलता मिलेगी, मझोले किसान के हितों की रक्षा होगी, जमींदार वर्ग अकेला पड़ जायगा जो कि मुख्य दुश्मन है और इस तरह खेती सुधार का काम आसानी से प्रगति करेगा।

उन्होंने बड़ी सरलता से नये जनवादी इन्क्लाब की अहमियत समझाई। शहर और देहात में दोनों तरफ बगैर किसी रुकावट के पदार्थों के आने जाने से किसानों को कितना लाभ होगा। इसका जिकर करते हुये उन्होंने बाताया कि उद्योग और व्यापार की हिफाजत करना क्यों आवश्यक है।

उन उद्योगपतियों और व्यापारियों से जो साथ ही साथ जमींदार भी थे उन्हें यह कहना था :—

आप लोग शहर में अपने धन्धों के विकास पर अधिक ध्यान दें। अब गांवों में जमीन, मकान और खेती के औजारों को एकाधिकार द्वारा किसानों का शोषण करना बन्द कर दें।" उन्होंने एक बार उन्हें फिर याद दिलाया, "पहिले सिर्फ जमींदार और कुछ अमीर किसान ही आपके ग्राहक थे। जमींदार वर्ग पूरी आबादी में दस फीसदी से भी कम है। जब किसान वास्तव में माल खरीदना शुरू करेगा तो आपको पता चलेगा कि कौन बड़ा ग्राहक है।"

जमींदारों से उन्होंने फिर एकबार बहुत स्पष्ट और दृढ़ आवाजमें कहा। पहिले उन्होंने यह साफ कर दिया था कि जमींदारों की मौरूसी जायदाद छीन ली जायगी और एक सामाजिक तबके के रूप में उनका अन्त कर दिया जायगा लेकिन उन्हें व्यक्तिगत तौर पर तंग नहीं किया जायगा। यह कह चुकने के बाद उन्हें निम्न चेतावनी दी।

"आपके सामने दो रास्ते हैं। एक रास्ता आपके भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है और वह है, 'पश्चात्ताप करो और सुधारो।' अपनी जमीन, मवेशी, खेती के औजार, अतिरिक्त गल्ला और

मकानों की ठीक हिफाजत रखो और जब जब्ती का समय आये तो हर चीज कायदे कानून के मुताबिक सौंप दो। ऐसा करने पर किसान अवश्य आपके साथ नरमी का बर्ताव करेंगे। आपको भी औरों की तरह जमीन और मकान दिया जायगा ताकि आपको भी खुद श्रम करके अपने आपको सुधारने का अवसर मिले।

दूसरा रास्ता आपको बर्बादी की ओर ले जाने वाला है। वह रास्ता पग भी तिंग और लो पी जंग का रास्ता है। उन्होंने साजिशें कीं और झगड़े फसाद फैलाये। अब वे सजा के मुन्तजिर हैं। इस प्रकार के जमींदार कभी भी जनता की विशाल न्याय भुजा से नहीं बच सकते....''

बोलने से पहिले चाओ ची मिन को अपनी शांशी की जबान होने की वजह से जरा बेचैनी थी। लेकिन वे १६४६ की गर्मियों में आजाद चीन फौज के साथ होनान रह चुके थे और उनकी उत्तर की जबान थोड़ी मुलायम हो चुकी थी किसानों के चेहरों की मुस्कराहट और सैविनस्टार पोल के दुकानदारों के चहरों पर सन्तोष की झलक निस्सन्देह यह साबित कर रही थी कि श्रोताओं ने उनके भाषण का सार समझ लिया है। यहाँ तक कि जमींदारों की बेचैनी भी किसी दरजे तक कम हुई थी। उनके लिए यह बात एक ऊंची इमारत से नीचे मजबूत जमीन पर गिर पड़ने के समान थी। जाहिर है कि इस तरह गिरना कोई खुशी की बात नहीं हो सकती लेकिन कम से कम उन्हें इतना तो मालूम पड़ गया कि वे कहाँ गिरने जा रहे हैं।

अब की बार हुलिंग मंडल दस्तकार संघ के सभापति बोलने खड़े हुए उनकी तकरीर का निचोड़ यह था कि किसान और मजदूर दोनों एक ही ध्येय के लिए काम कर रहे हैं। मजदूर अपनी पूरी ताकत के साथ किसानों की आजादी की लड़ाई में हिस्सा बटायेंगे। मजदूर किसान एकता की आधार शिला पर प्राप्त की हुई किसानों की पूर्ण स्वतन्त्रता ही एक नये शक्तिशाली चीन का निर्माण कर सकती है।

पैन-चि-चाओ पेशे से लुहार थे। उन्होंने असली सहायता के तौर पर यह वायदा किया कि वे कृषि सुधार के दौरान में आजाद चीन फौज के लिए हथियार तेजी से बनायेंगे और आजाद किसानों की खातिर खेती के लिए अच्छे से अच्छे औजार बना कर देंगे।

अन्त में हुलिंग मंडल किसान सभा के अध्यक्ष पेन शु शेंग की बारी आई। वे तमाम किसानों की ओर से बोले। उन्होंने कहा कि सबको एक होकर केन्द्रीय जनवादी सरकारी नीति और कानून के मुताबिक काम करना चाहिए और सामंती जमींदारों से वह जमीन वापिस ले लेनी चाहिये जो सदियों से उनके अधिकार में है। इसके बाद उन्होंने भी इस बात पर जोर दिया कि उन उद्योग धन्धों को जो जमीदार लोग चला रहे हैं अथवा जमीनों और जायदादों को जो उद्योग धन्धों में प्रयोग की जा रही हैं, अभी हाथ नहीं लगाना चाहिए।

दोपहर को मीटिंग समाप्त हुई। लौटते समय रास्ते भर लोग बातें करते रहे और बहस चलती रही जब कि आते वक्त सब खामोश आये थे।

चूंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं दी गई थी, स्कौलर चू याओ सीन कुछ उत्तेजित और अनमने हो रहे थ। घर जाती हुई भीड़ में उन्होंने लोगों से मिल कर मजाक उड़ाने की कोशिश की।

"एक बात माननी पड़ेगी, साथी चाओ हैं बड़े चलते पुरजे," उन्होंने कहा, "देखा! कैसे उन्होंने जनता की विशाल न्याय भुजा का वर्णन किया जिसकी पकड़ाई में सिर्फ पैंगयिन तिंग और लोपी जंग ही आये। लेकिन क्या उन्होंने एक शब्द भी दूसरे पैंग के बारे में कहा जो पहिले ही से कानूनी सजा के दायरे से निकल भागा है?"

यह बात सिनवू ने सुनली और एक कड़ी नजर डालते हुए कहा "आप घबराएं नहीं! हम उसे समय पर अवश्य पकड़ लेंगे और

तब देखियेगा !"

सुधारदल के नेता साथी चाओ ची मिन ने इस बात पर जोर दिया कि पूरे मण्डल की छानबीन और तहकीकात के सम्बन्ध में मीटिंगों का काम दो दिन में समाप्त कर लेना चाहिये जिससे कि कार्यकर्त्ता अलग अलग गाँवों में जल्दी से पहुँच सकें और खेती सुधार का असली काम शुरू करदें। हुलिंग मंडल के भिन्न हिस्सों में इन्हीं मीटिंगों के जरिये लोगों को सरकार की नीति का सही अन्दाज हो जाना चाहिये।

सबसे पहिले कार्यकर्त्ताओं की बैठक हुई। कार्यदल के दस सदस्य एक कतार में एक लम्बी बैंच पर बैठे। यह जगह एक पुराने स्मारक की पटिया के नीचे थी जिस पर लिखा हुआ था :-"जड़ें बहुत गहरी जाती हैं।" कार्यदल के सदस्य जल्दी जल्दी अपनी कापियों में नोट करते गये जबकि मंडल के प्रधान कूयूचांग मुकामी हालत बता रहे थे।

मानवीय भूगोल—हुलिंग मंडल में कुल मिलाकर २६२७ घर हैं। कुल आबादी ६६८६ है। नौ गाँव हैं। १७८२ एकड़ सींचे हुए धान के खेत हैं, ५४८ एकड़ सूखी जमीन है। उसमें ज्यादातर कपास बोया हुआ है। जमीन की मिल्कियत काफी केन्द्रित है। मिसाल के तौर पर लो वाली बड़ी कोठी का मालिक लो पी जंग अकेला १०५ एकड़ जमीन का मालिक है।

तीनों ओर से नदियों से घिरा हुआ है। उत्तर में पीजिअन, पश्चिम में लिनशिआँग और दक्खिन में शाहो। तीनों तुंगतिंग झील में गिरती हैं। बसंत और बरसात में अक्सर बाढ़ आती है। नदियों के पास की जमीन को सबसे अधिक नुकसान होता है।

इतिहास—इस मंडल ने जापानी शासन के दिनों में काफी धक्के सहे हैं। उन दिनों सेविन स्टार स्लोप के पास की सारी बस्ती जलादी गई थी और बहुत से किसानों को जान से हाथ धोना पड़ा था।

राजनैतिक चेतना—महान् क्रान्ति के दौर में यह मण्डल पुराने सोवियत इलाके के नजदीक था इसलिये बड़ी उम्र वाले किसानों को संगठन का अच्छा अनुभव था। इसी कारण २२ साल के कुमिनताँगी शासन में जमीदारों ने विशेष जुल्म ढाये। इस मंडल में करीब ७ या ८ निरंकुश जमीदार हैं। इन सब में बुरे सिनलू गाँव के दो पैंग हैं।

"सर्किल"—एक प्रतिक्रियावादी, अन्धविश्वासी संस्था है जिसका मुकामी तौर पर काफी असर है। जिस समय आजाद चीन फौज ने याँगत्सी नदी पार की थी इसकी सदस्यता इस मण्डल में ५६० तक पहुँच गई थी। इनमें करीब ८० फीसदी बहकाये हुए खेतिहर मजदूर और गरीब किसान हैं। लेकिन उनमें से अधिकांश ने ये संस्था तब से छोड़ दी है जब से लगान कमी और डिपोजिट वापिसी का आन्दोलन चालू हुआ। इस 'सर्किल' का नेता शुआँग फँग गाँव का रहने वाला तानचिंग वू था। वह इस साल के शुरू में विद्रोह की साजिश करते समय मारा गया। पर संस्था अभी गुप्त तरीके से चल रही है। खास नजर रखने की जरूरत है।

मौजूदा मंडल सरकार लगान कमी और डिपोजिट वापिसी तहरीक के दौरान में चुनी गई थी। उसमें मंडल के चार कार्यकर्त्ता हैं। उनमें से तीन गरीब किसान या खेतिहर मजदूर हैं, और एक मझोला किसान है। नौ गाँवों के कार्यकर्त्ताओं में छै गरीब किसान या खेतिहर मजदूर हैं और तीन मझोले किसान हैं।

पूरे मंडल भर में कम्युनिस्ट पार्टी और नई जनवादी नौजवान सभा के ४६ मेम्बर हैं। १९२७ के बाद से पार्टी हैडक्वार्टर्स सफलता पूर्वक अन्डरग्राउन्ड बने रहे। आजादी के बाद पार्टी और नौजवान सभा के मेम्बर हर तरह के कामों में बहुत ही प्रभावशाली रहें 'हैं-मोर्चे को मदद देने में, लगान कमी की तहरीक में आदि आदि......। मिसाल ने तौर पर सिनलू

गाँव का पैंग सिनलू हर तरह की प्रतिक्रियावादी शक्तियों से बराबर लड़ता रहा है जब से अपने ध्येय के प्रति विश्वास जमाकर उसे जीता गया है।

जब मंडल के अध्यक्ष ने अपनी रिपोर्ट समाप्त की तो कार्य दल के मेम्बरों ने कई सवाल पूछे। उनमें से एक साथी लू याँग थे जिनको सिनलू गाँव जाने का भार सौंपा गया था। वे ल्यूयांग तहसील के रहने वाले थे और शुरू में एक स्कूल में मास्टर थे। उनका जन्म एक मामूली किसान परिवार में हुआ था और हुनान आजाद होने के बाद उन्होंने सियाँगटान के कार्यकर्त्ता शिक्षालय में चार महीने की ट्रेनिंग पाई थी। उन्होंने लगान कमी आन्दोलन में हिस्सा लिया था तब उन्हें कुशल पाया गया। फिरभी सिनलू गांव की जैसी पेचीदा समस्याओं को सुलझाने के बारे में उन्होंने परेशानी महसूस की। सेविन स्टार स्लोप, उसकी दुकानें और कारबार समस्या को और भी जटिल रूप देते थे और सबसे ज्यादा प्रतिक्रियावादी जमींदार भी सिनलू गांव के ही निवासी थे इसलिए वे कभी यह सवाल कभी वह सवाल करके कुछ न कुछ पूछते रहे जब तक कि चाओचीमिन ने समझ सोचकर यह सुझाव रखा—

"अच्छा हो, तुम, गांव के मुखिया, वृद्ध पैंग और मैं स्वयं मिल कर सिनलू गांव समस्या पर कुछ समय बाद विचार करें।"

शाम के खाने के बाद एक तेज गैस लैम्प के सहारे मीटिंग फिर चालू हुई। गैस लैम्प मन्दिर की छड़ पर लटका दी गई।

किसान सभा के अध्यक्ष यैन रिपोर्ट कर रहे थे। उन्होंने कहा:—
"हुलिंग मंडल किसान सभा पहले पहल लगान बंदी और डिपौजिट वापिसी तहरीक के दौरान में संगठित की गई थी इसलिये इसमें अनुपात की दृष्टि से मझौले किसानों की तादाद अधिक है लेकिन फिर भी जब तक ठीक २ हैसियतवार दर्जों का विश्लेषण नहीं किया जाता कोई निश्चित आंकड़े इस बारे में नहीं दिये जा सकते। सभा की तीन शाखाऐं हैं। हरेक में तीन गाँव हैं। मिसाल के तौर पर सिनलू,

शिचिश्राश्रो श्रौर यूनहू मिलकर पहली शाखा बनाते हैं। पूरी सदस्य संख्या ६५७ है। लेकिन यह संख्या किसानों की वर्ग चेतना का पूरी तौर पर विश्वस्त माप दंड नहीं है चूंकि बहुत से मेम्बर उस समय बनाये गये जब सभा के कार्यकर्त्ता उनके घरों पर समझाने गये। इनमें ५३४ पुरुष हैं और ४२३ स्त्रियाँ हैं। इस समय सभा में १५ श्रोहदेदार कार्यकर्त्ता हैं। उनमें से आठ खेत मजदूर या गरीब किसान हैं और सात मझोले किसान हैं। आप कार्यकर्त्ताओं को हमारी किसान सभा अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए चूंकि यही वह जन संगठन है जोकि किसानों को कृषि सुधार के दौरान में और बाद में भी अपने हितों का संरक्षण करने की सामर्थ देता है। जहाँ तक हमारा सवाल है हम जनता की मुकामी शासन सत्ता, किसान प्रतिनिधि सभा के निकट सम्पर्क में रह कर काम करेंगे। हमारी सभा के जरिये ही किसान अपनी वर्ग चेतना ऊंची उठाते हैं, मिलकर और संगठित कार्य करने की परम्परा बनाते हैं और ज्ञान बढ़ाते हैं। इस प्रकार वे रचनात्मक और राष्ट्र निर्माण के कार्यों को सफलता पूर्वक पूरा करने की क्षमता प्राप्त करते हैं। सभा के जरिये ही किसान पारस्परिक सहयोग करना सीखते हैं और कृषि उत्पादन तथा अपने रहन सहन को ऊंचा बढ़ाते हैं।

मौजूदा हुलिंग मंडल किसान सभा लगान कमी और डिपौजिट वापिसी की तहरीक के दौर में कायम हुई है। यह एक सीमित जन आन्दोलन था। यह सभा कृषि सुधार जैसी बड़ी जिम्मेदारी को अपने कंधों पर लेने की क्षमता नहीं रखती, इस लिये हमको अभी इस संघर्ष के दौरान में अपने को मजबूत बनाने और विकास करने के सबक लेने हैं। उन जमींदारों, रईस किसानों या उनके दलालों से अपने को पाक साफ कर लेना है जो किसी तरह इसमें घुस आये हों और राजनैतिक तौर पर पिछड़े हुए तबकों को शिक्षित करना है और किसानों में से नये सक्रिय सदस्यों को आगे बढ़ाना है।

दूसरे रोज सुबह इससे पहिले कि कार्यकर्त्ता लोग अपने मुँह धोएँ, लोगों का आना शुरू होगया। यह सुधार कार्य दल की और स्थानीय बुद्धि जीवियों की एक मिली जुली बैठक थी।

चाओ ची मिन ने बुद्धिजीवियों को समझाया कि कृषि सुधार के प्रति उनका उचित रवैया क्या होना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि कृषि सुधार कानून में सरकार ने बुद्धिजीवियों के प्रति क्या नीति निर्धारित की है। इसके बाद उन्होंने इस बात पर विचार विनिमय शुरू किया कि हुलिंग मंडल के बुद्धिजीवी किस प्रकार कृषि सुधार दल के साथ किसानों की आजादी की तहरीक में सहयोग कर सकते हैं।

इस बातचीत में सब स्कूल मास्टरों ने हिस्सा लिया। कुछ ने मंजूर किया कि उनकी पुरानी समझ जमींदारी जहनियत पर आधारित है। लेकिन राजनैतिक ध्येय के फलस्वरूप उन्होंने यह अनुभव किया है कि कृषि सुधार एक आवश्यक और न्यायोचित कदम है। इसलिये वे लोग दृढ़ता के साथ किसानों का साथ देने को तैयार हैं और उस वर्ग को समाप्त करने को तैयार हैं जिसके वे स्वयं अंश रहे हैं। कुछ लोगों ने कालीतख्ती पर समाचार लिखने का और कुछ ने पोस्टर बनाने का वायदा किया। कुछ ने कहा वे वर्तमान समस्याओं पर शिक्षित करेंगे। कुछ लोगों ने सुधार के कार्यों और नीति का प्रचार करने का आश्वासन दिया। सेविन स्टार पोल प्राइमरी स्कूल के स्टाफ ने एक नाट्य मंडली बनाकर किसानों को नाटकों के द्वारा शिक्षित करने का बीड़ा उठाया। सबने केन्द्रीय सरकार द्वारा लागू किये कृषि सुधार कानून, और देहात में हैसियतवार दरजों के दस्तावेजों के अध्ययन करने का वायदा किया। इस बात की भी तैयारी की गई कि किसानों के लिए रात के स्कूल खोले जाँय जिनमें उन्हें वर्ग विश्लेषण का तरीका सिखाया जाये और उन्हें इस योग्य बनाया जाय कि वे भिन्न भिन्न दरजे के लोगों में और किसानों के अन्दर भिन्न हैसियत के लोगों में फरक करना समझें और ठीक से ये पता लगा सकें कि कौन वर्ग किस दर्जे तक शोषित है।

लूयाँग ने इन तमाम स्कूल मास्टरों की सम्मतियों को ध्यान से सुना और फिर उसने पिछली रात जो नोट लिये थे उन्हें तरतीब से लगाया। गांव के मुखिया की स्पीच उसे बड़ी महत्वपूर्ण लगी। अपनी नोटबुक में उसने किसानों के नाम दर्ज किये और इस बात की पूरी कोशिश की कि उनकी हैसियत के मुताबिक उनका सही सही वर्गीकरण रहे। इसके बाद उसने जमींदारों के नाम लिखे। उसने ऐसे जमींदारों के नामों के आगे खास निशान लगाये जो एक साथ ही उद्योग धंधों के मालिक भी थे या व्यापार भी करते थे और उन लोगों के बारे में पूछा जो रईस किसानों या छोटे जमींदारों की श्रेणी में आते थे। उसके दिमाग में बराबर तहसील कम्युनिस्ट पार्टी के सैक्रेटरी की एक हिदायत गूंज रही थी जो कार्यकर्त्ताओं की एक मीटिंग में दी गई थी:— "नये कार्यकर्त्ताओं की तलाश सबसे गरीब तबके में करो। ऐसी जगह देखो जहाँ सबसे ज्यादा शोषण हुआ हो और जहाँ लोगों को सबसे कठिन परिश्रम करना पड़ता हो; और जमींदारों पर पूरी नजर रखो।"

वह जानता था कि ये दोनों बातें एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। जमींदारों पर पूरी नजर नहीं रखी जा सकती जब तक कि किसानों को जाग्रत न कर दिया जाय।

तीन

आंसुओं के बाद मुस्कराहट

पैंग ऐरहू के भाग जाने और उसके भाई यिनतिंग की गिरफ्तारी के बाद से पैंग परिवार का वह मकान जो हमेशा गुलजार रहा करता था आज उजड़े हुए चमन की उदासीन शकल अख्तियार कर चुका था। उसके करीब करीब सभी छोटे पूरे २२ कमरों में मंडल सरकार ने ताला लगा दिया था। एक कमरे में हथियारों का ढेर मिला था। उसके दरवाजे को कीलें ठोक कर बन्द कर दिया गया था। इस सारे अहाते में लगातार एकसी बेसुरी आवाज में बजने वाले मत्स्य ढोल की आवाज गूंजती थी जिसे पैंग ऐरहू की पत्नी बौद्ध पोशाक में, आंखें बन्द किये हुए बजाती थी। कोई ताज्जुब नहीं छोटी नौकरानी युलिऐन इस घर में काम करती हुई यह महसूस कर रही है कि वह किसी शमशान के अन्दर है। फू चुआन खोया खोया सा रहता और अपने मालिक के हुकम सुन नहीं पाता।

पिछले दो तीन दिन से गाँव में डुग्गी पिट रही थी और ऐलान हो रहा था फिर भी फू चुआन और युलिऐन 'शमशान' में ही पड़े थे। पिछले चन्द दिनों में होने वाले परिवर्तन का युलिऐन पर बड़ा असर पड़ा। एक नैतिक समस्या उसके दिमाग में चक्कर काट रही थी। पैंगऐरहू एक निर्दयी पशु है जिसने इस प्रकार अपनी पत्नी को छोड़ दिया है।

इधर फू चुश्रान अपनी पाँच बीघा जमीन के बारे में सोच में पड़ा था जो उसके मालिक ने उसे इनाम के तौर पर दी थी। उसने सोचा, 'क्या वह जमीन भी कृषि सुधार के दौरान में बंटा ली जायगी।'

२८ नवम्बर की शाम को फू चुश्रान प नी की बालटियां भरकर लाया ही था कि उसने कार्यदल के साथी लू को रसोई घर के सामने ही उसके इन्तजार में खड़े पाया। एक बारगी फू चुश्रान को ऐसा लगा कि कोई वर्दीधारी आदमी शायद दूसरी गिरफ्तारी करने आया हो।

साथी लू ने मुस्कराते हुए पूछा, "फू चुश्रान ! तुम कुल कितनी बाल्टी भरकर लाये हो?" उसने इस लहजे में यह सवाल किया मानो वे पुराने दोस्त हों। उसकी बोली में आत्मीयता और मिठास था। फू चुश्रान पशोपेश में तो था लेकिन अब उसे कुछ दिलजमई होती जा रही थी और परेशानी कम हो गई थी।

"आजकल हम तीन व्यक्ति यहाँ रह गये हैं इसलिए सिर्फ पांच छै बालटियों से काम चल जाता है।" फु चुश्रान ने बाल्टी में से रस्सी का फंदा खोलते हुए कहा।

"तुम्हें पानी भरने कितनी दूर जाना पड़ता है?" साथी लू ने फू चुश्रान को बालटी उठाने में मदद करते हुए फिर पूछा।

"यहां से करीब एक मील दूर....झरने से। वहाँ बहता हुआ पानी है जो लिऐन शिश्राँग में जाता है।" अब फुचुश्रान को कुछ हिम्मत बंध गई थी। उसने अपना सर उठाया और उस अजनबी व्यक्ति की ओर गौर से देखा। रोशनी काफी मद्धिम थी और उसने झपकती हुई पलकों से कई बार लू यॉंग को सर से पैर तक देखा।

"एक मील?" लूयाँग ने ताज्जुब भरी नजर डाली। "आजादी से पहिले तुम्हें कितनी बालटी हर रोज लानी पड़ती थीं?"

"आजादी से पहिले?....तब चार खेत मजूर थे, एक मैनेजर था, एक रसोइया था और बहुत से महमानों का तांता लगा रहता था।

कलक्टर, दरोगा और न जाने कौन कौन ? आम तौर पर दस आदमी।" उसे उन तश्तरियों की तादाद ठीक से याद थी जो उसे रसोई घर में साफ करनी पड़ती थीं।

"वह बड़ा कठिन समय था, चौदह या कभी कभी सोलह, एक साथ दो-दो बाल्टीमुझे लानी पड़ती थीं।" फू चुआन ने आह भरते हुये कहा। तब उसने सोचा उसे कुछ पानी गरम कर लेना चाहिये। एक बर्तन में पानी करके वह एक कोने में रक्खी हुई लकड़ियों के ढेर में से कुछ लकड़ी जलाने के लिये निकाल कर लाया।

"इसका मतलब हुआ सात या आठ चक्कर, और हर मर्तबा एक मील" लू यॉंग ने हिसाब लगाते हुए कहा, "इस प्रकार तुम्हें पानी लाने के लिए सात मील रोजाना चलना पड़ता था। क्या तुम्हें कुछ और काम भी करने पड़ते थे ?"

"अरे बहुतेरे !" अब उसका काम इतना हलका हो गया है यह उसे चमत्कार लग रहा था। "मुझे मवेशियों को दाना रातब खिलाना पड़ता था और एक विदेशी नस्ल के कुत्ते के खाने पीने का इन्तजाम करना पड़ता था। मुझे खाद फैलानी पड़ती थी और कुछ खेत भी जोतना पड़ता था।"

"तुम्हें कुल कितनी जमीन पर काम करना पड़ता था ?" जलती हुई लकड़ी में से यकायक उचट कर एक तिलंगा फूचुआन के चहरे पर जा लगा जिससे वह चौंककर उठती हुई लौ की तरफ गौर से देखने लगा। फिर उसने जमीन के अलग अलग टुकड़ों को जोड़कर हिसाब लगाया और बताया "चार बीघा"।

लूयांग ने खेत में काम करने वालों के साथ कई तरह के श्रम में हिस्सा बंटाया था मगर खुद कभी खेत नहीं जोता था इस लिये उसे चार बीघा जमीन की देखभाल एक आदमी के लिये बहुत ज्यादा काम लगा। उसे जोतना, खाद देना फिर बोना तब कहीं काटना पड़ता है। प्रशंसात्मक सहानुभति के भावों से उसने फूचुआन के छरहरे बदन की ओर ताका।

"हमें हिसाब लगाना चाहिये," लू यांग ने तेजी से उँगलियों पर गिनते हुये कहा, "इससे करीब ४० मन अनाज पैदा होगा, है न?"

"अच्छी फसल हुई तो।" बर्तन में से अब भाप निकलना शुरू हो गई थी। फू चुआन अपने लिए एक मुढ़िया ले आया और अपने पैर धोने बैठ गया। "लेकिन नदी का कोई भरोसा नहीं है, बाढ़ के दौरान में अगर तुम २५ मन अनाज निकाल लो तो अपने को भाग्यशाली समझना।"

"इसमें से पैंग ऐरहू तुम्हें कितना देता था?"

"यह भी फसल पर निर्भर करता था।" फू चुआन ने हाथ पैर रगड़ने की आवाज करते हुये जवाब दिया। "कभी चार मन कभी दो या तीन मन। मैं जब तक बीस साल का नहीं हो गया कभी पूरी मजदूरी नहीं पाई।"

"सिर्फ चार मन, क्या कहते हो तुम?" क्रोधित लूयाँग चूल्हे पर से कूद गया, "अच्छा बताओ भला, क्या कभी लगान वसूल करते समय भी उसने फसल का ध्यान रखा?" उसने आवेश में पूछा।

इस सवाल से फू चुआन अवाक् रह गया। न जाने क्यों इस तरह का विचार उसके दिमाग में कभी आया ही न था।

लू याँग पूछता ही गया "तुम उसके यहाँ कब से काम कर रहे हो?"

मैं छै साल का था जब मैंने गायें चराने का काम शुरू किया था।" उसके हृदय में बड़ी कड़वी स्मृतियाँ जाग उठीं। "फिर मैं इधर उधर के ऐसे ही बेगारी काम करता रहा। जब मैं १४ साल का था मेरे पिता की मौत हो गई और मैं मुस्तकिल तौर पर एक खेत मजूर बन गया और आज मैं २४ साल का हूँ।"

"तुम चौबीस साल के हो! लूयाँग ने फिर दोहराया, "तब तो तुम्हारी शादी हो जानी चाहिये।"

"मैं कोई खास हुनर नहीं जानता। मैं कैसे उसका भार उठा सकता हूं?" फूचुआन ने दर्दभरी आवाज में कहा।

"क्या कहा ? कोई हुनर नहीं आता ?" असहमति प्रगट करते हुये लू यांग ने कहा। उसने एक पैर चूल्हे के पास जमीन पर पटका और दोनों हाथ कमर पर रखते हुए बोला—तुम हर रोज १४ या १६ बालटियाँ पानी की भरकर लाते रहे, सात मील का चक्कर काटते रहे, मवेशियों और सूगरों को खिलाते रहे और चार बीघा जमीन जोतते रहे जिसकी सालाना उपज चालीस मन होती है और फिर भी तुम कहते हो तुम्हारे अन्दर कोई हुनर नहीं है ?"

"भैया, हुनर भी नहीं है और तकदीर भी अच्छी नहीं है।" फूचुआन कुछ अस्पष्ट तौर पर सोचने लगा कि वास्तव में उसको काम के अनुसार उसका हक नहीं मिलता रहा है। "हमारे मालिक (जमीदार पैंग) को ले लो। वे लिख पढ़ सकते हैं और हिसाब किताब जानते हैं तभी तो वे तमाम साल बगैर अपनी दहलीज से बाहर कदम रक्खे ही भरपेट खाने पीने को प्राप्त कर लेते हैं।"

"मेरे भाई। तुम असल में बेवकूफ हो।" लूयांग ने कटुता और सहानुभूति के मिश्रित लहजे में कहा। उसने फूचुआन के पैरों की ओर देखा ज़िन्होंने इतना कठिन परिश्रम बरदाश्त किया था कि वे मिट्टी के निरन्तर सम्पर्क से जगह जगह फट गये थे और उनमें नीली नसें सिसकती लग रही थीं।

"यह किसी 'हुनर' या 'तकदीर' की बदौलत नहीं था जैसा कि तुम समझते हो। जमीन की मिल्कियत और जमींदारी के असरात का यह चमत्कार था। वह तुम्हारा शोषण कर रहा था।"

"शोषण ?" इस तरह का शब्द फूचुआन की समझ से परे था।

"हां शोषण। खुली लूट भी और खामोश जेब कटी भी।" उपयुक्त भावावेश में लूयांग ने यह शब्द कहे। "अब तुम्हीं जरा सोचो।" तुम जब अपनी महनत से ४० मन अनाज पैदा करते थे वह तुम्हें ४ मन देता था। इसका अर्थ हुआ कि उसने तुम्हारे ३६ मन अनाज का शोषण किया। तुमने उसके लिए १८ साल काम किया। मानलो तुम्हें हर साल चार मन अनाज मिला यद्यपि तुम्हें अक्सर इससे कम

ही मिला होगा तो भी ६४८ मन अनाज उसने तुम्हारी बदौलत पाया, यह तुम्हारी महनत का शोषण है।"

"लेकिन," फूचुआन ने झिझकते हुए कहा, "जमीन तो उसीं की थी।"

"दर असल ? अच्छा बताओ। पहले पहिल यह जमीन उसके पास कहाँ से आई ?" इस बात पर फूचुआन और लूयाँग दोनों एक साथ उठ कर खड़े हो गये।

"यह जमीन इनके बाबा इनके लिये छोड़ गये थे, बड़े और छोटे दोनों पैंगों को अपना अपना हिस्सा मिला।" फूचुआन पैंग परिवार की ओर लेने की कोशिश कर रहा था लेकिन वह अपनी इस भावना को जबरदस्ती दबा रहा था कि उसके साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया गया।

"अच्छा भला बताओ तो सही। उनके बाबा के पास यह जमीन कहां से आई ?" लू याँग की आवाज में दृढ़ता और तीखापन झलक रहा था। फूचुआन के लिए यह सवाल जवाब अब बूते से बाहर होते जा रहे थे।

"अरे भई ! मान्चू राज के दिनों में उनके बाबा एक मजिस्ट्रेट थे।" फूचूआन सिर्फ इतना ही उत्तर दे सका।

"तुम बिल्कुल ठीक कहते हो।" ऐसा लग रहा था मानों यह जबाब लू याँग की दलीलों की और भी पुष्टि करने वाला था। "और मजिस्ट्रेट को सबसे ज्यादा मुहब्बत की चीज रुपयों की खनखनाहट है ? पैंग ऐरहू के बाबा ने तुम्हारे बाबा से रुपया ऐंठा और उस रुपये से जमीन खरीदी ताकि फिर तुम्हारा और भी शोषण किया जाय।"

फूचुआन बिलकुल अवाक रह गया। ऐसा लगा मानो उसका सर किसी भीगी तौलिया से लपेटा गया हो। चूल्हे के सहारे झुक कर उसने इस समस्या पर गौर किया और देर तक इसी स्थिति में—सोच में—बैठा रहा।

उसी शाम को लूयाँग अपना लिहाफ लेकर वापिस आ गया। फू चुआन बड़ी खुशी से उसके वहाँ ठहरने पर राजी होगया और

उन दोनों ने रात का अधिकाँश आपस में दिल खोल कर बातें करने में गुजारा दोनों पास पास एक छोटे से बाँस वाले बिस्तरे पर लेटे।

अब लूयांग फूचुआन के बड़े भाई के मानिंद था जिससे वह अपने दिल की सब बातें बेखटके कह देता था। जब फूचुआन ६ साल का था उसकी माँ को, जो सात माह से गर्भवती थी, पैंगऐरहू की पत्नी ने, सीढ़ी चढ़ कर टाँड़ पर से ईंधन लाने का हुक्म दिया था। उसका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ी। नतीजा यह हुआ कि हमल गिर गया और दो दिन की तीव्र वेदना के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसके पिता की भी मृत्यु ऐसे ही एक दुर्घटना से हुई। वे पैंग ऐरहू के लिये एक बार जब अनाज ला रहे थे तो रास्ते में जापानियों से मुठ-भेड़ हो गई। जापानियों ने उन्हें सैविन स्टार स्लोप के पास खन्दक में कत्ल कर दिया और गल्ला लेकर भाग गये।

बातचीत के दौरान में फूचुआन ने बड़ी होशियारी से वह सवाल पेश किया जो अरसे से उसे परेशान कर रहा था। "क्या खेत मजूर को जमीदार द्वारा दी गई जमीन भी बांट ली जायगी?"

"प्यारे छोटे भाई!" लू याँग ने कहा "मुझसे यह मत कहो कि पैंग ऐरहू ने तुम्हें कोई जमीन दी है।"

"हाँ सचमुच, पूरे पाँच बीघे।" पूरी ईमानदारी से मंजूर करते हुये भोले फूचुआन ने कहा।

"अच्छा कल्पना करो" लू याँग ने अपना लिहाफ आगे बढ़ाते हुए अपनी बात जारी रखी, "मेरे पास जो लिहाफ है वास्तव में तुम्हारा था और मैंने उसे ताकत के जरिये तुमसे छीन लिया। अब अगर यह जानते हुए कि तुम इसे वापिस चाहते हो, मैं तुम्हें इसमें से कुछ रुई निकाल कर तुमसे कहूँ, 'लो मैं तुम्हें यह देता हूँ, तो क्या तुम मेरे प्रति कृतज्ञता प्रगट करोगे?"

"हरगिज नहीं।" कुछ दिन पहले पैंगऐरहू ने उससे जो दस्तखत करवाये थे, वह बात उसके दिमाग में घूम गई।

लूयांग तकिये का सहारा लेते हुए फू चुआन की ओर मुड़कर बोला, "पैंग ऐरहू की जमीन तो अरसा हुआ, उसकी नहीं रही।

वह तो उसकी है जो उसे जोतता है। तुम खेती सुधार का क्या अर्थ समझते हो? क्या इसका यह मंशा नहीं है कि किसान को उसकी जमीन वापिस मिले? तुम फू चुआन! सब किसानों में सबसे पहला हक रखते हो जमीन पाने का, चूँकि तुम सबसे ज्यादा गरीब, शोषित और महनती हो। जब जमीन का बंटवारा होगा, तुम्हारी तरह के ऐसे लोगों का सबसे पहले ध्यान रखा जायगा जिनके पास एक इंच जमीन भी नहीं है। पांच बीघा! यह तो तुम्हारे लिये शुरूआत है मेरे भोले राजा।"

इस पर फू चुआन उठकर बैठ कर गया। अब उसकी आँखों में आँसू झलक आये और वह पैंगऐरहू को कोस रहा था—"ओफ वह हरामजादा? उसने मुझे बेवकूफ बनाया है। मैं उसके पास जाता हूं और अभी सब वापिस मांगता हूं।" वह यह भूल गया कि पैंग ऐरहू बहुत दूर चला गया है। वह अपने कपड़े पहिन कर अभी उस नामाकूल की तलाश में जाने की सोचने लगा।

"क्या वापिस मांगोगे?" लूयांग ने उत्सुकता से पूछा।

"वह कागज का पुरजा," पहली मर्तबा फूचुआन को यह राज़ बताने का इरादा हुआ। पैंगऐरहू ने मुझे एक दस्तावेज दिया, जिसके लिये मुझे कोई कीमत नहीं अदा करनी पड़ी—लेकिन उसने उस कागज पर मेरी अंगूठा निशानी लेकर यह तसदीक कराई है कि जब चांगकाई शेक वापिस आयगा तो वह जमीन उसे वापिस करनी होगी।"

"धत्तेरे की! शैतान की दुम कहीं का।" एक बारगी लूयांग भी अचम्भे में पड़ गया पर उसने फूचुआन को फिर झकझोरा और सांत्वना भरे शब्दों में कहा :—

"तुम चिन्ता मत करो। चांगकाई शेक कभी वापिस नहीं आयेगा। लेकिन फिर भी इससे यह जरूर पता चलता है कि एक जमींदार का दिल किस मिट्टी का बना होता है।"

दूसरे रोज सुबह जब युलिऐन रसोई में से पानी लेने आई तो फूचुआन ने उसे पिछली रात को हुई सब बातें बताईं और दोनों ने तै किया कि शाम के खाने के बाद वे साथ साथ सिनवू के घर चलेंगे।

(★) (★) (★) (★)

उस शाम को सिनवू के दोनों जीर्णप्राय कमरे मानों चारों ओर फटे पड़ रहे थे। पगली बूढ़ी माँ ली, फूचुआन, चचा कुआंगलिन आदि दसियों आदमी वहाँ जमा हुए। उस भीड़ में आखीर में शामिल होने वालों में युलिऐन थी। स्कौलर चुयाओ सिऐन भी हमेशा की तरह अपने आपको तीसमारखाँ साबित करने को लालायित था। उसने जब सुना कि यहाँ साथी लू ने एक मीटिंग बुलाई है तो वह भी चल दिया! पर सिनवू ने उसे रास्ते में रोका और व्यंग पूर्ण चोट करते हुये कहा, "आज हम इस बात पर परामर्श कर रहे हैं कि पैंग ऐरहू को जिन्दा कैसे पकड़ा जाय। तुम तो फिर आना जब उसे पकड़ चुकें।"

जब सब कोई आ चुके तो मीटिंग शुरू हुई और सिनवू ने शुरूआत की।

"पैंगऐरहू ने तो मुझे तोप के मुँह में बारूद की भांति झुकवा ही दिया था" सिनवू ने कहना शुरू किया "और अगर कम्युनिस्ट न आयें तो शमशान भूमि में मेरी राख ही नजर आती। हम पर शुरू में पाँच बीघा जमीन थी। हमारे घर में दो नौजवान थे। मैं और मेरा भाई। हम सिर्फ दो ही भाई थे फिर भी तीन मर्तबा हमारी बेदखली हुई। १६३८ में बेदखल होने वालों में मेरा भाई भी एक था। पैंग येनतिंग उन दिनों गाँव का मुखिया था और उसने मेरे भाई के लाम-पर जाने पर जोर दिया। पटवारी रोज आता और मुझ पर दबाव डालता। रात को वह आकर दूसरी तरह कहता, 'थोड़े से रुपयों में काम चल जायगा।' गरज यह कि हमको २०० रुपयों के इन्तजाम करने में तीन बीघा जमीन बेच देनी

तब कहीं अपने भाई की जगह किसी दूसरे को भेजने का

मुआवजा चुका पाये। जब वह मेरे भाई के गले में इस तरह का फन्दा डालने की कोशिश में थे, पैंगऐरहू ने बगैर तनख्वाह के मुझे अपना यहाँ काम पर लगा लिया। उसने यह धमकी दी कि वह मेरे भाई को बुलवा कर दबाव डलवा देगा। इस प्रकार मुझे उसके यहाँ दो महीने काम करना पड़ा।

अधिक दिन नहीं बीते थे कि फिर मेरे भाई का लाम पर जाने का नम्बर आ गया। गाँव के दफ्तर में तकदीर की गोलियाँ कैसे फैंकी जाती थीं यह एक चमत्कार पूर्ण रहस्य ही था। हमेशा गरीबों का ही नम्बर आता था। पास में ही रहने वाले बड़े घराने-जैसे लोपी जंग जिसके चार हट्टे कट्टे लड़के थे—हमेशा अछूते ही रहते थे। लीचाओ चू के तीनों लड़कों का भी नम्बर नहीं आया, लेकिन पगली बूढ़ी माँ के इकलौते बेटे का सबसे पहिले नाम आया। १९४५ में पैंगऐरहू गाँव का मुखिया बना। उस समय मेरे परिवार पर एक बिस्वा जमीन भी बाकी नहीं बची थी। इसलिये जब मेरे पास लड़ाई के चन्दे का तलब नामा आया, मेरे पास देने को कुछ भी नहीं था। इस पर मुझे एक रस्सी के टुकड़े से बाँध कर ले जाया गया।

"इससे पहिले कि मैं बन्दूक चलाना सीखूं, मुझे कुमिनतांग की पिचहत्तरवीं डिवीजन में भरती कर दिया गया और सबसे पहिली बात जो मैंने जानी वह यह थी कि मैं मोर्चे पर भेज दिया गया हूं। दर हकीकत उस समय मुझे यह अनुभव नहीं था कि कम्युनिस्ट लोग हम किसानों के लिये लड़ रहे हैं लेकिन फिर भी ऐसे लोगों के खिलाफ पूरी शक्ति से लड़ना जिनसे हमारी कोई दुश्मनी न हो मुश्किल ही होता है। पहला मौका सिनान में आया। हम लोग अपने आगे वाली फौज के पीछे हटने के मुताबिक बगैर एक भी गोली चलाये पीछे को हट आये। दूसरा समय मुकदेन में पड़ा। उस उल्लू के पट्ठे, कुमिन्तांग कमाण्डर चैन चैंग ने हम सिपाहियों को आग में झोंक दिया। एक गोली मेरी बगल में यहाँ लगी" उसने अपनी पसुली दिखाई। "यह गरमी के दिन थे। तीन

दिन तक मैं पेड़ के नीचे दर्द के मारे चीखता रहा, मैं अधमरा हो गया था और मेरा जख्म और भी बिगड़ता जा रहा था। सौभाग्य से कुमिन्तांग फौज के ताजिये जल्दी ही ठण्डे हो गये। आजाद चीन फौज के दो अर्दलियों ने मुझे देख लिया और वे मुझे मोर्चे के साथ वाले हस्पताल में ले आये। तब वह गोली निकाली गई और मेरे जख्म की तीमारदारी हुई। जब मैं अस्पताल में ही था, उन्होंने मुझे लिखना पढ़ना सिखाया। तब मेरी समझ में आया कि इनक्लाब क्यों जरूरी है और कुमिन्तांगी क्यों बुरे हैं।"

"जब मेरा घाव पुर गया तो मैंने फिर मोर्चे पर भेजे जाने की प्रार्थना की पर इस बार कुमिन्तांगी प्रतिक्रियावादियों से भिड़ने के लिये। मेरे बहुत से पुराने साथियों ने ऐसा ही किया था। वे मेरी देखभाल के लिये एक डाक्टर ले आये जिसने बताया कि मैं अभी मोर्चे पर काम करने के अयोग्य हूं चूंकि मैं बहुत खून खो चुका हूँ। इसलिये मैं मोर्चे के पीछे और और काम करता रहा। इसके बाद मैंने उस फौज के साथ जाने की इच्छा प्रगट की जो हैनान टापू को आजाद करने जा रही थी। लेकिन उन्होंने फिर भारी जांच पड़ताल की और अन्त में फैसला किया कि मुझे सम्मान पूर्वक छुट्टी दे दी जाय और नागरिक जीवन व्यतीत करने की सुविधा दे दी जाय।"

यहां सिनवू ने अपने प्रमाण पत्र दिखलाये।

"पीकिंग छोड़ते समय मेरे साथ ट्रेन में और भी कई साथी थे। रास्ते में हर स्टेशन पर हमें लोग मिलते रहे। हमारे बिदा होते वक्त हम में से हरेक को एक एक जोड़ी जूते और मोजे, एक सूट और ५०० यूनिट अनाज के बराबर रुपया दिया गया—इस हिसाब से कि फौज में हमने कितनी साल काम किया।"

इससे पहिले कि सिनवू अपना कहना समाप्त करे, पगली बूढ़ी माँ यकायक धाड़ें मार कर रोने लगी। 'काश तेहमिंग भी इस प्रकार वापिस आजाता, नये जूते, नये मोजे और नये सूट के साथ।'

सिसकियां भरते हुए और अपनी बैसाखी के सहारे ऊंचे उठते हुए उसने कहा :— "मैं बूढ़ी हो गई हूँ पर मैं भी अपनी राम कहानी सुनाना चाहती हूं। मुझे अभी तक यह भी नहीं मालूम कि मेरे इकलौते बेटे तेहमिंग को कहाँ दफनाया गया है लेकिन मैं यह खूब समझती हूं कि पैंग ऐरहू ही इस सब के लिये जिम्मेदार है। मेरे चार बेटियां और दो बेटे थे। अब सिर्फ एक बेटी चुनसिंग बची है। ये सब इसलिये नहीं मर गये हैं कि मैं बच्चों का पालन पोषन करना नहीं जानती। इनमें चार तो भूख और सर्दी के कारण मर गये। एक बार तो मेरे पास पैदा हुए बच्चे को लपेटने के लिये कपड़े का एक भी टुकड़ा नहीं था। उस नवजात शिशु का बदन ढकने के लिये पड़ोसियों ने कुछ भूसा उधार दिया था।"

"मैं कोई काहिल की तरह बैठी भी नहीं रही, मैं पूरे बारहों महीने जमींदार के लिये काम करती रही और उसका नतीजा मिला—सिर्फ बरबादी। मैं कैसे तन्दुरुस्त रह सकती थी जब मुझे खाने भर को पर्याप्त नहीं मिला। इसमें कोई ताज्जुब नहीं होना चाहिये कि मेरी छाती ढीली और सूखी हो गई; और मेरे बच्चे एक के बाद एक मरते गये। तीसरे बच्चे का तो मैंने अपने हाथ से गला घोंट दिया चूंकि अपने ही खून और मांस के अंश को मैं तड़प तड़प कर मरते नहीं देख सकती थी।"

इस बार वह बहुत जोर से रोने लगी। "लेकिन एक अरसे तक घिसट घिसट कर मौत देखने के बजाय यह देखना कुछ आसान ही था। अन्त में मैंने अपने पास केवल एक लड़का और एक लड़की पाये। और इसके बाद नरपिशाच पैंगऐरहू आया जो मेरे १६ साल के तेहमिंग को भी छीन ले गया। वह तेहमिंग जिसको मैंने उधार माँग मांगकर जो थोड़ा बहुत चावल पाया उससे पाला था हम दोनों मां बेटियों को अकेला छोड़कर चला गया और फिर कभी वापिस नहीं आया.......।"

बूढ़ी मां अब बड़ी दर्दभरी हिचकियां ले रही थी। सिनवू की गर्भवती पत्नी ने उसे बैठाने और साँस दिलाने की कोशिश की मगर नहीं, उसे अभी और कहना था।

"मेरी पूरी ५३ साल की जिन्दगी में एक दिन भी खुशी का नहीं बीता। मैं सिर्फ दो साल की थी जब मेरी माँ मर गई थी और आठ साल की उम्र में मुझे बाल ग्रहिणी बना दिया गया था। पहिले तो मेरी सास मुझे बहुत पीटा करती थी, फिर जब मैं जमीदार के यहाँ काम पर जाने लगी तो जमीदार की पत्नी भी मुझे पीटती थी। हर साल तीन महीने तक मुझे सिर्फ जंगली सब्जियों पर गुजारा करना पड़ता था; और साल में छै महीने मेरा खाना सिर्फ सूखे आलू होते थे। जहाँ तक गोश्त और चिकनाई का सवाल है मुझे साल साल भर इन पदार्थों की गन्ध भी नहीं लगती थी।

"बीस साल के कठिन परिश्रम के बाद मैंने और मेरे पति ने बमुश्किल तमाम इतना बचा लिया कि हम दलदली जमीन के चार बीघा खरीद सके। लीसान सीधा सच्चा और योग्य पुरुष था परन्तु स्वास्थ्य का बहुत अच्छा नहीं था। एक बार गरमी के मौसम में वह जमीदार का रहँट (पानी का पहिया) चला रहा था कि यकायक गश खाकर गिर पड़ा। जमीदार ने इस बात पर ध्यान देना भी अपनी शान के खिलाफ समझा और मुझे उसकी दवा दारू के प्रबन्ध में एक बीघा जमीन बेचनी पड़ी। इसके बाद जापानी आये। वह अफीमची पैंग यिनतिंग उन्हें मदद कर रहा था और मजबूत आदमियों को उनके काम के लिये भरती करने में दबाव डाल रहा था। उसी ने दिमाग लड़ाया कि लीसान रसद पहुंचाने और खाइयाँ खुदवाने का काम अच्छा कर सकता है। एक दिन न जाने क्यों उसे बुरी तरह पिटवाया गया और मेरा मालिक लीसान बिचारा किसी तरह घिड़रता घिड़रता घर तक आया। उसके कपड़े खून से सन रहे थे। बाद में उसके घावों में मवाद पड़ गया और उनमें

खून बहने लगा। मैंने एक बीघा जमीन और बेच दी लेकिन इस बार उसे कोई नहीं बचा सका। चुनसिंग उसकी मौत के समय सिर्फ सात साल की थी। ली सान को अच्छी तरह दफनाने के लिए मुझे अपनी जमीन का तीसरा बीघा भी बेचना पड़ा।

"अब हम दोनों माँ और बेटी के लिए सिर्फ एक बीघा जमीन पर गुजर करना बड़ा मुश्किल पड़ रहा था। दूसरी साल फसल देर से हुई और हमको लो पी जंग से एक मन चावल और दो मन गुड़ उधार लेकर किसी तरह अपना काम चलाना पड़ा। दो महीने बाद उसने मुझे बताया कि अब मुझे उसे जितना रुपया मय ब्याज के चुकाना है वह मूल से बीस गुना है। और इस तरह मेरी जमीन का आखिरी बीघा भी मुझ से छीन लिया गया।

"चुनसिंग मेरे साथ लगातार तीन साल तक भीख मांगती रही, और हमारा कभी भी यह निश्चित नहीं था कि अगली घड़ी का खाना कहाँ नसीब होगा। अन्त में मैं और अधिक बरदाश्त न कर सकी और मैंने चुनसिंग को बालग्रहणी के रूप में दे दिया। मैं स्वयं बालग्रहणी रह चुकी थी इसलिये इसका अर्थ भी खूब समझती थी। सिनवू भैया! मेरे भी सीने में दिल है। मैं निरी पागल नहीं हूँ। मैंने इतनी जबर्दस्त चोटें खाईं हैं और वेदनाऐं सहीं हैं जिन्हें आज तक सुनने वाला मुझे कोई नहीं मिला था।"

लूयांग तेजी से बोल पड़ा "बूढ़ी माँ अब कोई तुम्हें पगली बुढ़िया नहीं कहेगा। वास्तव में तुम पागल नहीं हो। देखो!" दूसरों की सहूलियत के लिये लूयांग उंगलियों पर गिनते हुए कहने लगा, "बाल ग्रहणी के रूप में तुम पर जुल्म हुए। इसका मतलब था कि तुम्हें सामन्ती व्यवस्था का शिकार होना पड़ा। एक ओर तो जमींदार ने तुम्हारे पति का शोषण किया और दूसरी ओर विदेशी साम्राज्यवाद ने उसे मार दिया। यह दुतरफी मार ही हम सब किसानों को भुगतनी पड़ी है और यही दो हमारे मुख्य दुश्मन रहे हैं। पैंग यिनतिंग और लोपी जंग दोनों अब हवालात में है। पैंगऐरहू

जैसे दूसरे पाजियों का भी हम यही हाल करने वाले हैं। यही हमारा काम है और हम सबको इसमें सहयोग करना चाहिये। इस काम में सरकार हमारी सहायता अवश्य करेगी।"

"क्या मैं सच नहीं कह रहा हूँ?" कुछ अलंकृत भाषा में लूयांग ने पूछा—

कमरे में बैठे हुए मर्द औरत बच्चे बूढ़ों सभी ने एक आवाज में कहा—'इसमें एक एक शब्द सही है।' युलिऐन और तु यू चैन (वह लड़की जो चूयाओ सिऐन के मकान में दाई का काम करती थी) दोनों एक दम रोने लगीं। तु यू चैन मीटिंग भर बैठी रहीं और अपनी सास के बार बार अनुरोध करने पर भी नहीं उठी।

"लेकिन" लूयाँग ने यह देखकर कि सब लोग उसकी बातों से सहमत हैं अपनी बात जारी रखते हुए कहा "आपका काम है कि अब सब हिम्मत करें और देखें कि सबके साथ न्याय होता है। आप सब दुष्ट जमीदारों को जानते हैं और आपके पास उनके पुराने जुल्मों के चश्मदीद गवाह भी मौजूद हैं। सरकार गवाहों को सजा नहीं देगी इसलिये जिस किसी के पास भी ऐसे सबूत हों जो मौके पर लाभदायक हों उन्हें उस समय लाना चाहिए।"

इसके बाद चू कुआँग लिन जो सहज में अपनी उँगली से दाढ़ी छुए हुए था, बोला :—

"मैं बूढ़ा हूं इसलिए मुझे लोपी जंग से बहुत बहुत पुराने किस्सों का निपटारा करना है। हुआनकुलिंग के पास मेरी एक तीन कमरों वाली मढ़ैया थी और तीन बीघा दलदली जमीन थी जो मैंने हू पिनसान से लगान पर ली थी। यह १६३६ की बात है। तब यकायक हू के दिमाग में शहर में धन्धा करने की बात आई और उसने अपनी गाँव की जायदाद—मेरी तीन बीघा जमीन समेत लोपीजंग को बेच डाली। जब जमीन की मिल्कियत बेच डाली तो हू पिनसान ने मुझे गारंटी दी थी कि मेरी पट्टेदारी पाँच साल तक बरकरार रहेगी।

"अब आप मेरे आश्चर्य की सीमा का अन्दाज लगाइये जब लोपी जंग ने अपने सौदे की लिखा पढ़ी पूरी होते ही मुझे बुला भेजा और तीन शर्तें रक्खीं वर्ना उसने कहा वह जमीन छीन लेगा।

वे शर्तें थीं :—(१) लगान में ३० फीसदी बढ़ोतरी हो।

(२) तीन साल तक मैं उसकी पहाड़ियों पर से लकड़ी नहीं काट सकूँगा;

(३) मैं उसके तालाब में मछलियाँ नहीं रखूँगा।

"इन बातों को सुनकर मैं एक बारगी धक रह गया लेकिन मैंने अपने को सम्हालते हुए उससे कुछ महरबानी की भीख माँगी। मैं बहुत देर तक गिड़गिड़ाता रहा पर उसने बड़े सहज भाव से किसी ग्रंथ के निम्न शब्द सुनाए, 'जिन लोगों को शर्तें नापसंद हैं उनके जाने के लिए रास्ता खुला हुआ है।'

"मैं उस समय ऐसा पागल हो रहा था कि एक बारगी मन में आया मैं उससे वहीं भुगत लूं। होगा सो देखा जायगा। पर मेरे परिवार के लोगों और अन्य पड़ोसियों ने समझाया, "तुम्हारा और उसका क्या मुकाबला ? उससे झगड़ने में क्या फायदा होगा ? क्या एक छोटी सी ककड़ी का चाकू से लड़ने की हिम्मत करने को कोई अकलमंदी कहेगा ?"

जब कुमिनतॉंग सरकार वापिस आई, उनका '२५ फी सदी लगान कमी का नारा' संतोष प्रद था। पर मैं बेवकूफ था जो मैंने उस वायदे पर इतमीनान किया। यह तो अभी बता ही चुका हूँ कि जमींदार लोपी जंग ने मेरे सामने कठिन शर्तें रखदी थीं। दर असल मुझे बहुत जल्दी ही २५ फीसदी का बकाया भी अदा करना पड़ा।

उसके हाथों मुझे कितनी यातनायें सहनी पड़ीं वह सब यहाँ गिनाना असम्भव है। मैंने सिर्फ थोड़ी सी जमीन उससे लगान पर ली थी लेकिन सारी व्यवस्था ऐसी थी कि मैं अनुभव करता था कि मेरी जिन्दगी भी अपनी नहीं है।"

इस समय तक युलिऐन की आँखें आँसुओं से भरी और लाल हो गई थीं। लू याँग ने उसे दरवाजे पर से जहाँ वह खड़ी थी हटा कर भीतर किया और अपनी शिकायतें बयान करने को तैयार किया।

"कहो कहो, सबको बताओ नई मालकिन तुम्हें कैसे पीटती थी?" फूचुआन ने उसे कोहनी से धक्का देते हुए कहा।

युलिऐन मुंह बिल्कुल बन्द किए हुए कभी फूचुआन की ओर कभी दूसरों की ओर देख रही थी। उसके गालों पर आंसू लगातार ढुलक रहे थे और कोई भी व्यक्ति उन आँसुओं के पीछे जलते हुए क्रोध की लौ पहचान सकता था।

⊛ ⊛ ⊛ ⊛

इस प्रकार की जमीदार विरोधी सभायें लगातार पांच दिन हर शाम को होती रहीं। शुरू में ज्यादातर लोग पैंग चू के नगले में रहने वाले ही थे जो आते रहे। फिर बात फैली और दूसरे घरानों और बस्तियों से भी आने लगे। लूयांग हर ऐसी मीटिंग के बाद कुछ न कुछ समझाने और प्रोत्साहित करने की गरज से अवश्य कहते। तीखे और नग्न सत्य ने किसानों को साबित कर दिया कि कौन गाढ़े पसीने का श्रम करते हैं और कौन जौंक की तरह खून चूसते रहे हैं।

इन आरोप सभाओं में एक बात बारबार दुहराई जाती कि 'यह सब मेरी तकदीर का ही दोष है, मेरे भाग्य में यही लिखा था।'

लूयांग ने यह साबित करने के लिये कि ऐसा कहना बिल्कुल गलत है, सुधार दल के कार्यकर्त्ता चाओ ची मिन की मिसाल दी :—

"अधेड़ चाओ पहिले शांसी में किसान थे। वे भी इसी तरह कभी कहीं कभी कहीं महनत मजूरी किया करते थे और उनके पास एक चप्पा जमीन भी नहीं थी। लिखना पढ़ना तो कतई नहीं आता था। आजसे दस साल पहले जब जापानी दरिन्दों ने उत्तरी चीन पर हमला बोला तो आजाद चीन फौज ने जो उन दिनों आठवीं रूट

आर्मी कहलाती थी, उन्हें शांसी में पाया। आपको यह तो मालूम है कि आजाद चीन फौज जहाँ भी जाती है वहां विशेष तौर पर किसानों से कैसा व्यवहार करती है। उन्होंने चाओ ची मिन को पढ़ना सिखाया और समझाया कि किस प्रकार उनका शोषण किया गया है। इस तरह उन्हें जमींदार वर्ग के खिलाफ एक मुस्तैद लड़ाकू कार्यकर्त्ता बनने में मदद दी गई। बाद में उन्हें एक किसान सभा का अफसर चुना गया। उन्होंने अपना काम बड़ी दक्षता से किया और वे एक गाँव के सरपंच चुन लिये गये। बाद में वुताई एरिया बोर्ड के उपप्रधान चुन लिए गये।

"आज आप उन्हें देखें। वे अब लिख सकते हैं, पढ़ सकते हैं, भाषण दे सकते हैं और शासन प्रबन्ध भी कर सकते हैं। उनके परिवार को कुछ जमीन मिल गई है और वे आजकल यहाँ सार्वजनिक काम के लिए आये हुए हैं। मुझसे यह मत कहिये कि यह 'भाग्य' की बात है। अगर वह जो कुछ थे उस सबसे उदासीन हो जाते तो वह जरूर ज्योतिषियों की खुराफात का शिकार बन जाते।"

यह सब हो चुकने पर सिनलू गाँव के खेत मजूरों और गरीब किसानों की एक कमेटी बनाई गई। सिनवू सभापति चुने गये।

दूसरी शाम को सब पुरुष अपनी माताओं और पत्नियों को लाये और स्त्रियां अपनी सास और ननदों को लाईं। ये विचार लूयाँग का था। कई सासों को ये विचार अच्छा नहीं लगा। वे कुछ अनिच्छुक और भयभीत सी थीं।

मीटिंग में सबसे पहिले बूढ़ी माँ ली, तुयूचैन और श्रीमती पैंग सिन वू ने जमींदार वर्ग पर आरोप लगाना शुरू किया। इस बार युलिऐन भी बोली। उसने बताया कि किस प्रकार उसे जबरदस्ती उसके माँ बाप से छीन लाया गया चूँकि उसके परिवार पर पैंगऐरहू का दो मन अनाज उधार था। उसकी दर्दनाक कहानी

सुन कर कि किस प्रकार पैंगकी दोनों स्त्रियाँ उस पर जुल्म ढाता था— बहुतों की आँखें सहानुभूति से भर आईं।

सुंगलिऐन एक दस्तकार की पत्नी थी। उसने बताया किस प्रकार उसकी सास ने उसकी जिन्दगी दूभर कर रखी है। उसके बोल चुकने तक लू यॉंग ने इन्तजार किया फिर उसने समझाया।

"हमारे किसान वर्ग के अन्दर के आपसी झगड़ों को हमें जमीदार द्वारा शोषण के साथ गड़बड़ घोटाला नहीं करना चाहिये।

हजारों साल से जमीदारों ने हमारा खून चूसा है। इसमें एक भी अपवाद नहीं रहा है। इसलिये जमीदारी प्रथा को ही हमें जड़मूल से उखाड़ फैंकना है। जहां तक एक ही परिवार के सदस्यों का ताल्लुक है, यह सच है कि कुछ लोग अच्छे स्वभाव के होते हैं और कुछ लोग बुरे स्वभाव के। हम में से अधिकांश चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं चूँकि हमें जमीदारी शोषण के कारण बहुत सख्त जिन्दगी बितानी पड़ती है। आपसी ईर्षा द्वेष और झगड़े फसाद लाजिमी तौर पर उठ खड़े होंगे अगर लोग अपने दूसरे दिन के खाने के बारे में अनिश्चित रहेंगे।

इसलिये जब तक जमीन का उचित बटवारा न हो जाय सब्र करो। जब किसी को भी भूख की समस्या न रहे और जब सब स्त्री और पुरुष लिखना पढ़ना सीख जाँय तो देखना। जब खेती सुधार अमल में आ जाय तो न सिर्फ किसान धनी हो जावेंगे बल्कि उनका पारिवारिक जीवन भी मेल मुहब्बत में बीतेगा।"

सभी स्त्रियाँ खास तौर पर सासें इन बातों से बहुत प्रभावित हुईं। लू कहता गया—

"इसलिए पुरुषों और स्त्रियों सभी को चाहिए कि जमीदार वर्ग को मिटाने के संघर्ष में हिस्सा बटायें। न सिर्फ इसलिए कि आदमियों के साथ जमीन के बटवारे में औरतें भी हकदार हैं बल्कि इसलिए भी कि औरतें सारी दुनियां की आधी आबादी हैं। बगैर औरतों की मदद के जमीदार वर्ग नहीं पछाड़ा जा सकता। जब तक

यह प्रथा नहीं मिटाई जाती कोई भी किसान चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, चैन से सांस नहीं ले सकता।"

इस तरह की दो तीन मीटिंगें करने के बाद सिनलू गाँव की स्त्रियों ने अपनी एक कमेटी बनाली जिसकी प्रधान एक जोशीली नवयुवती लो शु मिन चुनी गई।

एक रोज, मीटिंग खतम हो जाने के बाद जब सब औरतें घर जा रही थीं, युलिऐन भीड़ में से अलग हट कर लू यॉग के पास आई। अपनी कमीज के अन्दर से उसने कुछ निकालते हुए लूयॉग का ध्यान आकर्षित किया और "देखो कामरेड" कहकर अच्छी तरह तह किया हुआ एक खत दिया। उसे देते हुए उसने बताया कि यह अभी अभी डाकिया दे गया है और अभी तक मालकिन ने इसे नहीं देखा है। फूचुआन ने मुझ से ऐसा ही करने को कहा।

लूयॉग कुछ समझ नहीं सका कि आखिर यह क्या मामला है? उसने लिफाफे की ओर देखा जिसमें लिखा हुआ था 'कृपया इसे मेरी पत्नी को दीजिये'। उसने यह भी गौर किया कि जहाँ भेजने वाले का नाम लिखा जाता है वहां लिखा हुआ था 'अन्दर पढ़ो।' उसने लिफाफा खोल लिया और उसमें रखा हुआ कागज निकाला। उसमें लिखा था।

'मैं आजकल शहर में चचा युन के यहां ठहरा हुआ हूं। सब दुरुस्त है चिन्ता मत करना।'

दस्तखतों की जगह लिखा हुआ था—

'जिसे तुम जानती हो उसकी ओर से'

लूयॉग के दिमाग में एक लहर आई। यह जरूर पैंग ऐरहू ही है। और कौन हो सकता है?

बगैर विलम्ब किये, लूयॉग ने फूचुआन को मन्दिर में बुला भेजा।

"क्या तुम्हें मालुम है कि पैंग ऐरहू के कोई चचा युन शहर में रहते हैं? लू ने पूछा।

सिवाल पर ध्यान देते हुए फूचुआन को यकायक याद आया कि एक बार जब वह पैंग ऐरहू का गल्ला शहर में बेचने गया था तो उसे कुछ बांस और मुर्गियाँ उसके एक चचा के घर लेजाकर देने को कहा गया था। वह जगह कहीं रेल के स्टेशन के पास थी। उसे याद आया, "वाँ शू पुल से अधिक दूर नहीं।"

"बहुत अच्छा! तैयार हो जाओ।" लूयाँगने फूचुआन से कहा, "तुम्हें बाहर जाना पड़ सकता है, इस बार बगैर लाठी और टोकरी के, लेकिन लौटते में हर हालत में पैंग ऐरहू को जिन्दा पकड़ कर लाओ।

चार

जहरीले दाँत तोड़ कर फैंकना

चुयाओसिन ने जब देखा कि खेत मजदूरों और गरीब किसानों का संगठन इस प्रकार मजबूत होता जा रहा है तो उसे बहुत बुरा लगा। उसे इससे खुटका पैदा हो गया चूंकि प्रारम्भिक जाँच पड़ताल में ही उसकी शुमार धनी किसानों में की गई थी। वह एक फीकी मुस्कुराहट के साथ कहता—"मैं ही तो था जो कातिक के लगान के बारे में शहर आया जाया करता था। ये कुपढ़ गंवार जानते ही क्या हैं, सिवाय गोबर थापने और घास खोदने के ?"

इस आरोप का मतलब बिल्कुल साफ था। वह यह कहना चाहता था कि बगैर उसके खेती सुधार के काम में सफलता नहीं मिलेगी। जाहिर है जब यह बात गरीब किसानों और खेत मजदूरों के कानों तक पहुंची तो वे बड़े नाराज हुये।

तु युचैन ने, जो चुयाओसिन के यहाँ दाई का काम करती थी, कहा—"मुझे मालूम है उसने कातिक के लगान में क्या किया था। वह एक नुमाइन्दा जरूर था पर उसने अपने नदी किनारे वाली ५ बीघा जमीन की रिपोर्ट न करके धोखा दिया और जितना लगान

उसे देना था उससे चार पाँच मन कम चुकाया। फिर भी उसकी इस तरह की बातें करने की जुर्रत है ?"

लोगों के दिमाग में यह बात अभी ताजा थी कि किस प्रकार चुयाओसिन "जनता की हकूमत" की तरफदारी करने का ढोल पीटा करता था। इन बातों को सोचकर सारी कमेटी को उस पर बेहद क्रोध आया। कुछ ने तो कहा, उसे फौरन गिरफ्तार कर लिया जाय।

"यह मत भूलिये कि हमारा असल दुश्मन पेंगऐरहू है न कि चु याओसिन।" लू यांग ने लोगों को समझाया, "चुयाओसिन की परेशानी महज यह है कि वह अपने ओछे द्वेष भाव को दबा नहीं पा रहा है। अगर वह वास्तव में हमारे कृषि सुधार के कार्य में रोड़ा बनकर खड़ा होगा, अफवाहें फैलायेगा या जायदाद का इधर उधर गड़बड़ करेगा तो बेशक हम उसे गिरफ्तार करेंगे।"

उस शाम को कमेटी में दो समस्याओं पर गौर हुआ। एक तो रक्षक दल के संगठन पर और दूसरे मझोले किसानों के साथ और भी गहरी एकता करने पर ताकि जमींदारों के खिलाफ संघर्ष में और व्यापक मोर्चा बन सके।

पिछले चन्द दिनों में लगभग ३० लोगों ने रक्षक दल में शामिल होने को अपने नाम लिखाये। जो लोग १८ साल से कम या ३० साल से ऊपर थे उनकी प्रार्थना मंजूर नहीं की गई। कायदे के मुताबिक तीस और साठ साल के दरमियान के लोगों को कृषि सुधार की समाप्ति पर ही शामिल किया जा सकता है। इसकी वजह यह है कि कृषि सुधार के दौरान में रक्षक दल वालों को बहुत परिश्रम करना पड़ता है जिसके लिए शारीरिक बल और सहन शक्ति की आवश्यकता है। खेत मजूरों और गरीब किसानों की कमेटी बन जाने के बाद कई मझोले किसान भी जिन्होंने जमींदारों की पोल खोलने में साहस दिखाया था इस संघर्ष में साथ आ गये। शुरू में इससे कुछ थोड़े से गरीब किसानों को यह डर पैदा हुआ

कि कहीं इन नये मेम्बरों के आ जाने का नतीजा उनको भविष्य में मिलने वाली ज़मीन की कटोतरी न हो।

पर लूयांग ने यह साफ कर दिया कि खेती सुधार का मतलब केवल जमीन के बंटवारे से ही नहीं है। इसका मंशा जमींदार वर्ग को जड़मूल से उखाड़ कर किसानों को राजनैतिक व आर्थिक आजादी दिलाना है और यह आजादी भी किसानों के लिये उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना जमीन का बंटवारा। इसे हासिल करने के लिये खेत मजूर और गरीब किसानों को मझोले किसानों के साथ काम करना चाहिये। बेशक इस संयुक्त मोर्चे की धुरी खेत मजूर और गरीब किसान ही बनेगा।

लेकिन इस संयुक्त मोर्चे में चुयाओसिन जैसे अमीर किसानों के लिये कोई जगह नहीं थी। मझोले किसानों को ज्यादा से ज्यादा तादाद में किसान सभा के मेम्बर होते देखकर उसे बड़ी व्याकुलता हो रही थी चूंकि उसे उसके बाहर रखा गया था। वह अब बड़ी अजीब अजीब बातें करने लगा।

मिसाल के तौर पर अपनी पत्नी को खाने के लिये कोई अच्छी चीज बनाने का आदेश देते हुये उसने कहा—"ऐसे जमाने में, यह बड़ी बेवकूफी होगी अगर हम जो कुछ भी पा सकें, न खायें। क्योंकि किसे मालूम है कब तीसरी लड़ाई छिड़ जाय और एटम बम फिक जाय ?"

उसे नहीं मालूम था कि उसके बिल्कुल पास रहने वाली एक स्त्री ने हाल ही में सही राजनैतिक ज्ञान की ओर कितनी प्रगति की है। तुयूचैन उस समय बच्चे को अपना दूध पिला रही थी। चुयाओसिन के मुंह से ऐसी बात सुनते ही वह एक दम आवेश में बोल उठी।

"इस तरह की बातें करना गलत है।"

"क्यों गलत है ? क्या मतलब है तुम्हारा ?" चुयाओसिन वास्तव में नहीं जानता था कि दुनिया कितनी बदल चुकी है। जरा गौर कीजिये तुयूचैन उससे किस लहजे में बात कर रही है।

"चूंकि तुम अफवाहें फैलाते हो।" यू चैन ने बड़ी दृढ़ता से कहा।

अब तो चुयाओ सिन के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने दुनियाँ भर की गाली गलौज बकते हुए जो कुछ यूचैन से कहा उसका सारांश यह था :—

"तुम यूचैन ! मेरी बदौलत यहाँ रहती हो, मैं तुम्हारा सब खर्च बर्दाश्त करता हूं, खाना कपड़ा देता हूं और तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मुझे अफवाहें फैलाने वाला कहो। बहुत अच्छा, निकल जाओ मेरे घर से !"

यूचैन बगैर एक भी शब्द कहे अपनी जाकट के बटन लगाती हुई चली गई। उसे मालूम था उसे कहाँ जाना है। उसे सिनवू और लूयाँग की तलाश थी।

दूसरे दिन फूचुआन और मण्डल किसान सभा के मन्त्री दोनों साथ साथ शहर गये। उनके साथ एक सरकारी खत था जो हुलिंग मण्डल सरकार की ओर से जनता की अदालत के नाम था। इसमें उन दोनों का परिचय और उनके वहाँ जाने का मंतव्य दिया गया था। दूसरा अभियोग पत्र था जिसमें पैंगऐरहू के जुर्म बताये गये थे। यह मंडल किसान सभा की ओर से लिखा गया था। उसका अन्तिम वाक्य यह था—'हम किसान, जनता की अदालत से अपील करते हैं कि वह न्याय का समुचित प्रबन्ध करे।'

फूचुआन और उसके साथी के चले जाने के थोड़ी देर बाद ही, सिनवू दो और रक्षक दल के साथियों को लेकर चुयाओ सिन को गिरफ्तार करने और उसे जिला अधिकारियों तक पहुंचाने चल दिया। दोपहर बाद करीब दो बजे वापिसी में सिनवू ने मंडल के अध्यक्ष को यह रिपोर्ट दी।

"मैंने जिला अधिकारी को चुयाओ सिन के आपत्तिजनक व्यवहार की बाबत सब बता दिया कि किस प्रकार उसने खेती सुधार के बारे में अफवाहें फैलाई और हम किसानों को बेचैन किय

'महरबानी करके उस पर नजर रखिए', मैंने कहा, और बगैर हमारी सलाह के उसे किसी की जमानत पर भी न छोड़िये।"

चुयाओसिन की पत्नी वास्तव में भयभीत होगई। अन्त में वह गांव के आठ भद्र लोगों की ओर से एक आवेदन पत्र लिखवा लाई। पत्र तो बाकायदे तैयार था पर अब कोई व्यक्तिगत तौर पर खुद उसे जिला अधिकारी के सामने पेश करे इस काम के लिये कोई भी भलामानस तैयार न हुआ। अन्त में पचास साला लोचाओ जिन इस सेवा के लिये तैयार हो गया।

वह गया और वापिस भी आ गया पर चुयाओ सिन उसके साथ नहीं था। उदासी से अपना सिर हिलाते हुये उसने चुयाओ सिन की पत्नी से कहा, "बड़ी भौजाई! जमानतदार की कुछ योग्यता भी होनी चाहिये। अच्छा हो तुम मेरा नाम उस फहरिस्त से काट दो। मेरे अन्दर कोई भी ऐसी योग्यता नहीं है। मैं तो समय समय पर कुछ रुपया किश्तों पर दिया करता था और उसकी ब्याज बहुत ज्यादा लेता था। मुझे नहीं मालूम किसान मेरे साथ कैसा सलूक करेंगे?"

इस पर दूसरे सातों जमानतदारों ने भी अपनी सहायता से इंकार कर दिया।

इतना हो चुकने के बाद चुयाओ सिन की पत्नी को ध्यान आया कि उसे गरीब किसानों और खेत मजूरों की कमेटी के सभापति पैंगसिनवू के पास जाना चाहिये जो खुद उसके पति को गिरफ्तार करने के बाद जिला अधिकारियों तक पहुंचा आया था। वह उसके घर गई और अन्दर पहुंचते ही उस आदमी के सामने घुटने टेक कर खड़ी हो गई जो आजादी से पहिले उसके यहाँ महनत मजूरी करने आता था। सिनवू ने उसे उठ खड़े होने में सहायता दी और कहा—तुम्हें इसके लिये तु यूचैन से बात करनी पड़ेगी।"

उस शाम को खेत मजूरों और गरीब किसानों की कमेटी में चुयाओसिन की समस्या पर खूब अच्छी तरह बहस हुई। उन्होंने इस बात पर परामर्श किया कि उसे किन शर्तों पर जमानत पर रिहा किया जा सकता है। सब लोगों की राय का आखिरी निचोड़ यह था :—

पहली बात तो यह कि वापिस लौटने पर चुयाओसिन को खुले आम पबलिक मीटिंग में अपनी गलतियाँ मंजूर करनी पड़ेंगी।

दूसरे उसे यह गारन्टी करनी होगी कि आइन्दा वह कभी भी इस किस्म की अफवाहें नहीं फैलायगा और किसी भी हालत में खेती सुधार कार्य को नुकसान नहीं पहुँचायगा।

तीसरे उसे वह भुगतान अब करना पड़ेगा जो उसने कातिक के लगान में धोखा देकर बचाया था। यूचैन ने यह सब विचार रखे थे और बाकी सब इससे सहमत थे।

तीन दिन बाद चुयाओसिन जेल से रिहा कर दिया गया। इन तीन दिन में वह काफी झटक गया था। उस शाम को आम सभा में, चु अब पुराने 'स्कौलर' चुयाओसिन नहीं मालूम होते थे। उसे जैसे सांप सूँघ गया हो। भरी सभा में उसने अपनी गलतियों की माफी माँगी और वादा किया कि अब वह कभी अफवाहें नहीं फैलायगा और न कोई ऐसा काम करेगा जिससे खेती सुधार को नुकसान पहुंचे। उसने यह भी कहा कि कातिक के लगान के बारे में सरकार को धोखा देने की बात सच है। अब वह मण्डल सरकार के पास जायगा और अपना हिसाब चुकता कर आयगा।

लो की बड़ी कोठी में एक प्राइमरी स्कूल का अध्यापक पैंग कूचांग पढ़ा रहा था जब उसने बाहर से एक आवाज सुनी 'पैंगऐरहू पकड़ा गया।' हाथ में से किताब पटकते हुए वह कमरे से बाहर उस किसान के पीछे भागा जो यह खबर जोर से चिल्ला कर बता रहा था।

"क्या यह सच है ?" उसने पूछा।

"एक एक अक्षर सत्य है जनाब।" उस किसान ने अभिमान से कहा, "मैंने खुद अपनी आँखों से शिह्मा मण्डल में देखा है। वह चारों ओर से रस्सियों से बंधा हुआ था और फूचुआन उसके पीछे पीछे चलता हुआ खीसें काढ़ रहा था। यह बात एक कान से दूसरे कान तक पहुंच रही थी।

जब पैंगएरहू जिला अधिकारियों तक पहुँचा दिया गया तो जन अदालत की दूसरी इलाकेवार शाखा ने फौरन यह तै किया कि हुलिंग मण्डल सरकार के दफ्तर में उसके मामले की खुले आम पेशी हो। जिला सरकार के अध्यक्ष शाओ सू चांग जज होंगे। साथ में आठ किसानों को जूरी का पार्ट अदा करने के लिये बुलाया गया। उनमें युलिऐन, फूचुआन और ली चैन नान भी शामिल थे। ली चैन नान, पैंग यिनतिंग के यहाँ खेत मजूर के तौर पर काम कर चुका था।

उस समय तक हुलिंग मण्डल रक्षकदल के पास बड़े अच्छे हथियारों का जमाव हो चुका था। ये हथियार थे—भाला और बरछी। यह सच है कि वे पुरानी किस्म के हथियार थे लेकिन दृढ़ प्रतिज्ञ किसानों के हाथ में उनकी तेज धार जमीदारों के रोंगटे खड़े कर देने को काफी थी। फिर इस रक्षक दल के पीछे गाँव के असंख्य किसान थे।

जनता की इस विशाल और अभेद्य शक्ति को देखकर तीनों जमीदारों ने छल कपट से अपना बचाव करना चाहा। उनके लिये यही कौन कम लज्जा की बात थी कि उनके सामने जूरी बने हुए वे खेत मजूर बैठे थे जिन्होंने उनके यहाँ महनत मजूरी की थी और वे नौकरानियां थीं जो उनका हुक्का भरती थीं और जो उनके घर बर्तन मलती थीं। इन लोगों के सामने कुछ आरोप तो उन्हें सच्चे मानने ही पड़े।

मिसाल के तौर पर पैंगयिनतिंग ने यह मंजूर किया कि उसने जापानियों के लिये ८० बोरे ताँबे के सिक्के इकट्ठे किये थे क्योंकि

ली चैननान जो इन सब बातों का गवाह था वहाँ मौजूद था। उसके आगे उसे झूँठ बोलने की हिम्मत नहीं पड़ी। ली चैन नान ही तो था जिसे कुछ बोरे खुद ही ठेले में रखकर ले जाने पड़े थे। बाकी दूसरे किसानों की मदद से भिजवाये गये थे। एक और भी संगीन जुर्म उसके ऊपर लगाया गया था। वह था दो छापेमार लड़ाकुओं को पकड़वाने का। जापानियों ने उसी के सामने पुराने मन्दिर के आगे उन दोनों छापेमार सैनिकों का सिर धड़ से अलग किया था और वह खड़ा देखता रहा। बाद में उसने अपने जापानी मालिकों के हुकुम के मुताबिक उनके सिर बाँस के लट्ठों से लटकवा कर सेविन स्टार स्लोप के पास वाली खाई पर टंगवा दिये ताकि लोग तब तक उसे देखते रहें जब तक वह बिल्कुल सड़ न जायँ। और अन्त में पैंगयिनतिंग को एक और आरोप स्वीकार करना पड़ा। उसने यह माना कि 'सर्किल' नाम की संस्था का एक दफ्तर उसक मकान में भी था। लेकिन "बहुत अरसे से मेम्बर लोग तितर बितर हो गये हैं।" पहिले तो उसने इस बात को मानने से इन्कार कर दिया कि उसके पास कुछ हथियार हैं लेकिन 'सर्किल' के दो भूतपूर्व सदस्यों में एक बढ़ई और एक राज ने जिन्होंने उसके लिये एक गुप्त दुहेरी दीवाल बनाने में मदद दी थी, सबूत देकर सब भण्डा फोड़ कर दिया। दो, छै छर्रों वाली पिस्टल, एक रिवौल्वर ५०० कारतूस और एक भारी बक्स जिसमें जेवरात और दूसरे किस्म की बहुमूल्य वस्तुएं थीं उस गुप्त स्थान पर पाये गये।

अब लो पी जंग का मामला आया। उसने यह मंजूर किया कि आजादी से पहिले वह किसानों के साथ बड़ी सख्ती से पेश आता था। उसका दामाद कुमिंतांग की फौज में बैटेलियन कमाण्डर था और इसलिये वह समझता था कि उसे किसी से डरने की जरूरत नहीं है। कृषि सुधार कार्यदल के आने से कुछ ही दिनों पहिले वह पैंग बन्धुओं से मिला था। उसने यह भी बताया कि पैंगऐरहू ने उसके जरिये उस. कुमिनतांगी बैटेलियन कमाण्डर से

सम्पर्क करने की कई बार कोशिश की। उसने किसी के जरिये यह यह सूचना वहाँ तक भिजवाई भी, पर कोई नतीजा नहीं निकला और बाद में यह पता चला कि वह कैंटन में गिरफ्तार कर लिया गया है। अफवाहों के बारे में उसने यह मंजूर किया कि हो सकता है कुछ अफवाहें उसकी बातों से फैलीं हों पर उसने जान बूझ कर कोई अफवाह नहीं फैलाई।

पैंग ऐरहू शुरू शुरू में किसी भी आरोप को मंजूर करने के लिए तैयार नहीं था। अपने दोनों हाथ सीने पर रखे हुए उसने अवज्ञा पूर्वक ललकारते हुये कहा :—"कहा जाता है कि जनवादी सरकार बड़ी इंसाफ पसन्द है और वह किसी के साथ अन्याय नहीं करेगी। देखते हैं इसमें कितनी सचाई है।

जब फूचुआन ने वह झूठा दस्तावेज पेश किया तब तो थोड़ी देर के लिये उसकी हवाई उड़ने लगीं। उससे भी ज्यादा उसका बुरा हाल तब हुआ जब उसकी खाना तलाशी ली गई और उस पर फूचुआन के निशानी अंगूठा से लिखा हुआ एक बयान पाया गया जिसमें यह कहा गया था कि अगर च्यांगकाई शेक फिर वापिस आया तो 'यह जमीन उसके असली मालिक को वापिस कर दी जायगी।'

अब तो पैंग ऐरहू की बोली बन्द थी। इससे पहिले कि वह, अपने होश हवाश दुरुस्त करे, चारों ओर से उसके खिलाफ अभियोग लगना शुरू हो गये। एक ने उस पर यह आरोप लगाया कि जब वह गाँव का सरपंच था तो खाई की मरम्मत के लिए जो पंचायती रुपया था उसका दुरुपयोग किया और खा पी लिया। नतीजा यह है कि हर साल बाढ़ हमें परेशान करती है। बूढ़ी माँ ली की आवाज भी सुनाई दी "मेरा तेहमिंग! मुझे मेरा बेटा वापिस ला दो।" स्कूल मास्टर पैंगकूचांग ने लोगों का ध्यान खैंचते हुये कहा—"पैंगऐरहू! यह तो बताओ, भला तुम्हारे हाथों मेरे पिता की मौत कैसे हुई? मेरी बुआ ने मुझे आजादी से पहिले यह बात

कभी बताई ही नहीं कि उनकीमृत्यु के जिम्मेदार तुम हो! लेकिन अब भी पूरा ब्यौरा नहीं मालूम है। जरा बताओ तो!"

तीन अभियुक्त जमींदारों में से दो के हाथ खून से सने थे। पैंग यिन तिंग विदेशी साम्राज्यवादियों को मदद पहुंचाने का दोषी था, दो देशभक्त नौजवानों की मृत्यु का जिम्मेदार था और कृषिसुधार के दौरान में गड़बड़ी पैदा करने की नीयत से हथियार छिपाकर रखने का दोषी था। पैंग ऐरहू ने सन् १६२७ की महान क्रान्ति के दौरान में कई क्रांतिकारी कार्यकर्त्ताओं को जान से मरवा दिया था। जापान की हार के बाद उसने न सिर्फ कुमिनतांग को चंदा वसूल करने और तन्दुरुस्त लोगों को जबरदस्ती फौज में भरती के लिये मजबूर करने में बड़ी मदद की बल्कि कई और गन्दी और कमीनी हरकतें की थीं। उसने कृषि सुधार के दौरान में हथियार छिपाये और उसे असफल करने के लिये तरह तरह की झूँठी अफवाहें फैलाईं।

इन तीनों बंदियों की अपराध स्वीकृति और उस पर मुकामी अदालत की सिफारिशें टेलीफोन पर जिला अदालत को भेज दी गईं। शाम को टेलीफोन पर यह जबाव आया था।

"लोपी जंग ने आजादी से पहिले जो जुल्म किए हैं उनके बारे में किसान जब उससे अपना लेखा जोखा निपटें तब जरूर सब बातों पर गौर किया जाय। लेकिन चूँकि कृषि सुधार के दौरान में भी उसने अफवाहें फैलाईं, उसे उचित सजा मिलनी चाहिये। जिला अदालत ने जो पाँच साल कैद दी है, वह सजा इस तरह के अपराध को देखते हुये हलकी है। दूसरे जमीदारों को उचित चेतावनी देने के लिये, इसे और बढ़ा देनी चाहिये और यह अवधि कितनी हो यह जनता के अभियोगों पर निर्भर करनी चाहिये।

जहां तक पैंग बन्धुओं का सवाल है इस अदालत की राय में जिला अदालत द्वारा निश्चित मृत्युदण्ड सही है। फिर भी मृत्युदण्ड देने से पहिले जनता के फैसले के लिये एक आम सभा करना

जरूरी है जिससे सभी किसानों को अपनी अपनी शिकायतें कहने का अवसर मिल जाय और किसी की शिकायत बाद में न रहे। तब उन्हें वहीं सब की मौजूदगी में फाँसी दी जाय ताकि किसान अपने दिमाग से जमीदारों के डर का आखरी भूत भी निकाल दें और दूसरे जमीदारों को भी एक सामयिक चेतावनी मिल जाय।

⊛ ⊛ ⊛ ⊛

१७ दिसम्बर १६५०। आसमान में बादल छाये हुए थे। हुलिंग मण्डल के खेतों में पगडंडियों और रास्तों पर चारों ओर लाल झन्डियां नजर आरही थीं। किसान मर्द और औरतें एक बार फिर उस प्राचीन मन्दिर के सामने खुली आम सभा में एकत्रित होने आ रहे थे। चबूतरा फिर बनाया गया। उस पर दो चौखूटी मेजें रखदी गईं। मन्दिर के सामने रेलिंग के सहारे एक लम्बी तख्ती लटकाई गई जिस पर लिखा था 'सूबा जन अदालत की दूसरी इलाके वार शाखा।' खुले मुकदमे के लिये आम सभा।

करीब दस बजे जज महोदय अपने साथ १६ जूरी के सदस्यों को लिये हुए चबूतरे पर जा बैठे। उस समय उपस्थित जनता ने देर तक हर्ष सूचक करतल ध्वनि की। दो कार्यकर्त्ता मुकदमे की सारी कार्यवाही नोट करने के लिये वहाँ जा बैठे। राष्ट्रीय झंडा गायन से सभा शुरू हुई। सेविनस्टार प्राइमरी स्कूल के विद्यार्थियों ने झंडागायन में पहल की। बाकी सबने अपने हैट उतारे, झण्डे को सलामी दी और चेअरमैन माओ की तस्वीर के आगे श्रद्धापूर्वक सिर झुकाया।

जज ने खड़े होकर घोषणा की कि 'आज हम हुलिंग मण्डल के तीन अभियुक्त जमीदारों का फैसला करने जारहे हैं।'

इसके बाद तीनों मुजरिम हथकड़ियों में जकड़े बड़ी कठिनता से चबूतरे के एक ओर रखी हुई दो चौखूँटी मेजों पर चढ़े। रक्षक दल का एक जत्था और जिला सरकार के छै सिपाही बड़ी सावधानी से उनकी निगरानी कर रहे थे। सिपाही राइफिल और बन्दूकों से लैस थे। पैंग यिन तिंग लगातार काँप रहा था और उसका सिर नीचे

झुका हुआ था। लोपी जंग जब खड़ा हुआ तो उसका सिर सब लोगों के सामने एक दम से झुक गया। उसका चहरा बिलकुल पीला पड़ा हुआ था। पैंग ऐरहू का मुँह बिल्कुल बन्द था और वह अपनी बाहर को निकलती हुई जालिम आँखों से आगे बढ़ती हुई जनता को अवाक होकर घूर रहा था।

"हमने इन बदमाशों को पकड़ लिया है" जज ने कहना जारी रखा, "अगर इनके पर होते तो भी यह भाग के नहीं जा सकते थे। इसलिये आप लोगों को अब इनसे कतई डरने की आवश्यकता नहीं है। अब समय आगया है कि सब लोग जो बरसों से अपने दर्द और शिकायतें अपने दिलों में छिपाये हुए हैं यहां कहें, चाहे वह हत्या धोखाधड़ी, बलात्कार, बुरा बर्ताव किसी भी बात की हों। इस अदालत का आखिरी फैसला आप लोगों की गवाहियों और सम्मतियों पर निर्भर करेगा।"

सब से पहले चबूतरे पर पहुँच कर बोलने वालों में एक स्त्री थी जिसकी उम्र लगभग पचास साल थी।

"मेरा नाम पैंग शुमिन है", उसनेअपने सीने पर लगे हुए लाल बैज पर उँगली रखते हुए कहा। वह हुलिंग मण्डल की उन पहली स्त्रियों में से थी जो किसान सभा की मैम्बर बनीं। वह मंडल महिला सभा की प्रधान भी थी।

"मैं पैंग कू चांग की बुआ हूँ और मैं अपने तीसरे भाई पैंग चिआंग—जो पैंग कू चांग का पिता था—की ओर से पैंग ऐरहू पर इलजाम लगा रही हूं। १६२७ में पैंगचिआँग मुकामी किसान सभा का उपसभापति था। इस इलाके में जब कुमिनतांग प्रतिक्रियावादियों का आधिपत्य फिर होगया तो वह मुझे, अपनी पत्नी और ३ साल के अपने बच्चे पैंग कू चांग को लेकर पहाड़ियों पर चला आया और वहां पर वह लाल फौज में भरती हो गया। इस तरह बुड्ढा बाप घर पर अकेला रह गया।

पैंग ऐरहू ने हमारे मकान में देहात के 'विद्रोही तत्वों' का दमन करने के लिये फौज की एक टुकड़ी ठहरा रखी थी। उनको वहां जो कुछ भी मिला सब खा पी गये ; बहुत कुछ बर्बाद किया और जला दिया। यहीं तक बस नहीं था। वे शैतान मेरे पिता को ढकेल कर बाहर निकाल लाये जिनकी उम्र उस समय अस्सी साल की थी। उन्हें मन्दिर तक लाकर एक रस्सी से बांध दिया फिर खूब पीटा और उनकी पीठ को लातों से रौंदा। यह सब यातनाऐं इसलिये दी गईं ताकि मेरे पिता उन्हें किसान सभा के मेम्बरों की फहरिस्त दे दें। इस मारपीट से मेरे पिता की रीढ़ की हड्डी टूट गई। (यहाँ पर वह अपने क्रोध को रोक न सकी और उसने पैंगऐरहू के मुँह पर तमाचा मारा) पर मेरे पिता ने किसान सभा के मेम्बरों के नाम बताने से साफ इन्कार कर दिया जिसके लिए उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

उसी साल दिसम्बर के महीने में मेरे भाई ने यह सोचा कि वह भेष बदल कर जाय और अपने पिता के नये साल पर दर्शन करके वापिस आ जाय। इससे पहिले कि वह अपने घर में पैर रखे पैंग ऐरहू ने उसे पकड़ लिया। उसे कई बार घातक चोटें पहुंचाई गईं और फिर उसे तड़प तड़पकर मरने के लिये छोड़ दिया गया। उसकी मौत के बाद भी, हम लोगों की हिम्मत नहीं पड़ी कि हम उसकी लाश उठवा मंगायें। अन्त में हमें कुछ गाँव के आदमियों से प्रार्थना करनी पड़ी कि वे उसे एक बोरे में बन्द करके पहाड़ी के नीचे दफनाने के वास्ते पहुंचा दें। जब वे उसे कब्र में नीचे डाल रहे थे तो मैंने सिर्फ एक झलक अपने भाई की देखी। उसकी दसों उंगलियाँ बाँस के काँटों से बुरी तरह घायल थीं जो नाखूनों और गोश्त के बीच में चुभोये गये थे और उसके ऊपर और नीचे के सभी दाँत तोड़ दिये गये थे.........।"

इस समय तक वह फिर अपने आपको इतना बे काबू पा रही थी कि आगे कुछ न कह सकी। वह फिर उतर कर पैंगऐरहू को

तमांचा मारने पहुंची। पास में खड़े हुए रक्षक दल के लोगों की आँखों में आंसू झलक आये।

नीचे बैठी हुई जनता ने घूंसा तानते हुए बुलन्द आवाज में कहा, "प्रतिक्रियावादी जमीदारों का नाश हो! हमारी मांग है कि पैंगएरहू को गोली मार दी जाय।"

वहाँ खड़ी हुई पैंगशू मिन ने जो मानो जमीन से गढ़ी हुई हो, और बोलने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। उसे लगा जैसे उसके गले में कोई पत्थर अटक गया हो। अन्त में किसी तरह उसने इतने शब्द और कहे :—

"वैसे साधारणतया मुझे अपने मकान के आस पास घूमते किसी मुर्गी के बच्चे को भी जान से मारने में खुद मौत आती है लेकिन अब मैं अनुभव करती हूँ कि इस पैंगएरहू को तो मैं निहत्थे ही मार सकती हूँ।

उसके बाद एक नौजवान किसान आगे बढ़ा। जनता के आगे झुककर अभिवादन करते हुये उसने कहना शुरू किया।

"मेरा नाम तिऐन ई ची है और मैं शिचिआवो गांव से आया हूं। १६३६ में जब कुमिनतांग ने कम्युनिस्टों से सहयोग करने का ऐलान किया उस समय नई चौथी फौज जापानियों से लड़ने उत्तर की ओर गई और अपने पीछे एक जन सुरक्षा संगठन छोड़ गई जिसके नेता मेरे पिता बनाये गये थे। इस दल के जिम्मे यह काम था कि वह किसानों में से ऐसी छापेमार टुकड़ियाँ तैयार करे जो जापानियों से लड़ें।

"जनता को इस तरह हथियार बन्द और सुसंगठित होते देखकर पैंग यिनतिंग को अपने मुखियापन की फिकर पड़ी और घबराकर उसने कुमिनतांग के जनरल यांगसैन के आदमियों की एक पूरी पलटन मंगाली। सुरक्षा संगठन के दफ्तर पर २३ मार्च की रात को हमला बोल दिया गया। संगठन के सात कार्यकर्त्ता पकड़ लिये गये। बाद में उन्होंने किसी प्रकार पता लगाकर मेरे पिता को भी

पकड़ लिया। तब से आज तक मुझे उनकी कोई खबर नहीं लगी है।

"जापानियों के आने पर भी पैंगयिन तैंगके रुतबे पर कोई असर नहीं पड़ा। वह गाँव का मुखिया था और उसने एक क्षण के लिये अपनी वक्र दृष्टि हमारे परिवार से नहीं हटाई। बगैर कोई बहाना बताये उसने हमारा बैल हमसे छीन लिया। बात यहां तक पहुंची कि अब हम नाम बदल कर अपने घर से दूर रहने लगे और आजादी से पहिले हमने कभी घर वापिस जाने की हिम्मत न की। इस हरामजादे गद्दार के लिये मौत से कम कोई सजा होनी ही नहीं चाहिये।"

कागज की झण्डियाँ खड़खड़ा उठीं, और उस पूरे मजमे में चारों ओर तना हुआ मुक्का ही मुक्का दिखाई पड़ रहा था।

जनता का आवेश और भी ऊपर को बढ़ता गया जब फूचुआन और बूढ़ी माँ ली ने अपनी अपनी शिकायतों की पोटली खोली।

उनके बाद एक नौजवान किसान खड़ा हुआ। जनता के आगे सर झुकाते हुए उसने अपना परिचय दिया और कहा।

"मैं जमींदार लोपीजंग का भतीजा हूं। खेती सुधार कार्य दल के यहाँ आने से कुछ पहिले लोपीजंग ने मुझे अपनी कुछ सनदें दीं ताकि मैं उन्हें सैविन स्टार स्लोप के एक फोटोग्राफर की दुकान पर ले जाऊँ और उनकी फोटो कौपी करवा लाऊँ। लोपी जंग ने यह देते हुये कहा था—

"अगर असली सनदें जला भी दी गईं तो मेरे पास कुछ तो सबूत रहेगा।" उसने अपने दो बड़े सन्दूक भी मेरे मकान में ऊपर के कमरे में रखवा दिये हैं। पहिले तो इन बातों के बारे में मेरे सोचने का तरीका यह था—'आखिर तो वह मेरा चाचा है।' मेरे अन्दर उससे इंकार करने की हिम्मत भी नहीं थी। अब मैं महसूस करता हूं कि वह एक जमींदार है और मैं एक गरीब किसान हूं। उसे भर पेट मछली और मेरे परिवार को हमेशा सड़े आलुओं पर

ही सन्तोष करना पड़ा है। मैं बेवकूफ था। मैं कैसे चेअरमैन माओ को अपना मुंह दिखा सकता हूं अगर मैं फौरन ही मण्डल अधिकारियों को वे दो सन्दूक न सौंप दूं जो लोपीजंग ने मेरे पास हिफाजत के लिये रख दिये हैं।"

सारी भीड़ ने जोश में फिर एक नारा लगाया—

'उन मुजरिम जमींदारों का नाश हो जो अपनी दौलत और जायदाद छिपाते हैं।"

"किसानों की एकता जिन्दाबाद।"

बारिश शुरू होगई थी लेकिन वातावरण की उत्तेजना में जरा भी शिथिलता नहीं आई थी। एक स्त्री ने सुबकियाँ भरते हुये बताया कि किस प्रकार पैंगऐरहू ने उसकी १४ साल की लड़की के साथ बलात्कार किया था। ये तमाम आरोप जनता के बुलन्द नारों में डूब गये। कान फाड़ने वाली आवाजें सुनाई पड़ रही थी जो अध भीगे खेतों को गुंजायमान कर रही थीं :—

"पैंगऐरहू को मौत की सजा दी जाय"

"पैंगयिन तिंग को मौत की सजा दी जाय"

"लोपी जंग को उसके कारनामों का दण्ड दिया जाय"

"जब तक दोनों को गोली से मार नहीं दिया जाता हम घर नहीं जायेंगे।"

करीब चार बजे तक बीस से अधिक किसान अपनी अपनी शिकायतें कह चुके थे। जनता की भावना अपने पूरे उबाल पर आ चुकी थी। एक आशा प्रद उत्सुकता लिये हुए सब बैठे थे। घनघोर बरसा के बावजूद एक भी शख्स उठ कर नहीं गया और न कोई साया ढूँढ़ने की कोशिश की।

थोड़ी देर के लिए जज और जूरी इन मामलों पर फैसला करने के लिये मन्दिर के अन्दर चले गये थे। पूरी तौर पर गौर कर चुकने के बाद वे बाहर आये और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच अपनी जगह पर बैठे।

तीनों कैदियों के चहरों पर मुर्दनी छा रही थी। अब एक ओर झुककर जज का अन्तिम फैसला सुनने के लिए उन्होंने अपने कान खड़े किए।

"किसान साथियो" एक गम्भीर आवाज में जज ने कहा, "हमने अभी अभी यहाँ के किसानों द्वारा जमींदारों पर लगाए हुए आरोप सुने हैं। आरोपों से यह बात तो सबको साफ हो गई होगी कि किस प्रकार जमींदार वर्ग हमेशा किसानों के दुश्मनों से गठबन्धन करता रहा है—चाहे वह जापानी साम्राज्यवाद हो या कुमिन्ताँग—किसानों के शोषण में ये सब एक रहे हैं। इसी उद्देश्य से यह अमरीकी साम्राज्यवादियों के जूते चाटने को तैयार हैं चूंकि अमरीकी साम्राज्यवाद जनता के हितों के बिल्कुल विपरीत है।

इन तीन मुजरिम जमींदारों के बारे में हमारे ये फैसले हैं—

"लो पी जंग, उम्र ४० साल, सिनलू गाँव के रहने वाले पर यह आरोप है कि उसने अफवाहें फैलाई और अपनी दौलत जायदाद इधर-उधर गायब की। ये इस प्रकार के अभियोग हैं जिन्हें जनता सहन नहीं कर सकती। लो पी जंग ने न सिर्फ अपनी दौलत गायब की है बल्कि उसने अपनी सनदों की फोटो प्रतिलिपियाँ करवाई हैं जिसका मतलब है वह अब भी कुमिन्तांगी प्रतिक्रियावादियों का भरोसा किये हुए है। पूरी सावधानी से गौर करने के बाद सर्व सम्मति से जूरी ने सात साल कैद का फैसला किया है। आप सब सहमत हैं?"

सब लोगों ने बड़े जोर से हर्ष ध्वनि की। रक्षक दल के लोग लोपी जंग को, अस्थाई तौर पर हवालात में कैद करने के लिये मंदिर के अन्दर ले गये।

"पैंग थिनतिंग, उम्र ४६ साल, सिनलू गाँव का रहने वाला जापान विरोधी जंग के दौरान में देशभक्त नौजवानों को मरवाने का जिम्मेदार है। आजादी के बाद उसने अन्ध-विश्वास फैलाने वाली सोसाइटी कायम की और जनता को धोका देने के लिए अफवाहें

फैलाईं। उसने बन्दूकें और दूसरे ऐसे हथियार छिपाकर जनक्रान्ति का विरोध करने की साजिश की। उसके लिए मौत की सजा दी जाती है। क्या आप सहमत हैं?"

चबूतरे के नीचे से जो हर्षध्वनि हुई वह आकाश को गुंजाने वाली थी।

"पैंग ऐर हू उर्फ पैंग लिएन पाओ उम्र ४७ साल सिन लू गाँव का रहने वाला, १९२७ की महान क्रान्ति के समय एक कम्युनिस्ट विरोधी छापेमार दल और देहात में जन आन्दोलनों का दमन करने वाली फौज की एक टुकड़ी का नायक था। इन हैसियतों में उसने कई बार किसान संगठन तोड़े, किसान नेताओं को गिरफ्तार करवाया और जान से मरवाया। जापान की हार के बाद वह अपने भाई की जगह बेईमानी से गाँव का मुखिया बन गया और जबर्दस्ती कुमिंतांग के लिए चंदा वसूली और रंगरूटों की भरती कराने में जी जान से लगा रहा। इस तरह उसका नज़रिया हमेशा जन-विरोधी रहा। उसके खिलाफ खाई की मरम्मत का रुपया खा जाने का भी अभियोग है। उसके लिये भी मौत की सजा। क्या आप लोग सब सहमत हैं?"

इस घोषणा का स्वागत करते हुए जो हर्षध्वनि हुई वह और भी अधिक जोश से भरी हुई थी। रक्षक दल वालों ने अपने भाले ऊंचे उठाकर अपनी सहमति प्रगट की। लोगों की छुटपुट आवाजें गगनभेदी नारों के अन्दर दब गईं।

"शैतान जमींदार वर्ग का अंत हो!"

"जनता की सरकार जिन्दाबाद
जो किसानों के संघर्षों में उनका साथ देती है।"

इसके बाद पैंग यिन तिंग और पैंग ऐरहू को रक्षक दल और दूसरे सिपाही चबूतरे पर से ले चले। इनके जिम्मे इन दोनों को मौत की सजा देना था। जनता ने इनको जाने के लिए रास्ता छोड़ दिया। सिपाहियों के होते हुए भी पैंग ऐरहू को पासवाली जनता की भीड़ में से कुछ के थप्पड़ खाने पड़े।

अपने रोते हुए चहरे को पैंग यिन तिंग किसी तरह एक हाथ से हिफाजत कर रहा था। उसके हाँफते हुए मुँह में से अक्सर सुबकियां निकलती थीं। पैंग ऐरहू का चहरा राख की तरह काला हो रहा था और उसकी बाहर को निकली हुईं आखें पत्थर सी जड़ी हुई लग रही थीं। जब बूढ़ी मां ली पतले मुक्के को ताने हुए भीड़ चीरती हुई आई और उसके कन्धे पर चोट की तो वह एक बार फिर ऐसे घूमा जैसे कोई चारों ओर से घिरा हुआ जंगली जानवर हो। उसने खिसियाकर अपने दाँत निकाले। जब चारों ओर से बहुतेरे लोगों के आने की आशंका हुई तो सिपाहियों ने उन कैदियों को एक घेरे में डाल लिया ताकि वे थप्पड़ों और घूंसों से बच जाँय।

अब बहुत जोर से बारिश हो रही थी। मंदिर के अहाते से बाहर इतने सारे पेड़ भी नहीं थे जिनके नीचे सब आ सकें लेकिन फिर भी एक लगातार बहती हुई धारा की तरह आदमी और औरतें पीछा किये चले जा रहे थे मानों वे यह निश्चिय कर लेना चाहते हों कि एक भी कैदी छूट न जाय।

मन्दिर के दक्खिन में कबरिस्तान था। सिपाही उन कैदियों को वहाँ ले गये। इसके बाद पिछवाड़ से आठ नौ गोलियों के छूटने की आवाज आई। हुलिंग मंडल के उस घने कुहरे से ढके वातावरण में गोलियों की ककश आवाज गूँज गई। इंसाफ पाकर किसानों ने संतोष की साँस ली।

प्रतिक्रियावादी जमींदारों का नाश हो!

किसानों की आजादी जिन्दाबाद!

कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद!

चेअरमैन माओ जे तुंग जिन्दाबाद!

उस जनता ने जो पहली बार हर प्रकार के भय और आशंकाओं से मुक्त हुई थी, दुगने जोर से नारे लगाये। उनकी छाती में जो जहरीला छुरा भोंका हुआ था आखिरकार निकाल लिया गया निकलने में दर्द तो हुआ पर उसके साथ जिस आजादी की खुशी हासिल हुई उसका आस्वादन उन्होंने पहले कभी नहीं किया था।

पांच

लाल, पीला और सफेद

शाम होते होते बारिश समाप्त हो चुकी थी। दूसरे रोज सुबह एक नया हुलिंग मंडल पूरब दिशा सेउगते हुए सूर्यदेव का स्वागत कर रहा था। शांत बहने वाली पीजननदी के दोनों ओर लम्बी लम्बी घास पर बूंदें चमक रही थीं और टेलीफोन से टकराती हुई हलकी हवा एक मधुर गीत गा रही थी।

तालाब पर औरतें कपड़े धो रही थीं और मर्द अपनी पीठ पर झोली बाँधे घास काट रहे थे। कभी कभी उनमें से कोई उठ खड़ा होता, मन्दिर के दक्खिन में कबरिस्तान की ओर देखता और कहता, "अत्याचारी भी हमारी ही तरह हाड़ मांस के बने होते हैं और चंद गोलियाँ उन्हें दुनिया से बिदा करने के लिए काफी हैं। अरे पैंगयिन लिंग! अब तुम उठ कर हम पर क्यों नहीं गुर्राते? और तुम पैंग ऐरहू! अब तुम्हारी पुरानी शान और अकड़ कहां चली गई?

बहुत सदियों से फू चुआन और बूढ़ी मां ली जैसे व्यक्तियों को हमेशा झिड़कियां खानी पड़ीं हैं, अपमान और यातनायें, बगैर

उफ किए, सहनी पड़ी हैं। लेकिन आज अपने सामने दो जालिमों के अन्त होने से एक भरोसा पैदा हुआ औरइस प्रकार जमींदारों से भय का आखिरी भूत भी/सरसे उतर गया।

दिसम्बर की १८ तारीख थी। अब लूयाँग को किसानों पर जाने की जरूरत न रही। उलटे किसान उसकी तलाश में रहने लगे। इनमें से एक ने आकर सूचना दी कि किस प्रकार एक 'धनी परिवार' ने अपना 'प्यूटरवेअर' (कीमती बर्तन) तालाब में डुबो दिया है ताकि जब्त न हो सके। एक दूसरा किसान आया जो अपने साथ कुछ संदूक और पोटली लाया जो किसी जमीदार ने उसके पास कार्यदल के आने से पहले छिपाने के लिए रख दिये थे। उसने कहा "अब मैं समझ गया हूँ कि वास्तव में इन वस्तुओं के हमी मालिक हैं। अगर मैं जमीदारों और उनकी दौलत छिपाने के लिए जगह देता फिरूँगा तो जरूर मुझ पर कलंक लगेगा।"

लेकिन इन सब बातों से ज्यादा लूयाँग को जन रक्षक दल की भरती करने में व्यस्त रहना पड़ता था।

लीगार्डिन के एक खेत मजूर, लीता मिंग ने कहा, 'साथी लू, महरबानी करके मेरी पत्नी का नाम भी लिख लो, हम दोनों मिलकर रात में गश्त किया करेंगे।"

खुशी से उछलती हुई तु यू चैन कमरे में घुसी और बोली, "कामरेड लू। मेरी सास ने मुझे रक्षक दल में शामिल होने को कह दिया है।" तु यूचैन अपनी सास के विरोध के बावजूद भी रक्षक दल में भरती होना चाहती थी, तब लूयाँग ने उसे यह कह कर समझाया था कि ऐसा करने से सम्बन्ध अधिक खराब होंगे और दूसरी बाधाऐं बढ़ेंगी। उस समय उसे यही सलाह दी थी कि जब सब राजी हो जायँ तब आना। अब तु यूचैन की यह इच्छा पूरी हो रही थी। उसने लूयाँग को यह भी बताया कि उसने अपने पति से नाव खेने का काम छोड़ देने को कहा है और यहां आकर खेती करने की सलाह दी है।

चुनसिंग भी रक्षक दल में शामिल हो गई। यह एक बड़ी घटना थी। जब से वह महिला समिति की मैम्बर बनी थी उसने दृढ़ता पूर्वक लो की बड़ी कोठी में लौटने से इनकार कर दिया था। लो परिवार से उसने साफ कह दिया:—"हमेशा के लिए बाल दुलहिन की हालत में बने रहना असम्भव है। और अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें पिछले पांच साल का अपने खाने पीने का भुगतान करूँ तो मेरे पास यह जवाब है कि पहले तुम मुझे मेरे पाँच साल का महनताना चुका दो। मैंने सूअरों और दूसरे मवेशियों को खिलाया पिलाया है, रोजाना तीन औंस सूत काता है और सैकड़ों गज कपड़ा तुम्हारे लिए बुना है। मेरी मजदूरी मुझे दे दो और मैं तुम्हें अपने खाने पीने का सब चुका दूंगी।"

इस शानदार जवाब के लिए वह श्रीमती पैंग सिनवू के प्रति कृतज्ञ थी जिन्होंने इस तरह की हिदायतें दी थीं। जैसी कमोबेश उम्मीद थी, पहिले तो लो परिवार वालों ने दावा दायर करने की धमकी दी पर फिर बुद्धिमानी से काम लिया और खामोश होना बहतर समझा।

रक्षक दल के सभी मैम्बर गाँव के कार्यकर्त्ता थे और वे हर रात भाला लेकर जमीदारों पर निगरानी रखने के लिए गश्त करते थे। जब ड्यूटी से फुरसत पाते तो रात के स्कूल में जाते जहाँ यह सबक लेते कि किस प्रकार हैसियतवार दर्जों की छाँट की जाती है। यह स्कूल मंडल किसान सभा की ओर से चालू किया गया था और लो की बड़ी कोठी वाले प्राइमरी स्कूल में स्थित था। यहाँ पर किसान विद्यार्थी लम्बी बैंचों पर बैठ जाते। आसानी से क्लास भर जाता था। बूढ़ी माँ लो, फूचुआन, चुनसिंग, तुयूचैन ये सब नियमित रूप से क्लास में आते और पूरा मन लगाकर इस बुनियादी बात को सीखते जो कृषि सुधार के लिए बेहद जरूरी थी।

रात के इस स्कूल में लू यॉंग ने सबसे पहिले वर्ग विश्लेषण-- हैसियतवार दर्जों की छाँट-- का मंशा बताया। इससे किसानों और

जमींदारों के बीच, एक साफ साफ रेखा खींचने में आसानी होगी। उसने इस बात पर जोर दिया कि यह बात देहाती जीवन की काया पलट कर देने के लिए बहुत ही जरूरी है। वर्ग विश्लेषण का वास्तविक तरीका बताते हुए लू यॉंग ने कहा कि पहले तो हमें उसकी मोटी मोटी बातें समझनी चाहिए, फिर बारीकियों में पड़ना चाहिए। मिसाल के तौर पर उसने कहा कि एक धनी किसान और जमीदार में यह अन्तर होता है कि धनी किसान खुद भी श्रम करता है। धनी किसान और मझोले किसान का अन्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आया उसकी शोषण की आमदनी कुल आमदनी की चौथाई से अधिक है या नहीं। मझोला किसान मुख्यतया अपनी महनत से कमाई आमदनी पर निर्भर करता है और आम तौर पर दूसरों की मजूरी नहीं करता। जो लोग बहुत कम दूसरों का शोषण करते हैं और ऐसी आमदनी कुल आमदनी की पच्चीस फीसदी तक होती है उन्हें हम अच्छे खाते पीते मझोले किसान कहेंगे। गरीब किसान वे लोग हैं जिन्हें अपना खेत जोतना पड़ता है और कभी कभी अपनी श्रम शक्ति भी बेचनी पड़ती है यानी दूसरों के यहां महनत मजूरी भी करनी पड़ती है। खेतिहर मजदूर वे लोग हैं जिनके पास न तो जमीन है और न हल बैल हैं। इन्हें अपनी रोजी के लिये अपनी श्रमशक्ति बेचनी पड़ती है अथवा दूसरों की मजदूरी करनी पड़ती है।"

अब किसान सभा के प्रधान और गाँव के मुखिया की मदद से किसानों ने सिनलू गाँव के तीन नगलों में से कुछ जमीदार और धनी किसानों को छांटा और एक एक के मामले पर विचार किया।

जब रात के स्कूल में वर्ग विश्लेषण करना सिखाया जा रहा था, खेत मजूरों और गरीब किसानों की कमेटी ने अपनी अब तक की सीख के आधार पर तजुर्बे के लिये एक फहरिस्त बनाई जिसमें लोगों की दर्जेवार छाँट की गई। इस कमेटी के नेता पैंग सिन वू फौज छोड़ने के बाद शहर में तीन महीने तक कृषि सुधार की ट्रेनिंग पा चुके थे। इसलिये इस विश्लेषण में उन्होंने दूसरों की रहनुमाई की।

शुरुआत बड़े परिवारों से ही की गई। वर्ग विश्लेषण करते समय, उन्हें ऐसी सम्बन्धित समस्याओं पर भी गौर करने का अवसर मिला जो हर जमीदार या धनी किसान के बारे में यह बताती थीं कि उनके मजदूरों की हालत कैसी है, किस हद तक शोषण किया जाता है, १६४६ से १६४६ तक कितने मजदूरों से काम लिया गया और वे सूद दर सूद रुपया बनाने में कितने माहिर हैं।

लो की बड़ी कोठी में एक स्त्री रहती थी। उसका मामला आया। उसके एक छै साल का बेटा था। उसका पति पहिले कुमिनतांग की फौज में बटेलिअन कमांडर था पर १६४५ से उसकी कोई खबर नहीं मिली थी और वह रुपया भी उधार देती थी। फूचुआन और लीता मिंग दोनों ने उसे जमीदार की श्रेणी में रखने की राय दी।

सिनवू ने पूछा, "ऐसा क्यों?" फूचुआन ने जवाब दिया, "चूँकि उसने कभी महनत नहीं की। और यही नहीं, उसके पति ने प्रतिक्रिया वादियों का साथ दिया। जमीदार नहीं तो और क्या कहेंगे हम उसे?"

लोकी बड़ी कोठी में बाल दुलहिन के रूप में रहने और तजुरबा पाने के कारण चुनसिंग भी अपनी राय देने की हकदार थी। उसने भी अपनी यही राय दी। अपनी राय के सबूत में उसने यह और कहा कि वह औरत ओछे स्वभाव की है।

सिनवू ने बड़ी नरमी से समझाने की कोशिश की।

"वर्ग विश्लेषण करते समय हमारा खास ध्यान शोषण की मिकदार पर होना चाहिये। राजनैतिक पृष्ठभूमि और हैसियत वार दर्जे ये दो अलग चीजें हैं। इनमें घोटाला नहीं करना चाहिये और व्यक्तिगत पसन्दगी और नापसन्दगी से तो इस बात से कोई मतलब है ही नहीं। ऐसी बात नहीं है कि वह वास्तव में क्रान्ति विरोधी हो। अगर ऐसा होता तो वह जरूर पकड़ी गई होती। असल में उसके परिवार में श्रम शक्ति नहीं है और जो जमीन बटाई पर देती है वह बहुत मामूली है। इसलिये उसका सही दर्जा एक 'मामूली जमीदार' है। 'मामूली जमीदार' की श्रेणी में

इनकलाबी सैनिक, शहीदों के वारिस (आसरतू), मजदूर, स्कूल मास्टर, सरकारी कर्मचारी, दूसरे पेशों में काम करने वाले, फेरी-वाले आदि ऐसे लोग आते हैं जो मामूली जमीन बटाई पर उठाते है चूंकि या तो वे दूसरे पेशों में लगे हुए हैं या खुद श्रम शक्ति के अयोग्य हैं। ऐसे लोगों को 'मामूली जमीदार' की श्रेणी में रखा गया है।

✪ ✪ ✪ ✪

करीब दस रोज यह होता रहा। सिनलू गांव के बहुत से किसान कार्यकर्त्ता वर्ग विश्लेषण के तरीकों को अच्छी तरह समझ गये। गरीब किसानों और खेत मज़दूरों की कमेटी ने मुकामी जमीदारों और धनी किसानों की एक फहरिस्त बनाकर किसान सभा के पास मुआइने के लिये भेजी। दो दिन तक उसे अच्छी तरह जाँचा गया ताकि कहीं ग़लती से कोई धनी किसान ज़मीदार की श्रेणी में न लिख जाय इसके बाद पहली आम सभा मन्दिर के भीतर बड़े हौल में बुलाई गई।

एक रोज़ पहिले उन तमाम लोगों को जो ज़मीदार करार दिये गये थे, किसान सभा ने सूचना दे दी थी कि वे ठीक आठ बजे सुबह पहुँच जाँय और नाम दर्ज करावें। मीटिंग की जगह पर बड़ी सादगी थी। एक चौकोर मेज़ और माओ की तस्वीर के नीचे कुछ बैंचें रखदी गई थीं। जमीदारों के आने से पहिले ही हौल किसानों से भर चुका था। तु यू चैन का भूतपूर्व-नाविक पति खुशी खुशी उस भीड़ में अपना रास्ता निकालते हुए आया था। उसकी गोदी में एक तन्दुरुस्त बच्चा था। उसने कहा जब मुझे ज़मीन मिलने का नम्बर आवे तो बाहर से बुला लेना मैं यहीं मटरगश्ती करता मिलूंगा।

जब जमीदार लोग भी वहाँ आगये, तो लोगों ने देखा कि जनरक्षक दल की एक टुकड़ी इनके साथ है जिनमें फूचुआन लीतामिंग और चुनसिंग हैं। अपने हाथों में भाले लिये वे चुस्त और

सतर्क हैं। इसके विपरीत जमींदारों की हालत रहम के काबिल थी। उनमें से कुछ अपने साथ अपने हाथ सेकने के लिये बाँस की टोकरी में बालू के अन्दर सिलगते हुए अंगारे लाये थे।

करीब ८॥ बजे गांव के मुखिया किसान सभा के प्रधान और ग्राम पंचायत के मंत्री अपनी बगल में फाइलें, बहीखाते, बस्ता आदि लेकर चौकोर मेज़ के पास बैठे। लू यॉग ने खड़े होकर मीटिंग को व्यवस्थित किया।

उसने कहा :—"आज हमारा सिनलू गाँव अपने यहाँ का वर्ग विश्लेषण शुरू करेगा। हम करीब १५ दिनों से इसी बारे में सलाह मशविरा और तैयारियाँ कर रहे थे। अब जो लोग उधर खड़े हैं उन्हें हम जमींदार मान लेते हैं। जाहिर है, हमारी यह धारणा मजबूत और ठोस तथ्यों से पुख्ता होगी। हम उन्हीं की जबानी उनकी आर्थिक हालत पूछने से कार्यवाही शुरू करते हैं। ध्यान रहे, हम पूरी पूरी ईमानदारी चाहते हैं। अगर किसी को कहीं भी झूठ या फरेब मालूम हो, बगैर हिचक के उनके सामने ही बता दें। बेशक उन्हें भी अपनी बात कहने का पूरा हक होगा और उन्हें पूरा मौका मिलेगा अगर वे हमारे फैसले को अन्याय साबित करना चाहेंगे।"

सब से पहिले ली चाओ चू खड़ा हुआ। वह नार्मल स्कूल चांग शाओ में पढ़ा होने के कारण एक शिक्षित व्यक्ति समझा जाता था और उसने बड़ी सावधानी से खेती सुधार कानून की हर धारा पढ़ी थी—खास तौर पर इसी मीटिंग की तैयारी में····। वह हलका नीला कोट पहने हुए था और छोटा चमकीला चहरा फैल्ट हैट के कारण आधा ढक गया था। अपने गाल और ठोड़ी को सर्दी से बचाने के लिये उसने हैट के नीचे एक सफेद तौलिया लगा ली थी। अपनी माली हालत की एक हलकी रूप रेखा खींचते हुये उसने किसानों की ओर एक उपेक्षा भरी नजर डाली और व्यंग भरे लहजे में बोला, "अगर मुझे जमींदार बताना चाहो तो बता दो

तुम्हारी मरजी ! पर यह बात मत भूलना कि मैं उन काहिलों में से नहीं हूं जो दूसरों का बोया काट लेते हैं। मैं भी महनत करता हूँ। इसलिये अगर कानून के मुताबिक चलना है तब तो मुझे धनी किसानों की श्रेणी में रखा जाना चाहिये।"

"आपने किस तरह का श्रम किया है जरा बताइये तो ?" अपने गुस्से को दबाते हुए लीतामिंग ने पूछा। उसने ली चाओ ची के यहाँ पाँच साल तक खेत मजूरी की थी।

"जब खेतों में जोरों से काम हो रहा था तो क्या मैं भी सूरज निकलने से पहिले ही बिस्तर नहीं छोड़ देता था ?" ली चाओ ची ने जवाब दिया।"

"जरूर !" आवेश में लीतामिंग उठ खड़ा हुआ और लीचाओ चू की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा :—"आप, हम खेत मजदूरों को डांटने डपटने के लिए बिस्तरे से उठकर आते थे, ताकि हम कड़ी महनत करें। इसके बाद फिर बिस्तरे पर वापिस चले जाते थे। काफी देर बाद जब तक मैं छै बालटियां पानी की खींचकर ले आता था, आपको खुर्राटे लेते हुए सुनता था।"

अब ली चाओची का कांइयाँपन ढीला हो गया था और वह घबड़ा कर बोला, "लेकिन मैं धूप और बारिश में भी खेत पर जाता था। अगर यह सब महनत नहीं है तो क्या है ?"

"आपको यह सब कहने की हिम्मत होती है ?" लीतामिंग ने इस बार बड़ी नफरत दिखाते हुये जोर से थूक दिया।

"जब हम नाज कूटते थे तो आप मजे से खड़े खड़े हमें हिदायत देते थे। यही आपकी महनत थी। आप चाहते थे नाज अच्छी तरह पीटा जाय ताकि एक भी दाना व्यर्थ न चला जाय। हमारे काम में फुर्ती भी हो और कुशलता भी—यह आप चाहते थे। अब जनाब मेरी ओर देखिये। मैं बसन्त के शुरू से ही खेत जोतता था जब कि जमीन पूरी तौर पर मुलायम नहीं होती थी। मेरे पैर फट जाते थे और उनमें घाव हो जाते थे। जब मैं उन्हें शाम को धोता था तो बड़ी पीड़ा होती थी। इसके बाद जून की कड़ी धूप में

तब तक पहर चलाता रहता था जब तक बिल्कुल थककर मरणासन्न हो जाता था। यह बात आपकी तो समझ में ही नहीं आ सकती। अगस्त के महीने में सूखी घास इकट्ठा करने में ही मुझे रोजाना रात हो जाया करती थी। और जब मैं थकावट से चूर होकर घास के ढेर पर सो जाता था तो एक लकड़ी के तख्ते की मानिन्द पड़ा लगता था। सुबह उठकर अपने को ओस में भीगा पाता था। ये और इस तरह की बहुत सी बातों का आपको कतई पता नहीं है। मैंने पाँच जमींदारों की चाकरी की है। तुम सभी एक ही थैली के चट्टे बट्टे हो। तुम लोग खाने पीने में तो हाथी हो पर काम करने में चुहिया। फिर भी तुम मेहनत की बात करते हो।"

चचा कुआँगलिन, जो ली चाओ चू के पुराने शिकमी काश्तकार थे, अब अपने को ज्यादा न रोक सके। भावावेश में उन्होंने कहा—"मैं ली चाओ ची से जानबूझ कर दूर का ही सम्बन्ध रखता था। सिर्फ चन्द बीघे खेत मैंने उससे लगान पर लिये थे फिर भी मेरे साथ उसने जो बर्ताव किया है उसे क्या बताऊं, मैं ही जानता हूं। हर बिस्वा जमीन के लिए उसे एक मुर्गी का बच्चा नजराने में चाहिये। एक साल उसकी पत्नी ने एक लड़की को जन्म दिया तो वह बड़ा निराश हुआ और झल्लाहट मेरे ऊपर उतारी। उसने कहा "चूंकि तुम मुझे मुर्गी भेजते रहे हो इसलिए ऐसा हुआ।" अब वह सिर्फ मुर्गे ही मुर्गे लेगा। लेकिन मुर्गे अण्डे कैसे दें, इसलिए हमें साथ में अन्डे भी देने पड़ते थे। इस तरह सैकड़ों अण्डे भी हमें भिजवाने पड़े।

जब लगान वसूली का समय आया तो उसने कहा कि तीन तरह का दाना वह बिल्कुल छुएगा भी नहीं। भीगा, चपटा और लाल। नाज का दाना जाँचने का उसका एक ही तरीका था। वह एक मुट्ठी नाज लेकर मेज पर रखता और फिर झुक कर पूरी ताकत से फूंक मारता, अगर चावल के दाने वहीं बने रहे तब तो ठीक वरना वह कह उठता 'ठीक नहीं है' और लेने से इन्कार कर देता।"

एक नौ जवान किसान उठा और ली चाओ ची की ओर इशारा करते हुये कहने लगा :—

"मेरा नाम ली जी चांग है। मैं उसका भतीजा हूं लेकिन उसने हमारे परिवार के लोगों से ऐसा बर्ताव किया है मानो हम कूड़ा करकट हों। आजादी से एक साल पहिले मेरी मां को पीलिया (कमल रोग) हो गया था और हमें उसके इलाज के लिए रुपये की जरूरत थी। हमने उससे २० रुपये उधार लिये और दो महीने की ब्याज दे दी। उस समय नाज सस्ता था इसलिए उसने यह उधार नाज की शकल में आंका और कहा 'यह २ मन चावल हुआ है।' चार महीने तक उसने कोई व्याज नहीं माँगी। बड़ी उदार तबियत पाई हो जैसे इन हुजूर ने—यही तो आप कहेंगे। तब वह समय आया कि नाज की कीमत एक दम चढ़ गई चूंकि। फसल कुछ देर से कटी। इसलिये अब उसने उस उधार को रुपयों में बदल लिया। जब जाड़ों की फसल आई तो फिर उसने नाज में हिसाब बना लिया। गरज यह कि आठ महीने बाद हमें मालूम हुआ कि हमें उसका ५ मन चावल देना है। यही वजह है कि जाड़ों में मेरे पास कोई रुई के या ऊनी कपड़े पहनने को नहीं है।"

उसने झट से ली चाओ ची का ओवर कोट पलटकर लोगों को दिखाया कि उसमें लोमड़ी के मुलायम बालों की पट्टी लगी हुई है। 'आप लोग अच्छी तरह देखिये।' मैं अब यह परवाह नहीं करूंगा कि जनाब मेरे चचा हैं। मैं तो सिर्फ यह जानता हूं कि तुम उन्हीं शैतान जमीदारों में से एक हो जो हम पर जुल्म करते आये हैं।

यह देखकर कि उसका खुद का भतीजा उसके खिलाफ है, ली चाओ ची की आत्म रक्षा की सभी युक्तियाँ लड़खड़ाने लगीं। अब वह किनारा कसी करने लगा और कभी कभी कहता—अच्छी बात है! अच्छी बात है, ऐसा ही सही, कह लो मुझे जमीदार!" पर किसानों के आरोप चलते ही रहे। जाहिर बात है उनमें से बहुतों के लिये अपनी बरसों की दबी हुई शिकायतों और वेदनाओं के भार को उतारना उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि वर्ग विश्लेषण का

काम; शायद उससे भी ज्यादा। इसलिये हालांकि बोलने के इंतजार में खड़े सम्भावित जमीदारों की एक कतार लग चुकी थी, लू यांग ने किसानों के आरोपों को कम करने या उन्हें बोलने से रोकने का कोई इशारा नहीं किया। बल्कि उलटे वह तमाम आरोपों को सावधानी से नोट करता जा रहा था। जब वह थोड़े से जुर्म लिख चुकता तो बड़ी नफरत भरी नजर जमीदारों पर डालता और कभी कभी बड़बड़ा भी देता, "पाजी, शैतान की दुम" आदि। हर बोलने वाले के बाद वह जनता की ओर उम्मीदभरी नजर से देखता मानो कह रहा हो, 'और किसी को तो कुछ नहीं कहना ?' कोई बात रहनी नहीं चाहिये।"

एक अपरिचित सा किसान भीड़ से अपने को अलग किये हुये था। एक हाथ अपनी कमर पर रखते हुये और दूसरे से ली चाओ ची की ओर इशारा करते हुये उसने कहा :—

"मैं सूपू गांव से आया हूं। हमारी जगह काफी ऊंची है और वहां पानी की बड़ी समस्या रहती है। हर साल हमें पानी सींचने के लिये उसके खेतों में होकर गुजरना पड़ता है और इसके बदले में हमें पाँच सेर नाज रोजाना के हिसाब से देना पड़ता है। अगर एक फसल में नाज देने को नहीं तो दूसरी फसल में दिया जा सकता था। ब्याज में एक मन और ज्यादा देना होगा। इसके अलावा हमें उसकी चार बीघा जमीन मुफ्त में सींचनी पड़ती थी। अगर इसके लिये हमें मजदूरी मिलती तो दो मन नाज होता। सन् १९३६ में उसने सिर्फ इसी योजना से २०० मन नाज कमाया और कुछ ही सालों बाद उसने ५० बीघा जमीन और खरीदली। एक बार आजादी से पहिले हमारे गाँव ने यह कोशिश की वह इस बीच की जमीन को हमें बेच दे। लेकिन इसने आखें सतर करते हुए जबाब दिया, "यह जमीन उसके पुश्तैनी है और इसलिये पवित्र है। आगे भी सैकड़ों हजारों सालों तक यह ली परिवार की मिल्कियत रहेगी।"

✪ ✪ ✪ ✪

पाँच दिन और पाँच रातों के लगातार बहस मुबाहिसे के बाद सिनलू गाँव के जमीदारों की पहली फहरिस्त तैयार हुई। सबसे ज्यादा जिन्होंने परेशान किया वे सेविन स्टार स्लोप के पास की बस्ती के रहने वाले थे चूंकि उनमें बहुत से एक साथ ही उद्योगपति और व्यवसायी थे। हर दूसरी मीटिंग में नये तथ्य और शोषण के नये नये तरीकों का भेद खुलता और इस प्रकार अपने शोषकों के खिलाफ किसानों की नफरत बढ़ती ही जा रही थी। इसके बाद तीन दिन और लगे जब धनी किसानों का वर्गीकरण हुआ।

जब जमीदारों और धनी किसानों की फहरिस्त तैयार हो गई तो किसान सभा को और गरीब किसानों व खेत मजदूरों की कमेटी को रिव्यू के लिये सौंप दी गई। सिर्फ एक गलती पकड़ी गई। वह यह कि एक अच्छे खाते पीते मझोले किसान को धनी किसान की श्रेणी में रख दिया गया था। यह गलती फौरन दुरुस्त कर ली गई। इस तरह पहली मर्तबा सिन लू गांव की हैसियतवार दर्जों की फहरिस्त पैंग वंश के पुराने मन्दिर की दीवाल पर लटकाई गई। एक सफेद, जिसमें जमीदारों से के नाम थे और दूसरी पीली जिसमें धनी किसान थे।

जब दर्जों की छाँट में खेत मजदूरों, गरीब किसानों और मझोले किसानों का नम्बर आया तो वातावरण बहुत बदला हुआ था। यह सच है कि जब कोई अपने परिवार की तादाद, अपनी जमीन, हल, बैल, और कर्जे के बारे में बतला चुकता तो दूसरे जो वहाँ मौजूद थे कोई कमीबेशी या गलती सुझाते। लेकिन ज्यादा से ज्यादा वह एक घरेलू झगड़ा मालूम पड़ता था। काफी शोर गुल था मगर घृणा और द्वेष भाव लेश मात्र भी नहीं था।

जाहिरा तौर पर भी उनके हित टकराते नहीं थे। वे सब एक दूसरे के विरुद्ध न होकर एक ही तरफ मुंह किये लम्बी बेंचों पर कतारों में बैठे थे। कुछ औरतें अपने बच्चों को सम्हालने में लगी हुई थीं, रक्षक दल के लोग अपने अपने भालों (बरछियों) की धारें

चमका रहे थे। एक छोटा खूबसूरत बच्चा अपने गले में तांबे की हंसुली पहिने इधर उधर फुदक रहा था। जितने लोग वहाँ मौजूद थे करीब करीब सभी एक से कपड़े पहिने हुए थे। सब खुश थे। वे जानते थे कि वे अपने ही लोगों के बीच में बैठे हैं और सभी सामन्ती चक्की के शोषण में पिसे हुए हैं।

रिपोर्ट देने के साथ गिनती गिनने का शोर होता चलता था। मंत्री बड़ी जल्दी जल्दी नोट बुक में लिखता चलता था। जैसे ही एक किसान अपनी बात कह चुकता, किसान सभा का सभापति पूछता :—आप लोग इसके दर्जे के बारे में क्या कहते हैं ?"

कायदा यह बना लिया था कि ऊपर से नीचे की ओर चला जाय। इसलिये उन किसानों से शुरू किया गया जिनकी जिन्दगी दूसरों के मुकाबले में कुछ कम मुश्किल थी। दूसरे शब्दों में मझोले किसान। स्वभावतः कुछ लोगों ने जो इस श्रेणी में आये, अपने को नीचा रखने की कोशिश की। चचा कुआँगलिन को एक शिकमी मझोले किसान का दर्जा मिला। हालाँकि उसने ली चाओ चा से लगान पर जमीन ली और वह खुद महनत करता था पर उसके पास हल और बैलों की जोड़ी पूरी थी और उसे कभी दूसरों की मजूरी नहीं करनी पड़ती थी। सारांश यह कि उसकी जिन्दगी इतनी मुश्किल नहीं थी जितनी कई गरीब किसानों की। फिर भी उसे बुरा लगा, बड़बड़ाने लगा और सिर मटकाते हुये उसने कहा, "मुझे गरीब किसानों के दर्जे में क्यों नहीं रखा गया ? मेरे पास एक बिस्वा जमीन भी तो नहीं है। क्या मुझे भी दूसरों की तरह सालाना लगान जमीदार को नहीं देना पड़ता ?

लूयांग ने फौरन उसे समझाया :-"पहिले जमीन तुम्हारी नहीं थी, खेती सुधार के बाद जमीन तुम्हारी निजी होगी।" फिर उसने सभी मझोले किसानों को तसल्ली देते हुए कहा :—"दरजे वार छाँट करने का हमारा असली मंशा तो जमीदार से अपने को अलग करने की एक सीधी लाइन बनाना है। हम सभी किसान अब एक ही ग्रुप के

हैं। हम सभी इस देहात के मालिक हैं। आज के खेत मजूर और गरीब किसान जल्दी ही मझोले किसान बनेंगे। जब उन्हें जमीन मिल जायगी तो उनकी भी आमदनी बढ़ेगी। खेत मजूरों और गरीब किसानों के वर्गीकरण का भी मूल आधार यही था कि हर व्यक्ति अपनी माली हालत की रिपोर्ट दे। अक्सर उसमें पुराने दर्दनाक किस्से उखड़ पड़ते। बूढ़ी माँ यह शब्द कहते हुए रो पड़ी 'मेरे पास श्रम शक्ति ही नहीं है।' और इस बात से उसे फिर अपने खोये हुए बेटे की याद आगई।

रांगे की मूर्तियाँ, धूप और मोमबत्तियों के बनाने वाले व्यापारियों ने जो सेविन स्टार स्लोप के पास की बस्ती में रहते थे, यह प्रार्थना भेजी कि उन्हें गरीब किसानों में शुमार कर लिया जाय। मालूम हुआ कि आजादी के बाद से उनके व्यवसाय में एक दम से मन्दी आगई है। उनका कहना था कि कृषि सुधार के बाद किसानों का सांस्कृतिक स्तर ऊंचा हो जायगा तो कोई भी इस तरह की अंधविश्वास की वस्तुएं नहीं खरीदना चाहेगा। इसलिये इस तिजारत का भविष्य बिल्कुल है ही नहीं। उन्हें ये लग रहा था जैसे खेती सुधार ने उन्हें उस व्यवसाय से छुटकारा दिला दिया हो। वे अब किसान बनना पसन्द करेंगे। लूयाँग ने जवाब दिया कि वे अब भी दरजों के लिहाज से हाथ के कारीगर या दस्तकार श्रेणी में आते हैं; फिर भी जमीन का बटवारा होते वक्त उनके मामलों पर उचित ध्यान दिया जायगा।

जब सब चीज तैयार होगई, तो एक फाइल में जरूरी सूचना इकट्ठी की गई जिसमें सब के नाम, उम्र, जमीन और हल बैल वगैरह की तादाद, शोषण करने की सीमा या शोषित होने की डिग्री सभी कुछ दर्ज था। इसकी एक कौपी मंडल सरकार को और एक मंडल किसान सभा को जाँच पड़ताल के लिये सुपुर्द कर दी गई।

इस जाँच पड़ताल के फलस्वरूप कई किसानों की हैसियत बदल गई। मिसाल के तौर पर लो की बड़ी कोठी का लो तुंग शैंग इन्कलाब के दौर में लाल फौज में शामिल होगया था। जब लाल फौज उत्तर

की ओर बढ़ी तो वह किसी कदर पीछे रह गया और अपनी रोजी के लिये हाथ का ठेला चलाने लगा, लकड़ी काटने लगा और इसी तरह महनत मजूरी से पेट भरने लगा। उसने अपनी थोड़ी सी जमीन करीब चार बीघा आजादी से पहिले कभी लगान पर नहीं उठाई। आजादी के बाद भी जमींदार को उसकी ब्याज वापिस लौटानी पड़ा जो वह उसे कई साल से एक कर्जे की बाबत चुकाता रहा था। इसलिये उसकी हैसियत एक खेत मजूर की सी होनी चाहिये, जब कि वह गलती से फायल में गरीब किसान लिख दिया गया है।

सिनलू गाँव के वर्ग विश्लेषण की दूसरी फहरिस्त लाल कागज पर थी। यह पहली फहरिस्त के बगल में ही चिपकाई गई थी। तमाम खेत मजदूरों, गरीब किसानों और मझोले किसानों के नाम इस पर थे। गाँव के सभी किसान-जवान और बूढ़े-फहरिस्त देखने पहुंचे जो पढ़ सकते थे वे पैर के अंगूठों के बल खड़े होकर उचके और उन्होंने नाम सुनाना शुरू किया। जिस तरतीब से नाम लिखे गए थे वह भी लोगों को महत्वपूर्ण लगा। और जैसे ही कोई नाम बोलता था भीड़ मेंसे कोई पूछता—किस नम्बर पर है ?"

इस भीड़ में फूचुआन और चुनसिंग भी थे। उनके लाल फीते बंधे हुये भाले उनके साथ थे। दोनों रात के स्कूल में पढ़ने जाते थे। इसलिये अब वे अपने नाम पढ़ सकते थे। लेकिन बहुत से और दूसरे लोगों के नाम वे नहीं पढ़ पा रहे थे।

चुनसिंग ने कहा "क्या तुम्हें इस बात की खुशी नहीं है कि तुम्हें इस फहरिस्त में खेत मजदूर रखा गया है।" 'मुझे ?" फूचुआन ने फिर फहरिस्त की ओर देखा 'अरे सिर्फ यही बात नहीं है जिससे मैं खुश हूँ।"

उसके इस रिमार्क पर सिनवू ने, जो अभी तक दूसरे किसानों को नाम पढ़कर सुना रहा था, घूमकर पूछा, "फूचुआन ! और कौनसी बात से तुम खुश हो ?"

दीवाल पर टंगी हुई फहरिस्त की ओर इशारा करते हुए फूचुआन ने जबाव दिया, "मैं इसलिये खुश हूँ चूंकि मेरे साथ इस लाल फहरिस्त में बहुतेरे और लोग हैं।"

सिनवू ने सिर हिलाया और कहा, "सच है। हरेक को यह ध्यान में रखना चाहिए कि हम बहुत तादाद में हैं और एक दिल से हैं। हमारे सबके ऊपर चेयरमैन माओ और कम्युनिस्ट पार्टी है। अब भविष्य में कभी भी जमींदार हम पर हकूमत नहीं कर सकेंगे।"

दूसरे ही दिन लू यांग और किसान सभा के एक जिम्मेदार नेता ने सभी जमींदारों को बातचीत करने के लिए मन्दिर में बुलाया। वहाँ उन्हें सूचित किया गया कि अगर वे यह समझते हों कि उन्हें जमींदारों के वर्ग में रखना अनुचित है तो वे सूबा जन अदालत में १५ दिन के भीतर भीतर अपील कर सकते हैं। इसके बाद उन्हें बताया गया कि तीसरी फहरिस्त बन जाने के बाद—जो कि आखिरी होगी—जमींदारों को अपनी सब जमीन, जायदाद, खेती के औजार, मवेशी अतिरिक्त मकानात और खाद्य-पदार्थ सौंप देने पड़ेंगे। जिन किसानों ने जमीन का लगान पेशगी जमा कर दिया था वह वापिस देना होगा। वह तमाम कर्जा जो आजादी से पहले किसानों पर जमींदारों का चाहिए, खारिज कर दिया जायगा। अगर किसी जमींदार ने आजादी के बाद किसी को अपनी जमीन या मवेशी बेच दिए हों तो वापिस ले लेने चाहिए वरना उसका नकद भुगतान करना पड़ेगा। जब तक किसान सभा के अधिकारी चीजों को अपने संरक्षण में न ले लें, उन्हें अपनी हर चीज की हिफाजत करनी होगी जो जब्त की जाने वाली हैं। अगर कोई चीज खराब हालत में या खोई हुई मालूम होगी तो वे इसके जिम्मेदार ठहराये जायंगे। अन्त में लू यॉंग ने जमींदारों से कहा कि उन्हें अपने मकानों में मेहमान ठहराने की इजाजत नहीं है और जब भी वे बाहर जायं उन्हें पहिले खेत मजदूरों और गरीब किसानों की कमेटी के नेता से अनुमति लेनी होगी।

इसके बाद सब धनी किसान बुलाये गए। उन्हें भी सूबा अदालत में अपील करने की गुंजाइश बताई गई। लू यॉंग ने उन्हें सरकारी नीति समझाई कि वे अभी धनी किसानों की अर्थ व्यवस्था को कायम रखना चाहते हैं। पर साथ ही उन्हें यह भी बता दिया गया कि कृषि सुधार कानून के मुताबिक उनसे वह जमीन ले ली जायगी जो वे दूसरों को बटाई पर उठा देते हैं; चूंकि हुलिंग मण्डल में वैसे ही जमीन कम है। जो जमीन वे खुद जोतते हैं और उनकी दूसरी स्तैमाल की चीजें नहीं छुई जायंगी। अन्त में लूयांग ने उनसे अधिक पैदावार करने के लिए महनत करने की अपील की और समझाया कि उन्हें किसी तरह की अफवाहों पर ध्यान नहीं देना है। "आपको यह विश्वास रखना चाहिए कि जनवादी सरकार जो नीति घोषित कर चुकी है उस पर अवश्य अमल करेगी।"

सिनलू गॉंव के वर्गीकरण के सब कागजात गॉंव के मुखिया पेंगयू चॉंग ने इकट्ठे किये और फिर उस फाइल को जिला अधिकारियों के पास पहुँचा दिया। इसके बाद जिला सरकार के सभापति ने उन नौ गांवों के सभी खेती सुधार कार्यकर्ताओं की एक मीटिंग बुलाई जिसमें उसने यह घोषित किया कि सब मिलाकर पूरे नौ गॉंवों में से सभी ने दरजेवार छॉंट का काम सही सही और मुनासिब ढंग से पूरा किया है।

कार्यकर्ताओं की रिपोर्ट का सारांश बताते हुए उन्होंने कुछ मामलों पर खास ध्यान देने को कहा। उनमें एक धनी किसान शीह चाओ गॉंव का रहने वाला था। वह अपनी खुद जोत की जमीन में से भी कुछ भाग छोड़ना चाहता था। इस बात को कार्य-कर्त्ता लोग क्यों मंजूर करने लगे? यह घटना इस बात का सबूत थी और इसीलिए महत्वपूर्ण थी कि कुछ धनी किसानों के दिमाग में अब भी बेचैनी बाकी थी। हम उन्हें पूरी तौर पर यह विश्वास नहीं दिला सके हैं कि हम धनी किसानों की अर्थ व्यवस्था कायम रखना चाहते हैं। इसीलिए वे अभी तक पूरे दिल से अधिक उत्पादन में

अपने को नहीं जुटा रहे हैं। बहुत मुस्तैदी से प्रचार करने की आवश्यकता है। तभी हम उनके झूठे बहम और संदेहों को दूर करने में समर्थ होंगे।

अब एक मामला ली चो नान का सामने आया, वह शुआँग फँग गाँव का मुखिया भी था। उसने जमीदार ली पैंग फी को अपनी कुछ जमीन अलग कर देने में मदद दी जिससे वह बजाय जमीदार के एक धनी किसान की श्रेणी में रख लिया गया। यह बेईमानी भी जल्दी पकड़ली गई। पता लगाकि ली चो नान उस जमीदार का बहुत पुराना चापलूस रहा है और चालाकी से गाँव का मुखिया बन बैठा है। उसको इस पद से हटाया गया और मुकामी किसान सभा की मैम्बरी से भी उसका नाम काट दिया गया। उसके दूसरे साथियों को भी मैम्बरी से मुअत्तिल कर दिया गया। इन बातों से यह सबक मिला कि निगरानी की अब भी बड़ी जरूरत है और जिस तरह किसान संगठन की ताकत जमीदारों से संघर्ष के दौरान में बढ़ती है, 'अपने घर की सफाई' का महत्व भी नजर अन्दाज नहीं करना चाहिये। अन्त में उसने दूसरे गावों के वर्ग विश्लेषण से निकले नतीजों पर रोशनी डाली। उसने बताया कि काम करने का उत्तम तरीका यह है कि हमें बिल्कुल नीचे से शुरू करना चाहिये। पहिले दुश्मन, फिर दोस्त, और आखिर में अपने निजी लोग। मामूली सवालों को निबटाने से पहले खास और बड़े मसलों को हाथ में लेना चाहिये; जो पेचीदे और गुत्थीदार सवाल हों उन्हें बिल्कुल बाद के लिये रखना चाहिये। खेत मजूरों, गरीब किसानों और मझोले किसानों के मामलों में नरमी बरतने में कोई हरज की बात नहीं है। लेकिन जब जमीदारों की बात हो तो ऐसी पाबन्दी नहीं हो सकती।

आखिरी फहरिस्तें जिले की सरकार ने मंजूर कर दीं और गांवों में फिर चिपकाने के लिये वापिस भेजदीं। यह बहुत बड़ा दिन था वास्तव में जब से सिनलू गाँव में खेती सुधार का काम शुरू हुआ

तबसे आज तक यह सब से बड़ा दिन था। एक बार फिर मन्दिर के सामने पंडाल बनाया गया। दीवालों पर नारे लिखे हुए थे। 'कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद'; 'किसानों की एकता जिन्दाबाद'; 'सामंती जमीदारी वर्ग को मिटा दो।' सिनलू गाँव का हर आदमी उस मीटिंग में आया जिससे वह अपना दरजा जान सके। वही दरजा उसकी आर्थिक और राजनैतिक हैसियत का चिन्ह होगा।

आज आसमान में बादल थे। कभी कभी हलके ओलों की बौछार हो जाती थी। लीचाओचू जब अपना नाम सफेद फहरिस्त में, जिसमें जमींदारों के नाम थे, पढ़ रहा था तो काँप रहा था। वह एक फटी हुई पतली रुई की जाकट पहने था और उसके सिर का हैट इतना आगे को झुका हुआ था कि आँखें करीब करीब उसमें ढक गई थीं। इस बार उसकी यह हिम्मत नहीं हुई कि लोग उसके लोमड़ी के बालों वाले गाउन पर उंगली उठावें। उसके पीछे कुछ और जमीदार खड़े थे। तादाद में वे थोड़े से ही थे पर उनमें सभी भयभीत और निराश मालूम होते थे। झपकती हुई पलकें और नीचे को सिर किये हुए वे वहाँ खड़े थे।

धनी किसानों की यह हालत नहीं थी। तादाद में वे भी बहुत नहीं थे। चू याओसिन वहाँ था। उसका टोप आगे को खिसका हुआ था सिर्फ आंखें और नाक बाहर निकली थी; वह अपने गले में एक ऊनी मफलर डाले हुआ था और असाधारणतया खामोश था दूसरे लोग अपना हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे एक हाथ में वे हुक्के की डंडी पकड़े कश खींच रहे थे और जोर जोर से धुँआ निकालते हुए आवाज कर रहे थे।

खेत मजूरों, गरीब किसानों और मझोले किसानों की भारी तादाद खुशी के गीत गाती हुई एक साथ मीटिंग की जगह पर आई। ली ता-मिंग इन सबके आगे था। उसके हाथ में एक बड़ा सा लाल झण्डा था जिसमें यह शब्द लिखे हुए थे।

'हुलिंग मंडल किसान सभा–पहली शाखा।' उसके पीछे बाजे बज रहे थे और ग्राम रक्षक दल के लोग अपने चमकदार भाले लिए हुए कई कतारों में आरहे थे। औरतें, मर्द, जवान और बच्चे सभी पीछे पीछे थे। इनके हाथों में झन्डे और पोस्टर थे जिनमें सामंत विरोधी नारे लिखे हुए थे। थोड़ी ही देर में पूरी जगह भर गई फिर भी जलूस का अन्त कहां है यह नजर नहीं आ रहा था। थोड़े से जमीदार और धनी किसान वहां थे। उनसे कहा गया कि वे एक ओर हो जांय और आने वालों के लिये जगह कर दें, फिर भी कुछ किसानों को मीटिंग की जगह से बाहर ही रह जाना पड़ा।

राष्ट्रीय गायन हो चुकने के बाद कामरेड चाओचीमिन बोले :—"आखिर खेती सुधार का मतलब क्या है? इसका मतलब है इन थोड़े से (जमीदारों की ओर इशारा करते हुए) लोगों की सत्ता खतम करना जिसका प्रयोग वे तुम्हारे शोषण के लिये करते थे।" इसके बाद उन्होंने सारी किसान जनता की ओर इशारा करते हुए कहा:—

"जब तक किसानों का मजबूत संगठन और एका, पैदावार, शिक्षा और आत्म रक्षा के लिये तत्पर है, हमें इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम सामंतशाही की आखिरी जड़ों को खोद फेंकेगे।

छै

तूफान के बाद उजाला

हुलिंग मंडल के किसानों को यह वर्गीकरण करते करते १६५० का अंत आ पहुँचा। आमतौर पर हर नया साल उनके लिये कोई खास महत्व नहीं रखता था पर इस बार घर द्वार सजाये गये थे। गरीब किसानों व खेत मजूरों ने मिलकर एक बड़ी पार्टी की। क्यों न हो, १६५० का साल बड़ा अभूतपूर्व था। कई पीढ़ियों तक किसान इस साल को याद रखेंगे। इसी दावत के अवसर पर किसान सभा के संगठन के बारे में विचार विनिमय किया गया।

योजना यह थी कि पहिले आम लोग नीचे से किसान सभा की छान बीन और तहकीकात करें : आजादी के बाद किसान किस हद तक अपना मालिक खुद बन गया है ? क्या जमीदार का प्रभाव बिल्कुल मिट गया है ? क्या सभा काफी मजबूत बन गई है ? क्या अब भी ऐसे लोग किसान सभा से बाहर रह गये हैं जिन्हें अब तक समझा कर शामिल कर लेना चाहिये था ? दूसरी तरफ क्या कुछ गैर जिम्मेदार और बदमाश किस्म के लोग अन्दर घुस आये हैं जो छिपे छिपे जमीदारों से हमदर्दी रखते हैं ?—इसके बाद किसान सभा के नेतृत्व की जाँच होनी चाहिये : क्या कार्यकर्त्ता अपने काम

में पूरी लगन से क्रियाशील हैं ? क्या वे संघर्षों के दौरान में दृढ़ता दिखाते हैं ? उनमें स्वार्थ परता और जमींदारों को बचाने की कोशिश तो नहीं पाई जाती ?—इस तरह की पूरी छान बीन हो जाने पर पदाधिकारियों के चुनाव आसानी से होंगे।

हुलिंग मंडल किसान सभा को नौ केन्द्रों मे बांट दिया गया। एक गांव में एक केन्द्र था। तीन केन्द्र मिल कर एक 'शाखा' बनाते थे। इसके बाद भूगोल, रीति रिवाज और काम की सुविधा के अनुसार हर केन्द्र को और भी छोटे छोटे ग्रुपों में बाँटा गया। हर ऐसे छोटे ग्रुप को किसान सभा के तीन पदाधिकारियों के नाम प्रस्तावित करने का हक था। इनमें एक स्त्री जरूर होनी चाहिये। अन्त में यह भी ध्यान रहे कि पूरे गाँव के पदाधिकारियों में खेत मजूरों और गरीब किसानों का दो तिहाई का बहुमत होना लाजिमी है। इसका मतलब यह था कि मझोले किसानों की तादाद पूरी तादाद में एक तिहाई से ज्यादा नहीं होनी चाहिये।

इसी मौके पर लू याँग ने बताया कि उम्मीदवार में कुछ विशेष योग्यताएं होना जरूरी हैं :—पिछला जीवन स्वच्छ हो, ईमानदार हो, परिश्रमी हो, संघर्षों में दृढ़ता, काम में फुर्ती और फैसला करने में निष्पक्ष हो।

चुनाव होने से पहिले हर उम्मीदवार को खुले आम आत्म आलोचना करनी चाहिये ताकि किसान अपनी राय कायम कर सकें। मिसाल के तौर पर एक उम्मीदवार ने उससे कहा कि एक बार उसने अपनी पत्नी के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया। यह तो एक पहलू है। इसी दौरान में यह भी पता चला कि पिछले महीने में बाज बाज किसानों ने बड़ी बहादुरी, त्याग और सार्वजनिक सेवा के लिये तत्परता के परिचय दिये हैं। ऐसी एक मिसाल फू चुआन की है। जिस रोज वह पैंगऐरहू को पकड़ने गया, उसे बीस मील पैदल चलना पड़ा था और सो भी खाली पेट। जब उसकी चप्पलें टूट गई तो नंगे पैर चलता रहा और इससे पहिले कि वह पैंगऐरहू को सही-

सलामती से जिला सरकार को सौंपें, उसे यह पता ही न चला कि उसके पैरों में खून निकल रहा है।

इस प्रकार जब सब उम्मीदवारों की अच्छाइयों और बुराइयों पर गौर हो चुका तो चुनाव शुरू हुआ। लोगों ने हाथ उठा कर उम्मीदवारों के बारे में अपनी राय प्रगट की।

कुल मिलाकर १२ अफसर चुने गये। सभापतित्व का सेहरा पैंग सिनवू को मिला जिसे सभी लोगों ने जंग जू और बहादुर बताया। सब की राय में वह राजनैतिक ज्ञान में आगे बढ़ा हुआ, निष्पक्ष और दूसरों के साथ बर्ताव में बड़ा नरम था। इसके अतिरिक्त वह कुछ पढ़ा लिखा भी था। हिसाब किताब कर सकता था और खास तौर पर फहरिस्तें और चार्ट (नकशे) बनाने में बड़ा निपुण हो गया था। उसके नीचे चार विभाग थे—रक्षकदल, संगठन, सांस्कृतिक प्रचार और महिला दल। एक अस्थायी कमेटी जमींदारों की अतिरिक्त जायदाद पर कब्जा करने, उसे जब्त करने, निगरानी रखने और किसानों में बटवारा करने के लिये भी बनाई गई जिससे कि खेती सुधार का काम आसान हो जाय।

इस तरीके से सिन लू गाँव की किसान सभा एक जबरदस्त नये संगठन की शकल में उभर आई। इस दौरान में बहुत से नये कार्यकर्त्ता निकले जिन्हें अलग अलग काम सुपुर्द किये गये। लोशु मिन, जो लो वाली कोठी में रहती थी और महिला दल की प्रधान थी व पैंगकूचांग जो लो प्राइमरी स्कूल में मास्टर थे, दोनों कब्जा करने वाले विभाग में रखे गये। फू चुआन और चुनसिंग जब्ती विभाग में थे। लीतामिंग और यूलिऐन के जिम्मे सामान लेकर भिजवाना था। कायदे के मुताबिक हर विभाग में चार व्यक्ति होते थे। लेकिन वितरण विभाग में सोलह व्यक्ति थे जिसमें सात खेत मजूर, पांच गरीब किसान और चार मझोले किसान थे। ये सब छोटी कमेटियों में से चुन कर आये। बंटवारे का काम खेती सुधार के सब कामों से अधिक पेचीदा और मुश्किल था इसीलिये उसके प्रबन्ध में सब से ज्यादा आदमियों की जरूरत थी।

यद्यपि किसानों के इस अन्तिम प्रहार के सामने जमींदार अपनी पुरानी शेखी और दबदबे सब खो चुके थे, फिर भी वे भींगी बिल्ली की तरह सब कुछ बरदाश्त करने को राजी नहीं थे। उन्होंने कुछ ऐसी तिकड़में और हथकन्डे स्तैमाल किये जिसमें उनकी थोड़ी बहुत दौलत छिप जाय और कुछ खास रिश्तेदारों में बंट जाय। साथ ही उन्होंने किसानों में आपस में मन मुटाव पैदा करने की भी कोशिश की ; उन्हें उकसाया।

लो मैंगसिउंग—जमीदार लोपी जंग का भतीजा था जो सात साल की सजा काट रहा था। उसने अपनी जमीन पर खड़े बहुत से पेड़ उस समय कटवा लिये थे जब कि किसान सभा वर्गीकरण के काम में बहुत व्यस्त थी। वह सेविन स्टार स्लोप से लियाओसान नाम का एक बढ़ई ले आया और उससे अपने लिये दो आराम कुर्सियाँ बनवाईं। बाकी की लकड़ी बेच दी। वह बड़ा चालाक था और जानबूझ कर हमेशा मामूली कोट में घूमता फिरता था। उसकी स्त्री भी यह दिखाने को कि वे लोग बड़े गरीब हैं इधर उधर से चावल उधार लाया करती थी पर असलियत यह थी कि शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जिस दिन उनके यहाँ मुर्गी का बच्चा या बतख न मारी जाती हो। उस गोश्त से वे लोग भर पेट खाना खाते। आखिरकार जब्ती विभाग ने इस भेद का भण्डा फोड़ कर ही दिया। लो की पूरी नकदी, आराम कुर्सियाँ व बाकी की सब लकड़ी, खेती सुधार के मातहत जब्त कर ली गईं।

करीब करीब सभी जमीदारों ने जानबूझकर कुछ चीजें बरबाद करना चाहा या दूसरी चालबाजी करनी चाहीं। और कुछ नहीं तो किसी अच्छी खासी चलने वाली घड़ी के अन्दर के पुरजे ही निकाल लिये। ऐसा लगता था मानो वे सब ये समझते हों कि जो चीज बराबद हो गई उससे उन्हें कुछ मिल गया। एक और जमीदार साहब, रात को नाज भरे बोरे तालाब में खाली करते हुये गाँव रक्षक दल द्वारा पकड़े गये।

जब्ती और सुपुर्दगी विभाग के मैम्बरों ने खेती सुधार की उन धाराओं को खूब ध्यान से समझा जिनमें जब्त करने और कब्जा करने के नियमों का हवाला था इसके अलावा उन्होंने आपस में मिल कर एक शामिल प्रतिज्ञा पर दस्तखत किये ताकि इस काम के दौरान में उनमें कहीं भटकाव न आ जाय।

दोनों विभागों ने मिलकर पाँच बातें, 'क्या करना है?' और पाँच बातें 'क्या नहीं करना है?' छाँटीं। करने वाली पाँच बातें जब्ती के लिए थीं :—जमीन, खेती के औजार, मवेशी, बेशी मकान और गल्ला। पाँच न करने वाली बातें थीं :—उद्योग धन्धों में काम आने वाली जायदाद, पूंजी, चल सम्पत्ति, शारीरिक हिंसा और मझोले किसानों का अहित।

इन कार्यकर्त्ताओं ने इस बात की भी शपथ ली कि वे कोई गलत बात नहीं छिपायेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे और जमीदारों से किसी तरह की रिश्वत मंजूर नहीं करेंगे। फूचुआन के सुझाव पर सबने इस प्रतिज्ञा पर अंगूठा निशानी लगाई।

लो मैंगसिउंग के यहाँ जाने से पहिले फूचुआन ने सेविन स्टार स्लोप जाकर लियाओसान बढ़ई को पकड़ा। उसके जरिये उसे बड़ी कीमती सूचना मिली। मालूम हुआ कि दो आराम कुर्सियों के अलावा लियाओसान से उसने एक दुहैरी दीवाल बनाने को भी कहा था। ये सूचना पाकर वे लोग लो के मकान में गये। एक सुनिश्चित योजना के मुताबिक जब्ती विभाग के कार्यकर्त्ता फौरन अलग अलग ड्यूटी पर तैनात हो गये। उनमें से कुछ दरवाजे पर निगरानी रखने को खड़े हो गये। कुछ ने कमरों में तलाशी लेना शुरू किया और कुछ ने अलग अलग चीजों की छानबीन शुरू की। चुनसिंग के जिम्मे यह काम था कि वह लो की स्त्री से उसके पति की जायदाद का चिट्ठा ले ले।

खैर, वह जायदाद का चिट्ठा लाया गया और उसमें खेती के औजार व मवेशी सब ठीक पाये गये। इसके बाद अपनी कमर पर

हाथ रखते हुये फूचुआन ने लो मैंगमिउंग से पूछा :—"और कोई चीज ?"

"मेरे पुरखे मेरे लिये जो कुछ छोड़ गये थे वह सभी कुछ तो ले लिया है। क्या तुम अब भी असन्तुष्ट हो ?"—जमींदार बड़बड़ाया। फिर उसने अपनी पत्नी की गोद में खेलते बच्चे की ओर इशारा करते हुये कहा :—"मैं इसकी शपथ लेता हूं- —यह मेरा इकलौता बेटा है—कि मेरी सब दौलत जायदाद जो कुछ है तुम्हारे सामने है।"

"अच्छी बात है"—फूचुआन ने रक्षक दल के सामने सिर हिलाते हुए कहा। वे मकान के एक ओर सीधे उधर गये जहाँ मुर्गियाँ थीं। जैसे ही वे लोग उस तरफ बढ़ते गये लो मैंग सिउंग का चहरा पीला पड़ता गया। अब उस अहाते में फूचुआँग ने अपने साथ लाये हुए फावड़े से खोदना शुरू किया। जमींदार का परिवार कांप रहा था और रक्षक दल के लोग अपने भालों पर झुके खड़े थे। वे दीवाल की ओर ताज्जुब भरी मुस्कराहट से देख रहे थे। अन्त में कुछ ईंट उखाड़ कर बाहर निकाल ली गईं। उनके पीछे एक तख्ता नजर आया। जब उसे हटाया गया तो एक बड़ा लकड़ी का सन्दूक दिखाई दिया।

सिनलू गाँव की पूरी तहकीकात और खोजबीन की फहरिस्त बनाई गई जिसे जब्ती विभाग ने चैक करके सुपुर्दगी विभाग को दे दी। अब लीतामिंग, युलिऐन आदि का काम था कि उन सब चीजों के भिजवाने का प्रबन्ध करें। खेती के औजार और गल्ला अलग अलग नगलों में थे जहाँ जमींदारों से जब्त किये कुछ कमरे खास तौर पर इस सामान का स्टोर करने के लिये रख छोड़े थे। मवेशियों को अस्थाई तौर पर अलग अलग किसानों की हिफाजत में रख छोड़ा था। तब पूरी फहरिस्त जिसमें यह हवाला भी दिया हुआ था कि कौन सी चीज कहाँ रखी है, वितरण विभाग के पास आई ताकि सब चीजों का सही लेखा जोखा किया जा सके।

बहुत से जमींदारों ने यह प्रार्थना की कि उन्हें अपने गल्ले का भुगतान दूसरी चीजों के जरिये करने की इजाजत दी जाय। किसान

सभा ने उन्हें यह आज्ञा दे दी। थोड़े ही अरसे में पैंग के पूर्वजों का मन्दिर एक बिसातखाना लगने लगा। तरह तरह के जेवर, टौनिक, दवाइयाँ, शृङ्गार और सजावट की वस्तुऐं, ऐसी चीजें जो ज्यादातर किसानों ने कभी देखी भी नहीं थीं, वहाँ इकट्ठी हुईं। उन पर नजर डालते हुये सिनवू ने व्यंग पूर्वक कहा :—

"यहाँ पर एक ऐसी नुमाइश दिखाने का अच्छा मसाला है जिससे यह पता चले कि जमीदार लोग कैसे रहते थे।"

पहला काम जो वितरण विभाग ने किया वह था ऐसी जमीन का पता लगाना जिसकी मिल्कियत का पता न हो और जानबूझ कर बात छिपाई गई हो। अगर जमीन के बारे में पूरी मालूमात फहरिस्त में ठीक ठीक दरज न होगी तो उचित और न्यायपूर्ण बंटवारा नहीं हो सकेगा। जहाँ तक जमीदारों का सवाल था, वर्गीकरण के दौरान में ही उनकी पूरी दौलत जायदाद सामने आ गई थी। इस बारे में कोई समस्या नहीं रह गई थी। लेकिन कुछ मझोले किसानों खास तौर पर शिकमी मझोले किसानों की समस्या बाकी थी। इसीलिये लूयाँग ने खास तौर पर सिर्फ शिकमी मझोले किसानों की एक सभा बुलाना तै किया।

"खेती सुधार की बात करते हैं! मैं तो पहिले से और भी बुरी हालत में हो गया!"

चचा कुआँगलिन बड़बड़ाये। "वे मेरी जमीन का भी बाँट कर रहे हैं और मेरे खिलाफ लड़ रहे हैं।"

चचा कुआंगलिन अकेले ही ऐसे आदमी नहीं थे जो इस तरह सोच रहे थे। कुछ शिकमी काश्तकार जिन्होंने जमीदार के खिलाफ लड़ने में असाधारण जोश और फुर्ती दिखाई थी, वे भी मुँह लटकाये हुए थे। उन्होंने देखा कि जिस जमीन को वे बरसों से जोतते आ रहे हैं वह भी बंटवारे के लिए फहरिस्त में दर्ज की गई है।

इन गुस्से में पारा चढ़ाये हुए किसानों की बातों को लूयाँग ने बड़ी शांति से सुना। फिर उन्हें पहले तो यह निर्विवाद सत्य बताया

कि जब तक जमींदारों को उनकी गद्दी से नहीं उतारा जाता और उनके लगान व सूद की भयङ्कर चक्की तोड़ी नहीं जाती तब तक कोई किसान चैन से अपनी जिन्दगी बसर नहीं कर सकता। यहाँ तक सब एक मत थे। इसके बाद उसने दूरदर्शिता से काम लेने की आवश्यकता बताई। हर बात का आधार किसानों की एकता होनी चाहिये। भविष्य में जिस बात से सब का भला होता हो उसके मुकाबले में हाल में होने वाले किसी व्यक्तिगत हित के लिये झगड़ा करना गलत बात है। यह बात भी सर्व सम्मतिसे मंजूर होगई। इसके बाद लूयाँग ने खेतों का मीजान लगाना शुरू किया और हरेक किसान को कितनी जमीन मिलेगी इसका ठीक ठीक हिसाब उनके सामने निकालने लगा। जमीन का बटवारा हो जाने के बाद हरेक की अपनी जमीन होगी और फिर उन्हें उतना अंधाधुंध लगान नहीं देना पड़ेगा जो कुल पैदावार का पचास से लेकर नब्बे फीसदी तक बैठता था। अब सरकार को फसल पर वाजिब भुगतान करने के बाद बाकी जितना बचेगा वह सब उन्हीं का होगा। साथ ही जमीन का जो थोड़ा बहुत हिस्सा बटवारे के लिये उन्हें छोड़ना पड़ेगा उससे उन्हें आदमी और बैलों की महनत व खाद वगैरह की बचत ही होगी। फलस्वरूप जो जमीन उन पर होगी उसमें वे अधिक महनत और ध्यान दे सकेंगे? इसके अतिरिक्त उनके पास पैदावार के दूसरे तरीके अपनाने का भी समय निकल सकता है।

अन्त में लूयांग ने खेती सुधार कानून के मुख्य सिद्धान्त का हवाला देते हुये बताया कि किसान की खुद काश्त, बटवारे का मूल आधार होती है। खुद काश्त वाले किसानों को अपनी अच्छी जमीन अपने पास रखने का पहला हक है। बटवारे के बाद पंचायती जमीन में से दो फीसदी, लगान पर उठाई जा सकेगी और उसमें पहला हक उन किसानों को होगा जो जोतते रहे हैं। ऐसे किसानों के लिये उन घरानों की जमीन भी जोतने को मिल सकेगी जिन पर श्रमशक्ति नहीं हैं, और जो चन्द बीघा जमीन लगान पर उठा कर अपनी गुजर बसर करते हैं।

इस प्रकार सभी खास खास बातों की सफाई कर दी गई। खेती सुधार दल और किसान सभा अब अधिक बड़े पैमाने पर प्रचार का काम करने लगे ताकि जिन थोड़े से किसानों के दिमाग में अब भी कुछ स्वार्थ भावना बाकी रह गई थी, निकल जाय।

अपने हाथ में चौपस्टिकों* का एक बण्डल लेकर सिनवू ने किसानों को दिखाया। उसमें से एक चौपस्टिक निकाल कर उसने झट से तोड़ डाली। फिर उसने चौपस्टिकों के पूरे बण्डल को एक साथ बीच में से तोड़ने की कोशिश की लेकिन व्यर्थ। इस उदाहरण से उसने किसानों को समझाया कि 'एकता ही शक्ति है।' और 'एक अकेले किसान की उन्नति असम्भव है, हम सब को मिलकर खुशहाल जिन्दगी की ओर आगे बढ़ना है।'

सिनवू ने इसके बाद जमीन के बारे में इस सिद्धान्त पर जोर दिया कि जो जितना अधिक गरीब और अशक्त है उसका उतना ही अधिक ख्याल किया जाय। साथ ही 'सब के साथ एक सा बर्ताव करने की गलती से बचा जाय। बूढ़ी मा ली की तरह जो विशेषतया गरीब और असहाय और फूचुआन की तरह जो विशेषतया श्रमशक्ति में औरों से बढ़े हुये हैं दो सौ फीसदी तक ज्यादा मिलना चाहिये।

इस समय लोगों को फूचुआन से मजाक करने की सूझी। एक ने कहा, "जरूर, जरूर। दुगनी जमीन मिलने पर फूचुआन अपना घर बसायगा, शादी होगी और बाल बच्चेदार बनेगा।" इस पर सब हंस पड़े और चुनसिंग की ओर देखने लगे। चुनसिंग शरमा कर बाहर चली गई।

तू यू चैन को जो उस समय अपने बच्चे को खिला रही थी यकायक एक विचार आया। सिन वू की ओर देखते हुए उसने कहा —"तुम्हारे शीघ्र ही एक बच्चा होगा, मेरी राय है हम उसके लिये भी एक खेत रखलें।" बहुत से किसानों ने इस विचार पर खुशी जाहिर की। लेकिन सिनवू ने दृढ़ता से इनकार कर दिया। दूसरे

*चीन में चौपस्टिकों (लकड़ी की सलाइयों) से खाना खाया जाता है।

लोग भी उतनी ही दृढ़ता से उसे जमीन देने पर तुल गये। अन्त में लू यॉंग खड़ा हुआ :—

"उसूलन जमीन का बटवारा फी आदमी होता है। मान लीजिये कोई आदमी बीमार है और मरने वाला है, पर जिस रोज जमीन का बटवारा हो रहा है उस रोज वह साँस लेरहा है तो उसे उसका हिस्सा जरूर मिलेगा। यही कायदा बच्चे पर भी लागू होता है। अगर वह अभी इस दुनियाँ में नहीं आया है तो हम उसे शुमार में नहीं ले सकते। इसलिये जमीन हो या न हो, यह इस बात पर निर्भर है आया बच्चा कितनी जल्दी करता है और जमीन के बटवारे के समय तक हमें पकड़ सकता है या नहीं।

इस पर सभी लोग बड़ी जोर से हंस पड़े और देर तक खिल खिलाते रहे।

इसके बाद दस्तकारों की समस्या पर गौर शुरू हुआ। इसमें ऐसे कारीगर थे जो पुराने अन्ध विश्वास की चीजें बनाते थे जैसे राँगे की मूर्तियां, धूप और मोमबत्तियाँ। इनकी ये प्रार्थना कि उन्हें किसान बना लिया जाय मन्जूर की गई।

अब खेती सुधार के बाद पैदावार का प्रश्न उठा। पहले तो गाँव के मुखिया ने यह ऐलान किया कि उनके पास जिला सरकार की मारफत सूबे की सरकार से यह सूचना आई है कि इस सूबे में इस साल १००००० 'माउ'* जमीन में अच्छा बीज प्रयोग में लाया जायगा। केन्द्रीय जनवादी सरकार की पाँच साला योजना के मातहत यह हो रहा है। खास तौर पर इसी काम में मदद करने के लिये चांगशा से पांच कार्यकर्त्ता आये हैं। किसान सभा के भिन्न केन्द्र और शाखाएँ इस आन्दोलन के लिये प्रचार करने की जिम्मेदारी लेगी। इन अच्छे बीजों को 'सुनहरी रानी का दाना' कहते हैं।

* 'माउ' एक एकड़ का करीब छटवाँ भाग होता है। एक एकड़ में ४८४० वर्ग गज होते हैं।

वैज्ञानिक प्रयोगों ने साबित किया है कि मौजूदा छोटे किस्म के चावलों के मुकाबले में यह बीज हर पहलू से बहतर हैं। नये बीजों से पैदावार में फी 'माउ' १०७ यूनिट नाज अधिक पैदा होगा । यह बहुत अच्छे किस्म का धान उगाते हैं और ताज्जुब तो यह है कि कीड़े या पौदों की दूसरी बीमारियाँ इन पर बहुत कम असर करती हैं। जो लोग इस नये किस्म के बीज का प्रयोग करना चाहते हैं उन्हें महीने भर के अन्दर अपना नाम रजिस्टर करा देना चाहिये। कातिक की फसल पर यह उधार चुकाया जा सकता है। किसान सभा की पैदावार समिति से रजिस्टर कराने का फारम मिल सकता है। दो तरह के बीज हैं: एक तो साधारण उन्नति के लिये, दूसरे खास तौर पर नमूना पेश करने के लिये। फरवरी के शुरू में उन्हें बीज मिल सकेगा। सिर्फ एक शर्त है वह यह कि सरकार से लिया हुआ उधार बीज मामूली गल्ले की तरह खाने के काम में नहीं लाया जाय ।

बराबर रकबे के दो खेतों में, स्थिति और जमीन की भिन्नता होने की वजह से कीमत में बड़ा फरक हो सकता है। इसके अलावा हुनान प्रान्त में चावल के खेत लम्बाई चौड़ाई में बड़े बेतरतीब होते हैं और उनको सही सही नापना बड़ा मुश्किल होता है। खेतों की औसत उपज ही उनके मापदण्ड का एक आधार था। इसी आधार पर किसान से उसकी जमीन की कीमत पूछी जायगी।

हर किसान के लिये सही तरीका यह बताया गया कि वह अपने हर खेत की पैदावार एक झण्डे पर लिख दे। जिस जमीन का वह खुद मालिक है उसका निशान लाल झण्डा था और जो जमीन उसने जमींदार या किसी धनी किसान से लगान पर ली हुई है उसका सूचक एक सफेद झण्डा था। वितरण विभाग के कार्यकर्त्ता आयेंगे और वे आख़िरी फैसला करेंगे।

झण्डे गाड़ने से पहिले किसानों ने अपनी अपनी परिवार मीटिंगें कीं। हरेक ने याद करने की कोशिश की और पिछले समय की ओर

ध्यान दिया कि उनकी जमीन में कितनी पैदावार होती थी। तब कागज के झण्डे पर वह तादाद, जो ठीक समझी गई, लिखदी गई। खेतिहर मजदूरों को भी बहुत सा काम करना पड़ा। उन्होंने बांस की खपच्चें तैयार कीं और उन पर दूसरों के लिखे कागज के झण्डे लगाये।

दूसरे रोज सुबह सिनलू गांव के खेतों में अगणित झण्डे हवा में फहराते दीख रहे थे। बहुतसे किसान अपने पूरे परिवार को इस झंडा समारोह के महान दृश्य को दिखाने के लिये खेतों पर ले आये। एक किसान झण्डा गाड़ते हुए यह कहते सुना गया—"अगर मेरे खेत की उपज की तादाद बहुत कम हुई तो फिर कैसे मैं चेअरमैन माओ को अपना मुँह दिखा सकूँगा ?" एक और किसान ने अपने सीने पर लगे हुए किसान सभा की मैम्बरी के चिन्ह की ओर इशारा करते हुए शपथ पूर्वक कहा कि उसने झण्डे पर बिल्कुल सही तादाद लिखी है। "अगर मैंने धोखा दिया हो तो मेरा यह लाल रेशमी बैज छीन लिया जाय !"

नौ बजे के करीब, सिनलू गाँव के चार जत्थे और कुछ जाँच करने वाले अफसर जो खास तौर पर इसी काम के लिये बुलाये गये थे वहाँ आये। उन्होंने एक एक खेत पर जाकर खुद निरीक्षण करना शुरू किया। हर जत्थे के साथ एक मंत्री था जिसके पास कलम दवात और एक कापी थी। जब किसी खेत के बारे में काफी गौर हो चुकने पर आखिरी तादाद निश्चित की जाती थी तो वह उसे पहिले झन्डे में और फिर अपनी नोट बुक में लिख लेता था। ज्यादातर तखमीना लगाने वाले (निरीक्षक) कार्यकर्ता किसान ही थे जिनकी उम्र पचास और साठ के लगभग थी। वे अपने पैरों के नीचे की जमीन को बड़ी कुशल आंखों से देखते जैसे कोई बूढ़ा ग्वाला किसी गाय की उम्र जानने के लिये उसके दाँत देखता है।

इसी दौरान में किसान सभा की ओर से एक नुमाइश की गई जिसमें 'संघर्ष के सभी फल' रखे गये जो जमीदारों से जब्ती में

हासिल हुए थे। पैंग यिन तिंग की पुरानी कोठी जब्तशुदा थी। फिलहाल नुमाइश का स्थान बना दी गई थी। एक लाल कपड़े पर यह लिखा हुआ था 'जमींदारों के रहन-सहन के तरीकों की नुमाइश।' यह कपड़ा उस सजे हुए बड़े कमरे के दरवाजे पर टाँगा हुआ था जिसमें पैंग यिन तिंग जापानी फौजी अफसरों का स्वागत किया करता था और जहाँ ब्रिग्रेडियर जनरल शिराकावा भी आ चुका था। कमरे के अन्दर किनारे किनारे लम्बे तख्तों पर परदेदार खिड़कियों के नीचे मंचू राजवंश के सोने चाँदी के तमगे, बौद्ध मूर्ति तथा सोने के आभूषण, गोल हाथी दाँत के पंखे, चाँदी के चम्मच और कांटे, चावल खाने के सुन्दर बर्तन आदि बड़ी बड़ी कीमती वस्तुएँ थीं। एक बढ़िया चौखूटा पलंग था जिसके एक तरफ एक लम्बी दराज बनी हुई थी जहाँ इत्र, वगैरा रखने की जगह बनी हुई थी।

किसान न तो इन सब चीजों के नाम जानते थे और न प्रयोग जानते थे। लेकिन फिर भी जो चीजें खुद स्तैमाल करते थे उनके मुकाबिले में इनको जाँचते हुए वे अपना क्रोध रोक न सके। उनके सीने में नफरत की आग भड़कती ही गई जैसे जैसे इन्होंने उस सारे कमरे में हरेक चीज को देखते हुए चक्कर लगाया। वे बार बार जमींदार को कोसने लगे। उनमें युलिएन भी थी, उसके लिये कोई चीज नई तो नहीं थी लेकिन वह भी कुछ ठहर कर सोचने लगी कि किस प्रकार इन सुन्दर चीजों का मालिक स पर जुल्म करता था।

इसी बीच कौमरेड चाओचीमिन ने नौ गाँवों के खेती सुधार दल के सब कार्यकर्त्ताओं को मन्दिर में जमीन के बटवारे सम्बन्धी मीटिंग के लिये बुलाया। पहिले तो वे उन तीन हलकों की हालत देखने गये जहाँ जमीन का बटवारा हो चुका था। तहकीकात करने पर मालूम हुआ कि तीसरे हलके में निस्बतन दूसरे दो हलकों से कम जमीन है। इस पर उन्होंने फैसला किया कि पहले हलके को २७ एकड़*

---

* यहाँ चीनी मापों की जगह पर करीब करीब बराबर के एकड़ और वर्ग गजों में, आंकड़े निकालकर दे दिये हैं।—अनु०

जमीन दूसरे हलके को देदेनी चाहिये और दूसरे को तीसरे के लिये २० एकड़ दे देनी चाहिये इस । प्रकार हर हलके में फी इकाई औसत जमीन १६४० वर्ग गज पड़ेगी।

यह लेवादेई मन्डल के आधार पर की गई। इसके बाद उन्हें इस बात की छानबीन करनी थी कि हर गांव पर कितनी जमीन है। मिसाल के तौर पर सिनलू गांव का औसत शिचियाओ से २३ वर्ग गज ज्यादा था और यूनहू गांव से ४० वर्ग गज ज्यादा था। इस लिये तीनों गांवों ने इकट्ठे होकर बराबर का मीजान लगाने पर विचार किया। यह कोरा पंडिताऊ काम नहीं था जिसमें ठीक ठीक जोड़ बाकी लगाने से समस्या हल हो जाय इस तरह के मीजान लगाने में किसानों के घरेलू सवालों का भी ध्यान रखना पड़ता है। अन्त में उन्होंने पुराने आजाद इलाकों वाले तरीके स्तैमाल किये। यूनहू गाँव जो शि चि आओ गांव से लगा हुआ था, अपनी जमीन के एक टुकड़े में से दो बराबर हिस्से करेगा और उतना ही सिनलू गांव अपनी जमीन का टुकड़ा निकाल देगा जहाँ वह यूनहू गाँव से मिलता है।

⁂ ⁂ ⁂ ⁂

खेती सुधार का काम शुरू हुए अब पचास रोज बीत चुके थे। हुलिंग मंडल के किसान सुबह जल्दी उठते थे और रात को देर से सोते थे। एक एक करके उन्होंने सब जमीदारों को पछाड़ दिया। वे इतना सब कुछ इसलिये हासिल कर सके चूंकि उन्होंने समझौता करने से इनकार कर दिया और लालच व धमकियों में नहीं आये। अखीर दम तक संघर्ष जारी रखा। निसंदेह पिछला महीना डेढ़ महीना बड़ा ही तूफानी रहा।

जमीन के बटवारे का जब समय आया तो मानो सारा हुलिंग मंडल जगमगा उठा। तूफान शांत हो चुका था, सूरज निकल आया था और हरेक के दिल खुशी से उछल रहे थे। आज से हर किसान महनत के पूरे फल स्वयं ही चखेगा। अब वह अपने कन्धे

सीधे करके अपनी जोती हुई जमीन की ओर इशारा करेगा और स्वाभिमान के साथ कह सकेगा–'यह मेरी जमीन है।' एक नई न्याय पूर्ण दुनिया बन गई है जिसमें अन्तरिक्ष को चीरते हुए एक सुनहरी सुबह फूट निकली है।

और तीन दिन और तीन रात तक पैंग के पूर्वजों के मन्दिर में खूब भीड़ लगी रही। वहाँ जो लोग इकट्ठे होते थे उनके चहरे खुशी और उम्मीदों से चमक रहे थे।

पैंग यू चांग, लू यॉंग, सिनवू और वितरण विभाग के दूसरे कार्यकर्त्ता सब एक मेज के चारों ओर बैठे जिसके ऊपर चैअरमैन माओ की तसवीर लगी हुई थी। अब १६५१ की जनवरी करीब करीब खतम हो चुकी थी और जमीन की सामन्ती प्रथा का अन्त होने में कोई कसर बाकी नहीं थी। उस शान्त मन्दिर में बर्फ जैसी सर्द हवा लोगों के गलों को छूकर निकल जाती थी। कुछ किसान अपने साथ घरों से सूखी घास ले आये थे। उन्होंने हौल के बीच में तापने के लिये आग जला ली। फूचुआन और लीतामिंग घास के गट्ठर के दोनों ओर बैठे हुये थे। जब भी आँच हलकी होती उसमें घास डाल देते। सूखे धान का भूसा आग में पड़कर कड़कता था और तिलंगे पैदा करता था। आग की लौ कभी एक दम ऊपर उठती और फिर नीची हो जाती थी। उसकी छाया किसानों के हंसते हुये चहरों से आँख मिचौनी खेल रही थी। पूरा वातावरण उल्लास, एकता और एक गहरे आनन्द से ओत प्रोत हो उठा था।

हर किसान आग के पास बैठा हुआ खड़ा होता और अपने परिवार के सदस्यों की कुल तादाद गिना देता (ज्यादातर उनमें से वहीं मौजूद होते थे)। फिर वह बताता उसके पास कितनी जमीन और हल बैल वगैरह हैं। तब वितरण विभाग अपना 'जमीन बंटवारे का रजिस्टर' खोलता और उसमें से उस किसान के हक के मुताबिक खेत चुना जाता। आम राय लेने के लिये लोगों से वहीं पूछ लिया जाता। वह किसान खुद भी अपने सुझाव वहीं दे सकता था। ज्यादा उम्र के लोगों को यह सुविधा दी गई कि जमीन जहाँ तक

हो उनके नजदीक हो। जिनके पास पानी के रहँट थे उन्हें ऊंची जमीन दी गई। जिनके पास हल बैल वगैरह नहीं थे वे रिपोर्ट कर सकते थे और नये माँग सकते थे। काम में आने वाले मवेशी तीन तीन, चार चार परिवारों के बीच में एक के हिसाब से बांटे गये। जानवर पर बहुत अधिक काम का बोझ न पड़े इसलिये तै किया गया कि एक बैल ज्यादा से ज्यादा साढ़े तीन एकड़ खेत जोते।

जब फूचुआन की बारी आई तो उसने अपना घास का बण्डल चुनसिंग को देते हुये कहा—"मेरा परिवार? एक—मैं खुद। जमीन?—बिल्कुल नहीं। हल बैल? एक भी नहीं।" लोगों ने जोर दिया कि उसे दुगना हिस्सा मिलना चाहिये। अन्त में उसे एक हल और एक बड़ा खेत बड़े कबरिस्तान के पास दिया गया जिसका रकबा ३३०० वर्ग गज था। तीन दूसरे परिवारों के साझे में उसे एक तीन साल का बछड़ा भी मिला जो पैंगऐरहू का था। रहने के लिये उसे पैंगऐरहू के पढ़ने लिखने का कमरा दिया गया।

जब लोग फूचुआन को इन चीजों के मिलने पर बधाई दे रहे थे और खुशियाँ मना रहे थे फूचुआन कुछ अजीब सा अनुभव कर रहा था, उसकी आँखें बार बार झपक जाती थीं। उसी समय युलिऐन दौड़ती हुई कमरे में आई। वह अपने कन्धों और बाहों पर छाये हुए ओलों को साफ करती हुई बोली, "सिनवू भाई, सिनवू भाई।" सिनवू ने, जो मेज पर झुका हुआ रजिस्टर में लिखा पढ़ी कर रहा था, अपना सिर उठाया।

युलिऐन ने जोर से कहा-"जल्दी घर जाओ!" हाँफते हुए उसका आधा मुंह खुला था, "जल्दी से दाई को बुलवाओ, तुम्हारी पत्नी को बड़ा दर्द है।"

सिनवू ने झटपट अपने कागज दूसरे कार्यकर्त्ता को सौंपे और भीड़ में से बाहर भागा।

तुयूचैन भी जल्दी से उठ खड़ी हुई। वह यह भूल रही थी कि अब बटवारे में उसका नम्बर आने ही वाला था। उसने अपना

बच्चा सास की गोदी में थमा दिया, और तेजी से सिनवू की मदद के लिये दौड़ी।

रात के दो बज चुके थे और अब भी जमीन के बटवारे का काम पूरे जोर शोर से जारी था। उसी समय चुनसिंग खुशबूदार गरम चावलों से भरी एक देगची ले आई जिसमें अभी भाफ निकल रही थी। उसे चौकोर मेज पर रखती हुई वह बोली, "तुम सब लोग अब थक गये होगे, कुछ थोड़ा जलपान कर लो।"

कार्यकर्त्ताओं ने यह मुनासिब नहीं समझा चूंकि वे जानते थे कि बूढ़ी मां ली के पास इतना खाने पीने को नहीं है कि वह दूसरों के लिये बचा सके। लेकिन बूढ़ी मां खुद ही बहुत जिद कर रही थी। अपनी बैसाखी पर झुकी हुई उसने आग्रह किया, "जाओ, हाथ मुंह धोकर खाओ, वरना हम लोगों को अच्छा नहीं लगेगा। यह चावल हमने खास तौर पर नई साल के त्यौहार के लिये बचा कर रखा था लेकिन दुनिया जब से शुरू हुई है तब से आज पहिली बार हम गरीब अपनी जमीन के मालिक हुए हैं। क्या यह सैकड़ों हजारों नई सालों से बढ़ कर खुशी का मौका नहीं है?"

आखिरकार उसका आग्रह मानना पड़ा। उनमें से एक मन्दिर के पीछे से कई तश्तरियां ले आया! चुनसिंग ने चावल परोसना शुरू किया।

इसी शोरगुल में तू यू चैन फिर आई। उसकी हाँफनी छूट रही थी। मेज के सामने ठीक से खड़ी हो जाने के बाद उसने जोर से कहा:—

"सब कोई ध्यान से सुनें। सिनवू की पत्नी ने दो बच्चों को एक साथ जन्म दिया है। एक लड़का और एक लड़की।" इस समाचार को सुनकर जो हर्षध्वनि हुई वह कानों को फाड़ देने वाली थी। तु यू चैन को लोगों ने चारों ओर से घेर लिया। वे सब और ज्यादा तफसील जानने के लिये उत्सुक थे।

इसके बाद खुशी से दमकता हुआ सिन वू आया। वह दायें और बायें लोगों की बधाइयाँ स्वीकार करते हुए अपना सिर झुकाता

आ रहा था। थोड़ी ही देर में वह फिर अपनी जगह पर पहुँच गया और रजिस्टर भरने के अपने पेचीदे काम में पूरी तरह उलझ गया।

⊛ ⊛ ⊛ ⊛

दूसरे दिन बहुत सवेरे सब किसान ओलों से भरे रास्ते को पार करते हुए अपनी अपनी नई जमीन देखने गये। खेत की मैड़ों पर खड़े होकर बरफ से ढके खेतों को उन्होंने देखा। अपने मन में उन्होंने हिसाब लगाना शुरू किया कि कितनी खाद और कितने बीज की जरूरत पड़ेगी? उन्होंने यह भी कल्पना करली कि बसन्त होते होते कैसी सुहावली हरियाली का समुद्र इन खेतों में छा जायगा। कुछ खेतों में तो निशान लग भी चुके थे। इनमें एक तरफ 'विजय' या 'आजादी' लिखा था और दूसरी ओर नये मालिक का नाम और तारीख दरज थी।

आजादी का जशन मनाने के लिये जो मीटिंग बुलाई गई वह तो किसानों की खुशी के इजहार की सब से बड़ी सीमा थी— यह दिन किसानों के लिये खुशी का सबसे बड़ा पर्व था। उसी शाम को दो बजे यह मीटिंग रखी गई। पैंग के पुरखों के मन्दिर के सामने एक बार फिर लोगों का जमघट हुआ। यह मीटिंग उन तीन गांवों की ओर से थी जो पहिली शाखा में आते थे। कई रोज तक इन गाँवों के कार्यकर्त्ता इस मीटिंग की तैयारी में लगे रहे थे। पंडाल पर दो चमकते हुए सुर्ख कपड़ों पर नारे लिखे थे। एक पर लिखा था, "जमीन और आसमान बदल दिये और जमींदारी सामन्ती प्रथा खतम करदी।" दूसरे पर लिखा था "अमरीका का मुकाबला करो और कोरिया को मदद दो। अपने घर और देश की रक्षा करो।" एक लम्बी तख्ती पर लिखा हुआ था। "सब जगह के किसान आपस में भाई भाई हैं।"

जलसा सुबह दस बजे के करीब शुरू हुआ, किसानों के झुंड के झुंड खेतों के बीच की झाड़ियों में होकर आते दिखाई दे रहे थे। लोग गाते बजाते और खुशी में मगन पैंग चू के नगले की

ओर आ रहे थे। जलूस के आगे आगे प्राइमरी स्कूल के बच्चे थे। उनमें से कुछ रंग बिरंगे कपड़ों में थे और अपने सिरों में तौलिया लपेटे हुए थे। वे ऐसे उछलते कूदते आ रहे थे मानों फसल के समय का नाच नाच रहे हों। उनमें से कुछ बालसभा के सदस्य थें और लाल टाई बांधे हुए थें। कुछ ने अपने चहरों में बेहद लाली और पाउडर लगाया हुआ था और अपने हाथ में लकड़ी की तलवारें लिए हुए थें।

सेविन स्टार स्लोप के दस्तकारों ने मजबूत लकड़ी की दो कुर्सियां बनाई थीं जो बाँसकी खपच्चों से एक साथ कस दी थीं और उन्हें लाल रेशम से ढक दिया था। हर कुर्सी में खूब रंग बिरंगी सजावट के साथ चार चार तस्वीरें जड़ दी गईं। पहली कुर्सी पर चेअरमैन माओ जे तुंग, सेनापति चू तेह, वाइस चेअरमैन ली शाओ ची; प्रधान मंत्री, चू ऐन लाई थे। दूसरी पर मार्क्स, ऐंगिल्स, लेनिन और स्तालिन।

कुछ लोग इन कुर्सियों को उठा कर चल रहे थें और बहुत से लोग तरह तरह के बाजे बजाते चल रहे थे।

मीटिंग शुरू होने से पहिले तीनों गांवों के किसान सभा के कार्य-कर्त्ताओं ने जमींदारों से इकट्ठे किये हुए उनके सब सनद, दस्तावेज वगैरह करीने से बंधे हुए बंडलों में मीटिंग के बीच में रख दिये। इनमें से बहुत से कागजों का रंग पीला पड़ चुका था चूंकि वे मंचूराज्य के समय में बने थें। इन दस्तावेजों में भिन्न भिन्न समय की मुहर लगी हुई थीं जिससे पता लगता था कि वे मंचू साम्राज्य, जंगखोर नवाबों, वैंगचिंग वाई की कठपुतली सरकार या कुमिनताँग के जमाने में तैयार हुए थे।

इन दस्तावेजों में से कुछ में बड़ी अन्यायपूर्ण शर्तें थीं। मिसाल के तौर पर एक 'ऊंचे दिमाग के समझौते' का अर्थ होता था कि तुम्हें दो बीघा जमीन की जगह तीन बीघा लिखना पड़ेगा और तीन का ही लगान चुकाना पड़ेगा। "निश्चित लगान" का अर्थ था लगान हमेशा वही चुकाना पड़ेगा चाहे फसल अच्छी हो या बुरी।

'लचीले लगान' का अर्थ था कि किसी खराब फसल पर शिकमी किसान, जमींदार को अपने घर दावत दे सकता था और अगर फसल देखकर जमींदार लगान कम करने का फैसला कर दे तो बड़ी अच्छी बात है। लेकिन यह सब उसी के मिजाज पर निर्भर था। और कभी कभी तो जितना लगान कम किया जाता था वह उस दावत के खर्चे को भी पूरा नहीं कर पाता था। यही सब बातें उन कागजों या जमींदारी सनदों में लिखी हुई थीं। जैसे ही किसान उन्हें देखते और इन बातों पर गौर करते, उनकी आँखें नफरत और दर्द से जल उठतीं।

एक पांच फीट लम्बी आग सिलगाने वाली बारूद की डोरी सेविन स्टार स्लोप के कारीगरों ने खास तौर पर इसी अवसर के लिये तैयार की थी। इस डोरी को सीधी दस्तावेजों के बंडलों के ऊपर लटका दिया गया।

जैसे जैसे लोगों की भीड़ और आती गई, ढोल, तबलों और दूसरे बाजों की आवाज भी जोर जोर से आने लगी। जो लोग नाटक खेलने वाले थे वे सब अपना 'मेक अप' कर चुके थे। शि चियाओ गाँव के किसान एक 'दैत्य का नाच' दिखाने वाले थे। वह भीमकाय दैत्य पचास फीट लम्बा था और उसका सिर सोने से मढ़ा हुआ था। उसके पंजे ऊपर और नीचे होते थे और उसके अन्दर तांबे के तार ऐसे चौकस लगे थे कि बिल्कुल वास्तविक मालूम पड़ता था। युनहू गाँव ने एक 'ढोल नाच' दिखाया—'तीसरे विद्वान अपनी चहेता के साथ'। जिसने तीसरे विद्वान का पार्ट खेला था वह अपनी दाढ़ी मूंछ ठीक से नहीं लगा कर आया था इसलिये वह बार बार खिसक पड़ती थी। वह दाढ़ी को बार बार ठीक लगाने की कोशिश करता था और लोग देख देखकर हंसते थे। सिनलू गांव वालों ने जो नाच दिखाया वह तुंगतिंग झील के किनारे वाले मछुओं की नकल थी। चुनसिंग गुलाबी कमीज पहने हुए इस नाच में एक खास पार्ट अदा कर रही थी। मोटा कपड़ा उसके दोनों हाथों से लिपटा हुआ था जो बाहर की ओर सुर्ख और अन्दर से सफेद था।

इस तरह उसने 'सीप' की शकल बनाई थी। वह एक नौजवान मछुए से दूर भाग रही थी। इस नौजवान मछुए का पार्ट युलिऐन खेल रही थी। यह नौजवान हाथ में जाल लिए हुये उसका पीछा कर रहा था और हाव भाव से जाल में उसे पकड़ने की कोशिश कर रहा था।

अन्त में राष्ट्रीय गान गाया गया। गाने वालों में आगे आगे मीठी आवाज वाले प्राइमरी स्कूल के बच्चे थे। इसके बाद सब ने झण्डे को और राष्ट्रपति माओ की तस्वीर को सलामी दी। इसके बाद प्रधान लोग, पण्डाल पर अपनी जगहों पर बैठे। तीनों गांवों की किसान सभाओं के सभापति, महिला सभा की प्रधान, रक्षक दल के कप्तान खेत मजूरों व गरीब किसानों के ग्रुप नेता और तीनों गाँवों के मुखिया, इस प्रधान मण्डल में शामिल थे। इन लोगों के अपनी जगहों पर बैठ जाने पर सभा की कार्यवाही शुरू हुई।

इस मीटिंग में किसानों ने बड़े जोश के साथ प्रतिज्ञाऐं लीं और वायदे किये कि वे अपने देश की पैदावार बढ़ायेंगे। बहुत से किसान अपनी जिन्दगी में पहली बार आम जनता के सामने बोलने खड़े हुये थे। ली चैन नान ने वायदा किया कि वह पैदावार बढ़ाने और खाई की मरम्मत करने में खूब महनत करेगा। लो शु मिन ने यह मांग की कि औरतों को खाई की मरम्मत के काम में बराबर हिस्सा लेने दिया जाय चूंकि जमीन के बटवारे में औरतों के साथ मर्दों के बराबर का सलूक किया गया है।

अन्त में फूचुआन ने हिम्मत की और वह स्टेज पर जा पहुँचा। थोड़ी सी परेशानी महसूस करते हुए उसने अपने एक हाथ में हैट मोड़ लिया और पूरी जनता के सामने सिर झुकाते हुए कहना शुरू किया :—

"मेरा तो हर समय मिट्टी से जूझने का काम रहता है, मैं बोलना क्या जानूं? लेकिन जब हम पानी पीकर प्यास बुझाते हैं तो कुआ खोदने वाले की याद आ जाती है, वैसे ही आज जब हम आजादी अनुभव कर रहे हैं तो कम्युनिस्ट पार्टी को कैसे भुला सकते हैं?

बगैर चेयरमैन माओ के, बगैर कम्युनिस्ट पार्टी के मैं आज कहाँ होता ? क्या आज भी मैं पैंगऐरहू के पैरों तलों नहीं पड़ा रहता ?"

किसानों ने अपने हाथ उठाते हुए आकाश गुंजाने वाली आवाज में नारे लगाये।

'कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद !'

'किसानों के रक्षक चेअरमैन माओ जिन्दाबाद !'

जब नारों की आवाज खतम हो गई तो फूचुआन ने फिर कहना शुरू किया :—

"अब मैं यह भली भांति समझ गया हूं कि जमीदार और साम्राज्यवाद एक दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते। पैंग परिवार को ही देखो—पैंग यिनतिंग और पैंगऐरहू ! क्या मेरे पिता की मौत उनके हाथों नहीं हुई ? लेकिन उस समय हमारी आँखों में पट्टी बंधी हुई थी। तब तक कम्युनिस्ट उस पट्टी को खोलने नहीं आ पाये थे। अब बिल्कुल दूसरी बात है। अगर अमरीका वही करना चाहता है जो जापान ने किया और हमें धकेलना चाहता है तो हम सब उठ खड़े होंगे और उनको कुचल देंगे चाहे वे अमरीकी साम्राजवादी हों या ताइवान के गद्दार !"

सिनलू गाँव के शान्त खेतों में दूर दूर तक एक बार फिर जोर की हर्ष ध्वनि और नारों की आवाज गूंज उठी। चीन के नये किसान के जागरण का गीत धरती और आकाश भी गारहे थे।

तभी एक झटाके की आवाज सुनाई दी, बारूद की डोरी में आग लगा दी गई और एक के बाद एक, जमीदारों की सनदों के बण्डल उसमें जलकर खाक होते गये। जमीदार वर्ग के यही वे हथियार थे जिनकी बदौलत वे किसानों का खून चूसते थे। अब वे सब राख हो चुके थे, और हवा उन्हें दूर उड़ा ले गई थी।

———

सात

सुख का पहला सवेरा

नई आजादी पाये हुए पैंग चू के नगले में एक कोमल मीठी आवाज में कोई गीत सा गा रहा था—लगातार दिल की धड़कन की तरह। यह सिनवू के दो नव जात बच्चों के रोने की आवाज थी।

दोनों बच्चे दो अलग झूलों में अपनी पूरी ताकत से किलकारी मार रहे थे। कभी एक के बाद दूसरा और कभी साथ साथ। वे अपनी लातें उछालते और इधर उधर करते मानो सारी दुनिया को यह शुभ सूचना देना चाहते हों कि 'नये चीन में आइंदा कभी भी सामन्ती शोषण नहीं होगा। नया चीन हमारा है।'

किसानों का बाहर भीतर आने जाने का तांता लगा हुआ था। कोई कुछ खाने को लाता, कोई खिलौने लाता, कोई सिर्फ आशीर्वाद देने आता। कोई सिर्फ बड़ी उत्सुकता के साथ यह देखने आता कि वे होशियार बच्चे हैं कैसे? होशियार तो वे थे ही क्योंकि ऐसे अच्छे अवसर पर पैदा हुए थे।

यद्यपि जमीन के बंटवारे का काम पूरा हो चुका था फिर भी सिनवू बजाय कुछ फुरसत लेने के और ज्यादा काम में जुट गया। बहुत सबेरे ही कोट पहन कर वह घर से निकल पड़ता। एक के बाद दूसरे ग्रुप के पास दौड़ता घूमता वह बहुत रात को घर वापिस लौटता।

संघर्ष के दौरान में चुनसिंग और युलिऐन को बड़े बड़े तजुरबे हुए और उनका ज्ञान बहुत बढ़ा। अब वे दोनों अपने 'भविष्य' के बारे में सोचने लगीं। चुनसिंग और फूचुआन की प्रेम कहानी सब को मालूम हो चुकी थी और लोगों ने उनसे मजाक करना छोड़ दिया था। पर युलिऐन और लीतामिंग के बारे में लोगों को पहली बार तब पता चला जब वे दूसरों के सामने सब कुछ भूल कर खलिहान के नाच में भाग ले रहे थे। ये दोनों ही जोड़े रक्षक दल के मैम्बर थे। इसीलिये सिनवू ने यह सुझाव रखा कि दोनों शादियाँ रक्षक दल के दफ्तर से ही की जाँय।

बूढ़ी माँ ली अपनी बेटी की शादी की बात जान कर बेहद खुश हुई। वह फूचुआन पर अभिमान करती थी। वह बड़ा महनती और विश्वस्तनीय था। फिर भी जब वह बात कर रही थी, उसके गालों पर आंसू बह रहे थे। सच है, चुनसिंग के चले जाने पर वह सूना सूना महसूस करेगी।

चूनसिंग ने अपनी माँ की परेशानी का सबब समझ कर उसे विश्वास दिलाया कि वह उसे अकेला नहीं छोड़ेगी। फूचुआन ने उससे वहीं रहने का वायदा किया है। चेअरमैन माओ की बदौलत हम सब आजाद हुए हैं इसलिये बूढ़ी माँ ली जैसे लोगों को अब अच्छी तरह जिन्दगी बिताने का पूरा हक है। फूचुआन खुद कमरों का इस तरह इंतजाम करेगा जिससे माँ और बेटी साथ साथ रह सकें।

जिस रोज आजादी का जलसा मनाया जा रहा था मन्दिर के अन्दर खेती सुधार दल और किसान सभा के कई कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर आपस में कुछ सलाह मशविरा किया। इस बात पर गौर किया गया कि किसानों के ख्याल से खेती सुधार के काम में किन किन कार्यकर्त्ताओं के काम में गलतियां रहीं? उनके काम करने के तरीके और रुख में क्या क्या खामियाँ थीं? वगैरह वगैरह। दूसरे रोज सुधार दल के सब साथी जिला दफ्तर में इकट्ठे हुए और वहाँ से चाओ चीमिन के नेतृत्व में सूबे के दफ्तर गये जहाँ कार्यकर्त्ताओं की एक बड़ी मीटिंग थी। यहाँ पर उन्हें अपने सब तजुरबों का निचोड़

निकालना था और दूसरों से विचार विनिमय करना था। इसके बाद उन्हें किसी दूसरे मंडल में सुधार काम करने जाना होगा।

इस प्रकार अब तक जो कुछ किसानों की आजादी और सफलता हासिल की गई थी उसको सुरक्षित रखने का और मजबूत बनाने का जिम्मा पैंगसिनवू जैसे कार्यकर्त्ता के कन्धों पर आ पड़ा जो खुद एक महनती किसान था।

२६ जनवरी की सुबह जब लू यॉंग जाने की तैयारी कर रहा था, सिन लू गांव के सभी किसान इकट्ठे हुए। वे उसके सम्मान में बाजे और ढोल बजा रहे थे। रक्षक दल के सभी मर्द औरतें, खलिहान के नाच दिखाने वाले, और लाल टाई बाँधे बाल सभा के बच्चे, फूल लिये हुए खड़े थे। इन सब के आगे फू चुआन एक लाल झण्डा लिए हुए था जिस पर लिखा था 'खेती सुधार में विजय'। किसानों का यह मजबूत, सुसंगठित और अनुशासित जलूस, टेलीफोन के लट्ठों के सहारे जाने वाली पगडंडी पर होकर सेविन स्टार स्लोप की ओर बढ़ा।

शुआंग चुआन नाव खे रहा था। नाव धीरे धीरे पीजिअन नदी के दूसरे किनारे पर शिहमा मंडल की ओर जा रही थी। लू यॉंग ने चलते चलते खाई की ओर देखा और फिर अपने दोनों हाथों का भोंपू बनाते हुए किनारे खड़े किसानों से कहा :—

"उन खाइयों को ठीक कर लेना और अच्छी फसल पैदा करना; यह मत भूलना कि इस साल तुम्हारा अपना खलिहान होगा।"

इसके जवाब में वहाँ खड़े सभी किसानों ने कहा कि वे ऐसा ही करेंगे। लो शु मिन ने सभी की राय की नुमांइदगी करते हुए तेज आवाज में कहा :—

"कातिक की फसल पर आप हमारे यहाँ आकर हमारे नये चावल का स्वाद लेना। आपकी दावत है कामरेड लू।"

नाव करीब करीब दूसरे किनारे पर पहुंच चुकी थी। यह देखकर कि किसान अभी वापिस नहीं जा रहे हैं, लू यांग ने खूब जोर से कहा, "अपनी किसान सभा को मजबूत बनाना मत भूलिये।"—

नदी के दूसरे किनारे तक आवाज टकरा कर फिर उसके पास वापिस सुनाई दी।

उसी शाम को सिनवू ने और गाँव के मुखिया पैंग चू तांग ने सिनलू गांव किसान सभा के पदाधिकारियों और कार्यकर्त्ताओं की बैठक बुलाई। मुख्य समस्या थी 'बाढ़ से होने वाले नुकसान।' इस पर चचा कुआँगलिन, तु यू चैन और लो युंग लिऐन तफसील से बोले। चचा कुआंगलिन ने निजी तजुर्बे से बताया कि किस प्रकार उनके परिवार को सालों तक 'पानी के जुल्म' का शिकार होना पड़ा है। खेतों में जिस समय पौदों के कुल्ले फूटने शुरू होते वैसे ही बाढ़ आना शुरू हो जाती। खाई के किनारे टूट जाते और पानी बह कर चारों ओर फैल जाता। सब पौदे उसमें डूब जाते। लो युंग निऐन की जमीन एक ऊंचे टीले पर थी जहाँ पानी की सप्लाई उसके चाचा लोपीजंग के ऊपर निर्भर करती थी। जिस साल सूखा पड़ता था उसे अपने चाचा से पानीका इंतजाम करवाना पड़ता था। उसके बदले जो कीमत होती उसकी जमानत में हरी पौद गिरवी रखदी जाती। अक्सर होता यह था कि जब कातिक की फसल पक कर तैयार होती तब तक सूद दर सूद कर्ज बढ़ता जाता। यहाँ तक कि सारा का सारा अनाज जिस पर उसने अपना गाढ़ा पसीना बहाया था, लोपी जंग के घर पहुंच जाता।

अब गाँव के मुखिया ने सारे सूबे के लिये कातिक की फसल की योजना बताई। पहला और मुख्य काम तो बांध और खाइयों को दुरुस्त करना था और इस काम को बसन्त से पहले पहले पूरा कर लेना था। उन्होंने यह समझाया कि किस प्रकार दूसरे जिलों में जिनमें खेती सुधार हो चुका है, हर परिवार ने अपनी पैदावार की योजना खुद तैयार की है। इसके बाद इस बारे में बातचीत शुरू हुई कि वे कैसे अपनी पैदावार की योजना तैयार करें।

सब कोई इस बात से सहमत थे कि किसान सभा की पैदावार-समिति के मातहत दो उप समितियां बनाई जाँय। यह गाँव के चार छोटे ग्रुपों के आधार पर हों; एक तो खाई की मरम्मत के लिये और

दूसरी बाँध वगैरह तैयार करने के लिये। इस तमाम काम में जो खर्चा पड़ेगा उसका सत्तर फीसदी सब किसान मिलकर बर्दाश्त करेंगे। यह इस आधार पर वसूल किया जायगा आया कौन किसान उससे कितना फायदा उठाता है। हरेक के निजी खेत को जिस दरजे फायदा होगा उतना ही उस किसान से वसूल कर लिया जायगा। खेत मजूर और गरीब किसान अपने शारीरिक श्रम से चुका सकेंगे। तीस फीसदी कमी के लिये वे सरकार से कर्जे की प्रार्थना करेंगे।

सूबा कमेटी ने खाइयों की मरम्मत के काम की पूरी योजना पहिले से ही तैयार कर रखी थी। सिनलू गाँव के जिम्मे सेविन स्टा स्लोप से लेकर शाहो नदी तक का इलाका था जो लम्बाई में करीब चार मील बैठता था। चौड़ाई में ४॥ फीट से लेकर २० फीट तक और गहराई में १० फीट से लेकर ३४ फीट तक था। मुकामी उपसमिति का काम था कि वह गाँव के चार ग्रुपों में काम का बटवारा करदे।

गाँव के अन्दर भिन्न आकार के करीब ३३ तालाब थे। उनमें से ज्यादातर खराब हालत में थे जिनकी मरम्मत बहुत जरूरी थी। यह तै हुआ कि इस साल कुछ खास तालाब छांट कर उन्हीं की मरम्मत की जाय। ऐसे तालाबों की मरम्मत की जाय जिनमें सबसे ज्यादा पानी आता है और जिनकी मरम्मत फौरन जरूरी है। अगर समय और श्रम बचे तो ये तालाब तैयार किये जाँय; मिसाल के तौर पर जो तालाब गाँव में सबसे ज्यादा इलाके को पानी देता था वह था 'हौसेंनैक तालाब'। यह बड़े कबरिस्तान के पास था, लेकिन बहुत दिनों से उसमें से पानी निकलना शुरू हो गया था। कोनों पर जो पत्थर लगे हुए थे, वे जगह जगह से हट गये थे और बिल्कुल जर्जर हो चुके थे। जो मुख्य खम्भा था वह पिछली साल बाढ़ में गिर गया था। जो तख्ता पानी को रोकता था वह भी गिर चुका था। इसलिये इस तालाब को दुरुस्त करने की तुरन्त जरूरत थी। इन कामों में काफी महनत की भी जरूरत थी।

दूसरे रोज बहुत सबेरे ही जब कि खेतों में अभी कुहरा पड़ रहा था, सिनलू गांव के किसान, जवान और बूढ़े अपने अपने ग्रुप

नेता की रहनुमाई में ढाल के पास की खाई की ओर बढ़े जा रहे थे। कोई कुल्हाड़ी लिये हुए था तो कोई फावड़ा। कोई मिट्टी ढोने की डलिया लिये था और कोई हाथ से चलने वाली ठेला गाड़ी। सर्दियों का सूरज बरफ की चांदी से ढके हुलिंग मंडल पर अपनी मुस्कराहट बखेर रहा था। रास्ते में बरफ पर उन्होंने मैंगपाई नाम के जानवर के पैरों की छाप पड़ी देखी। रास्तेभर आराम आराम से चलते हुए किसान लोग आपस में गपशप कर रहे थे, हंसी मजाक कर रहे थे और गीत गा रहे थे।

"नहीं माँ ली! तुम्हें इस उमर में अब काम करने की जरूरत नहीं है। चुंग सिंग अकेली ही काफी है।" यह बात उसके श्रम करने की भावना की तारीफ में कही गई थी न कि उसे काम से निरुत्साहित करने के लिये।

बूढ़ी मां ली की एक बाँह में खाने की पोटली लटक रही थी। उसने मुड़कर कहा—"चुंगमिंग के अपने हाथ पैर हैं; मेरे अपने हैं। वह मेरी जगह कैसे ले सकती है? मैं अब पचास साल से ऊपर हूं पर आज पहली बार अपने लिए खाई की मरम्मत के लिये जा रही हूं।"

शहर से इस काम के लिये जो दल आया था उसने पहिले से ही खाई पर खड़िया और पेड़ों की टहनियों से निशान लगा दिये थे कि उसे कितनी गहरी और चौड़ी बनाना है। ये सब योजना पूरे सूबे भर के लिए पहिले से ही तैयार कर ली गई थी। जैसे ही किसान आये, सिनवू ने सभी ग्रुप नेताओं को बुलाया और काम बांट दिया। कुछ किसानों ने खाई के अन्दर जमीन खोदना शुरू किया, कुछ ने उस निकली हुई मिट्टी को डलियों से भर भरकर बाहर निकालना शुरू किया। ऊपर और नीचे सभी ओर किसान पूरी महनत से जुट पड़े थे। हालांकि काफी सरदी पड़ रही थी फिर भी वे पसीने में सराबोर हो रहे थे। जैसे जैसे जमीन के चौकोर हिस्से गहरे खोदे जा रहे थे, उसकी निकली मजबूत, ठोस सर्द मिट्टी खाई की जरूरत के मुताबिक ठीक जगह पड़ती जा रही थी। इस तरह एक सर्द नीले आसमान के नीचे खाई बनती चली जा रही थी।

यह काम चलता रहा, चलता रहा यहाँ तक कि सूरज पहाड़ी के पीछे छिप गया। ग्रुपों के नेताओं को तीन बार बिगुल बजाना पड़ा तब कहीं किसानों ने अनिच्छा पूर्वक काम बंद किया।

"जब मुकामी जालिमों को खतम किया जा चुका है तो पानी के जालिम को बस में करना तो बड़ा सहल है।"

चचा कुआंगलिन ने अपने कंधे पर फावड़ा रखते हुए कहा। इसके बाद हर किसान अपने अपने ग्रुप में जा शामिल हो गया और सब लोग अपने घरों को लौट दिये। अब चाँदनी निकल आई थी। चाँद की बढ़ती हुई रोशनी में बार बार कोई न कोई किसान मुड़कर ऊँची उठी हुई मैड़ों वाली खाई को अभिमान और खुशी के साथ देख लेता।

वापिसी रास्ते में वे लोग इस विषय पर बातचीत कर रहे थे कि अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए लोगों को कैसे उत्साहित किया जाय।

⊛ ⊛ ⊛ ⊛

उस शाम को लो प्राइमरी स्कूल का क्लास रूम रोज से ज्यादा भरा हुआ था। सात सात आठ आठ साल के बच्चे बड़े बड़ों के साथ कंधा रगड़ रहे थे। यद्यपि पैंग कू चाँग के दिमाग में बहुत से असली सवाल भरे हुये थे लेकिन वह इस बात से भी बेखबर न था कि उस गाँव के किसानों की सांस्कृतिक आजादी के लिहाज से वह एक ऐतिहासिक दिन था।

जब ली तामिंग ने शिकायत की कि मुकामी सिनुआ बुकसैलर के यहाँ अब एक भी 'किसान मजदूरों की प्रवेशिका' नहीं बची है तो उसने हमदर्दी के साथ अपना सिर हिलाया। उसके इस प्रकार के भाव का मतलब था कि 'सब ठीक हो जायगा।'

"किसान साथियो!" पैंग कू चाँग के इन शब्दों के साथ शोर गुल बिल्कुल बन्द हो गया, "आप लोगों ने सारे दिन खाई बनाने में बड़ी महनत की है इसलिये, आप लोग थक गये होंगे। क्या कोई मुझे समझा सकता है, आप फिर भी पढ़ने के लिए इतने उत्सुक क्यों हैं?"

वे बहुत से कारण ढूँढ़ सकते थे। एक ने कहा, उसे पहिले अनपढ़ा होने की वजह से धोखा खाना पड़ा और अब वह ऐसा नहीं होने देगा। दूसरे ने कहा कि वह तख्ती की खबरें पढ़ना चाहता है। किसी ने बूढ़ी माँ को छेड़ते हुए पूछा, "तुम अब पढ़ कर क्या करोगी, थोड़ी सी जिन्दगी के लिये ?"

अपने पिचके हुए गालों को फुलाती हुई बूढ़ी माँ बोली, "जब मैं चुनसिंग को साथ लेकर दरवाजे दरवाजे भीख मांगती थी तो कई मर्तबा उन प्राइवेट स्कूलों के अन्दर झांकती थी जहाँ जमींदार के बच्चे तरह तरह की बातें सीखते थे। वे जमींदारों के दिन थे। अब दुनियाँ हम किसानों की है। हमें पढ़ना भी चाहिये और नई बातें सीखनी भी चाहिये। क्या मैं गलत कह रही हूं ?"

सब लोगों ने उसकी बात पर खूब तालियाँ पीटीं और खुशी जाहिर की।

अन्य किसानों ने भी बताया कि किस प्रकार अशिक्षित होने की वजह से उन्हें परेशान होना पड़ा है और शर्मिन्दगी उठानी पड़ी है। जब जमींदार उनसे किसी तरह का इकरार नामा लिखवाते थे तो वे कुछ समझ नहीं पाते थे। कुछ लोग उन लौटरी की गोलियों को नहीं पढ़ सकते थे जिनकी बदौलत उन्हें जबरदस्ती कुमिंतांग की फौज में भरती होना पड़ता था। फुचुआन भी बोला :—

"अगर हम पढ़ना नहीं सीखेंगे तो अखबार कैसे पढ़ेंगे और अफवाहों की झूठ सच का पता कैसे लगायेंगे ?"

यह देखकर कि आम भावना खूब जोरों पर है, पैंग कू चाँग ने कहा "किसान साथियो ! आपकी पढ़ने की मांग बिल्कुल स्वाभाविक और उचित है। असल में दरजों और शिक्षकों की कठिनाई है। हमारा गांव काफी बड़ा है जिसमें करीब सात सौ आठ सौ की आबादी है पर हमारे पास सिर्फ दो प्राइमरी स्कूल हैं। इसमें शक नहीं कि सरकार सब के लिये मुफ्त शिक्षा का प्रबन्ध बहुत जल्द करेगी, लेकिन सवाल यह है कि हम इस समय क्या करें ?"

थोड़ी देर के लिये सब खामोश थे और सन्नाटा छा गया था। हर कोई सोचने लगा।

"मुझे जमीन के बंटवारे में जो मिला है उसमें से २५ सेर गल्ला देने को तैयार हूं ताकि हम पैंग चू के नगले में भी एक स्कूल खोल सकें।"

बोलने वाली और कोई नहीं, तुयूचैन थी जो अपने बच्चे को हमेशा की तरह गोद में लिये हुए थी। उसने एक अर्थ भरी निगाह से अपने (भूतपूर्व नाविक) पति की ओर देखा जिसने फौरन ही उसके प्रस्ताव की ताईद करते हुए हाथ उठाया चूंकि वह खुद अशिक्षित होने का दंड भुगत चुका था। अब क्या था। शुरुआत हो चुकी थी। पाँच सेर चचा कुआँगलिन ने, कुछ बूढ़ी मां ने और कुछ फूचुआन ने देने का वादा किया। पैंगचू के नगले के किसानों की ओर से थोड़ी ही देर में करीब २० मन गल्ले का जोड़ हो गया। इसके बाद ली गार्डिन (दूसरा नगला) वालों का नम्बर आया।

लो युंग निएन के सुझाव पर लो के बड़े नगले और सेविनस्टार स्लोप के किसानों ने भी-जहाँ पर कि उनके अपने स्कूल थे—अपने किसान भाइयों की मदद के लिये थोड़ा थोड़ा गल्ला देने का आश्वासन दिया।

इसी अवसर पर महिला ग्रुप की प्रधान लोशुमिन के दिमाग में एक विचार आया। गाँवों में 'स्कूलों के लिये' काफी जमीन अलग रखी जाती थी पर जमीदार उसे हड़प लेते थे। वे लगान लेते थे और स्कूल नहीं बनवाते थे। जमीन के बंटवारे के समय सब पंचायती जमीन पूरे तखमीने में जोड़ ली गई थी और सिर्फ दो फीसदी पंचायती जमीन किसान सभा ने रिजर्व रखी थी। इसके अतिरिक्त बहुत सी सोटें और लकड़ी के तख्ते जमीदारों के यहाँ जब्त किये गये थे। हमारे गांव में बढ़ई भी हैं और राज भी हैं। किसान सभा क्यों न जमीन देदे और इमारत का सामान देदे? फिर किसान अपनी महनत दें। और इस तरह बड़ी आसानी से एक स्कूल बन जायगा।

सबने इस बढ़िया सुझाव की तारीफ की। शाम को तारों की रोशनी में जब किसान घर वापिस लौट रहे थे तो दोनों नगलों के लोग बड़े जोरों से अपने स्कूल की इमारत की रूपरेखा पर बहस करते जा रहे थे। ऐसा लगता था मानो स्कूल की इमारत, अब कोरी कल्पना न होकर, उनकी आंखों के सामने असलियत में बन कर खड़ी हो गई है।

⍟ ⍟ ⍟ ⍟

जब फूचुआन और चुनसिंग व लीतामिंग और यूलिऐन की शादी के बारे में रक्षक दल की बैठक में बातचीत हुई तो सभी एक राय थे कि ये दोनों जोड़े सिनलू गाँव के किसानों की आजादी के सच्चे प्रतीक थे। दोनों दूल्हे जमींदार के यहाँ खेत मजूरी किया करते थे और अपने अपने मालिक की झिड़कियाँ खाया करते थे। दोनों दुलहिनों में से एक तो पैंगऐरहू की नौकरानी रह चुकी थी और दूसरी सामंती समाज का शिकार बनने ही वाली थी; मालूम हुआ कि वह तपैदिक का मरीज़ जिससे चुनसिंग की शादी तै थी, हाल ही में मर गया।

बारहवें चाँद की उन्तीस तारीख को दोनों की शादी का मुहूर्त रखा गया। यह शादी मंडल सरकार के दफ्तर में होना तै हुई। रक्षक दल ने अपनी पूरी सजधज और ताकत के साथ इस समारोह को सफल बनाने का निश्चय किया।

जब मीटिंग खतम हुई तो दोनों ही जोड़े बड़े प्रफुल्लित थे। पुराने समाज में उन्हें हमेशा दूसरों की धमकियाँ और गालियां मिलती थीं। पर अब उनके सामने एक नई जिन्दगी का दरवाजा खुल गया था। वे भलीभांति जानते थे कि यह सब कुछ कम्युनिस्ट पार्टी और उसके नेता माओ जे तुंग के बगैर कभी भी सम्भव न था। इसलिये उन्होंने अपने सर्वोच्च नेता और उद्धारक चेअरमैन माओ जे तुंग को एक खत लिखने का निश्चय किया जिसमें वे उनको संघर्ष के दौरान में मदद करने के लिये धन्यवाद देंगे। इसके अलावा वे चारों, अपने भविष्य के कामों की योजना भी बतायेंगे। बात तो बड़ी हिम्मत

की थी पर उन्होंने महसूस किया कि उन्हें यह जरूर करना चाहिये।

अब बूढ़ी मां ली और चुनसिंग, पैंग ऐर हू वाले मकान के एक हिस्से में रहने लगे थे। फूचुआन, चुनसिंग और बूढ़ी मां तीनों ही सबेरे जल्दी उठकर खेत पर काम करने जाते। वहाँ खेत गोड़ते, खाद डालते, और धान की क्यारियां दुरुस्त करते। इसके बाद वे खाई की मरम्मत करने जाते।

दावत होने से पहले किसान सभा ने दोनों जोड़ों को छुट्टी दी कि वे जाकर अपने लिये शादी सम्बन्धी जो चीजें खरीदना चाहें खरीदें। चुनसिंग और फूचुआन दोनों ने ही जमीन बंटवारे के दौरान में मिली हुई चीजों को नकदी में बदल लिया था। अब व खुशी खुशी सेविन स्टार स्लोप की ओर गये।

अब उस बस्ती की शकल ही कुछ और थी। पहले तो वहाँ किसान सिर्फ अपना माल बेचते हुए नजर आते थे पर अब बीसियों किसान सौदा खरीदते हुए दिखाई पड़ रहे थे। अपने हाथों में टोकरी या थैले लिये हुए वे नये साल के लिये मछली व दूसरी खाने की चीजों का सौदा कर रहे थे। 'बसंत जलपान घर' में जिसमें पहले सिर्फ जमीदार ही खाया करते थे, अब सस्ते दामों पर खाना देने का विज्ञापन लगा हुआ था जिससे किसान भी उसमें खाना खायें।

लुहार की दुकान पर नये नये औजार दिखाई पड़ रहे थे और उन पर औंर्डर देने वालों के नाम लिखे हुए थे। रुई की चार दुकानों पर सिआँगतान प्रान्त से आई हुई छै रुई धुनने की मशीनें काम कर रही थीं। सारी बस्ती में आर्थिक उन्नति और खुशहाली का वातावरण छाया हुआ था। जब फूचुआन और चुनसिंग दोनों चाउ जुई सिआँग के बिसात खाने में कुछ बर्तन, तौलिया वगैरह लेने घुसे तो उन्होंने देखा कि दूसरे गांवों के भी बहुत से लोग सौदा खरीदने घूम रहे हैं। चुनसिंग ने सोचा, 'बड़े ताज्जुब की बात है! क्या सभी की शादी हो रही है?'

बस्ती के पश्चिमी सिरे पर भी एक नई दुकान खुली थी। एक साइन बोर्ड लोगों को यह बताता था कि यह 'हुनान ट्रेड कम्पनी' की

चलती फिरती शाखा है। इस सरकारी दुकान पर बेचने वाले लोग हलकी नीली वरदी पहने हुए थे। पुराने समय में किसानों को अपना कच्चा माल व्यापारियों के हाथों बहुत सस्ती कीमत पर बेच देना पड़ता था और फिर उन्हीं से कारखाने का माल बहुत ऊंची कीमत पर खरीदना पड़ता था। यह 'चलती फिरती शाखा' किसानों से सूअर के बाल, अंडे, चाय और तम्बाकू की पत्ती खरीदती थी। चूंकि किसी दरमियानी मुनाफाखोर का सवाल नहीं था, यह सरकारी दुकान किसानों को अच्छी कीमत अदा करती थी। साथ ही यह किसानों को उनके काम के खेती के सब औजार बेचती थी। इसमें नये किस्म के हल और दूसरे औजार होते थे; साफ रुई और वैज्ञानिक खाद वगैरह उपयोगी सामान होते थे जो काफी सस्ती कीमत पर सप्लाई किये जाते थे।

फूचुआन और चुनसिंग को सबसे ज्यादा खुशी तो पढ़ने के लिये 'प्रवेशिका' पाकर हुई। यह उन्हें सिनुआ पुस्तक भंडार की देहाती शाखा में मिल गई। और चीजों के साथ उन्होंने कुछ कौपियाँ और दो पैंसिलें लीं। सबसे शानदार चीज उन्होंने चेअरमैन माओ का एक रंगीन चित्र लिया।

ली ता मिंग और युलिऐन शिचियाओ गाँव के सहकारी भंडार में गये थे। वे भी अपने साथ कई चीजों का बण्डल लेकर लौटे। इन लोगों से किसानों को पता चला कि दो हजार से ऊपर खेत मजूर, गरीब और मझोले किसान सहकारी भंडार में शामिल हो गये हैं और जब खेती सुधार पूरा हो जायगा तब तक वे भंडार मंडल के पूरे नौ गाँवों में फैल जायेंगे। जमीदार और धनी किसान इसमें शामिल नहीं किये जायेंगे। बाकी सब लोग हिस्सा ले सकेंगे। एक शेअर की कीमत सिर्फ पाँच सेर नाज होगी। पूरी अदायगी किश्तों में की जा सकेगी। युलिऐन ने बताया कि साबुन, मोमबत्ती, तेल, हाथका बुना कपड़ा और नमक जैसी वस्तुएं काफी सस्ती मिलती हैं। कुछ किसानों ने टिप्पणी करते हुए कहा कि 'अगर सस्ती और अच्छी चीज लेनी है तो सहकारी भंडार ही जाना चाहिये।'

मंडल किसान सभा ने हल, बैल, और श्रमशक्ति की कमी महसूस करके एक आम नारा दिया कि लोगों को दुगुनी महनत के साथ खाद फैलाने, गुड़ाई, जुताई और नराई आदि कामों में जुट जाना चाहिए। सिन लू गाँव की पैदावार कमेटी ने 'आपसी सहायता गुट' बनाये। हल, बैल वगैरह की कमी को उन्होंने संगठित रूप से हल किया। उत्तरी चीन के तजुरबों से उन्होंने फायदा उठाया। तरीका यह था कि हर परिवार को बाँस की सौ सौ खपच्चें दी गईं। एक आदमी की पूरी महनत दस खपच्चों के, और आधी महनत पाँच खपच्चों के बराबर मान ली गई। पूरी महनत के लिए छै यूनिट गल्ला, मजूरी तै हुई। जानवर की महनत आदमी से साढ़े चार गुनी अधिक मानी गई। हर पाँचवें दिन भुगतान कर दिया जाता था और महीने के अखीर में पूरा हिसाब साफ कर दिया जाता था।

खाद की बढ़ती हुई माँग का इन्तजाम करने के लिए पैदावार समिति ने एक बड़ा कारखाना खोलने की योजना बनाई। इसके लिए उन्होंने चन्दे से २०० मन नाज इकट्ठा करने का फैसला किया।

काली तख्ती पर खबरें लिखी जाती थीं। सिनलू गाँव के हर परिवार ने अपनी अपनी बनाई पैदावार योजना घोषित की। तन्दुरुस्त जवान लोग खाई की मरम्मत करेंगे और अपना खेत खुद जोतेंगे। अगर फिर भी समय बचा तो वे दूर पहाड़ी पर जायेंगे और वहाँ परती जमीन को तोड़ने का काम करेंगे। बूढ़े लोग नराई करेंगे, पत्तियाँ बीनेंगे, खाद जमा करेंगे और उस ढंग से खेतों में फैलायेंगे, बूढ़ी औरतें सूत कातेंगी, जूते और चप्पलें बनायेंगी और मुर्गी के बच्चों और सूअरों को खाना खिलायेंगी।

लोगों को इस बात का बड़ा ताज्जुब था कि फूचुआन और लीतामिंग के लिए कोई पैदावार की योजना नहीं बनी हालाँकि उनकी गिनती सबसे अच्छे कार्यकर्त्ताओं में थी।

बहुत से किसानों को पैदावार की योजना बनाते बनाते यह सूझा कि दोनों नये दम्पतियों की तरह वे भी क्यों न चेअरमैन माओ को

अपनी आजादी के बारे में लिखें? हमारी बहतर और खुशहाल जिन्दगी और हमारे भविष्य की योजनाएं-यह सब जरूर ऐसी बातें हैं जो हमें उन्हें बतानी चाहिये।

स्कूल मास्टर पैंग कू चांग ही वह व्यक्ति था जिसके पास ज्यादातर किसान अपनी इस मंशा को लेकर पहुँचते। हर रोज करीब एक दर्जन 'खत' उसे मिलते जिनमें से अधिकतर वास्तव में रद्दी कागज ही थे। इन पर मुश्किल से एक या दो वाक्य पढ़े जाने लायक थे। कागज और लिखावट दोनों में ही अलग अलग खत आपस में जमीन आसमान का अन्तर रखते थे। किसी किसी में घरेलू बातों का बड़ा विस्तार से वर्णन था। मिसाल के तौर पर कुछ ने लिखा था कि अब वे अपनी नई जमीन पर क्या बोयेंगे और किस प्रकार उनके घरेलू झगड़े, खास तौर पर, सास बहू और नन्द भौजाई के—जमीन के बंटवारे के बाद शांत हो गये हैं।

चचा कुआँग लिन ने बड़ी बुद्धिमानी दिखाई और कहा कि सबको मिल कर पैंग कू चांग से कहना चाहिये कि वे एक ऐसा सम्मिलित खत तैयार कर दें जिसमें सब की बातों का निचोड़ आ जाय। मेज पर पड़े खतों के ढेर देखते हुए उसने कहा:—"चीन में हमारे जैसे लाखों गांव हैं, अगर मैं भी एक खत लिखूं और तुम भी एक खत लिखो और हर आदमी एक खत लिखे तो चेअर मैन माओ सब खत पढ़ते पढ़ते थक नहीं जायेंगे?"

सब लोगों को यह बात पसंद आई। इस प्रकार रात के स्कूल में 'शामिल खत' लिखना भी आम दिलचस्पी का विषय बन गया।

हर किसान ने खड़े होकर बताया कि वह क्या लिखना चाहता है और पैंग कू चाँग हर बात जल्दी जल्दी नोट करता गया।

"कहिये कि पहिले जो लोग पढ़ लिख सकते थे वे उंगलियों पर गिने जा सकते थे; और अब हम में से अधिकतर सौ से ज्यादा शब्द जानते हैं।

"कहिये कि इस साल 'अन्न पूर्णा दिवस' पर हमारे पास बहुत बढ़िया चावल था। इस साल हम दो नये चादरे भी खरीद

लाये हैं। पहले तो हमारे पास सिर्फ सूखे आलू हुआ करते थे जिनसे हम नया साल मना लेते थे और सन्तोष कर लेते थे। तब हमारे कपड़े बिल्कुल फटे फटाये और पैबंद लगे होते और सारे परिवार के पास केवल एक लिहाफ होता था।"

फूचुआन ने कहा, "महरबानी करके यह ध्यान रखिये कि चेअरमैन माओ को मेरी बात लिखने से न रह जाय कि बगैर खेती सुधार के मैं शादी नहीं कर सकता था। हमेशा कुंआरा ही रहता।"

"और चुनसिंग!" किसानों ने बड़ी हर्ष ध्वनि की, "तुम्हें भी कुछ कहना चाहिये चुनसिंग।"

उन्होंने चुनसिंग को कुछ शब्द कहने के लिये तैयार कर तो लिया पर बोलते बोलते उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े, "अगर चेअरमैन माओ न होतें तो मैं आज विधवा होती।" —वह लड़का जिससे चुनसिंग की सगाई कर दी गई थी तपैदिक का मरीज था और हाल ही में मर चुका था।

४ फरवरी की शाम को (पुराने कलैण्डर के हिसाब से १२ वें चाँद की २८ तारीख को) ये दोनों जोड़े गाँव के मुखिया पेंग चू तांग के साथ जिला कचहरी गये जहाँ से उन्हें शादी का अनुमति पत्र लेना था।

जिलाधीश शाओ सु चांग के दफ्तर में कोयले सुलग रहे थे। दीवालों पर चेअरमैन माओ, कमान्डर इन चीफ चू तेह, वाइस चेअरमैन ली शाओ ची और प्रधान मंत्री चू ऐन लाई की तसवीर टँगी हुई थी। चूंकि जिलाधीश अन्दर कोई मीटिंग कर रहे थे, पेंग चू तांग ने इस अवसर को इन राष्ट्रीय नेताओं की तस्वीरें दिखाने में और समझाने में स्तैमाल किया। चारों नौजवान व्यक्तियों को उसने इन नेताओं का परिचय दिया जो कि बहुत देर तक बड़ी दिलचस्पी और प्रशंसा के भावों में लीन खड़े देखते रहे।

अन्त में जिलाधीश बाहर आये और उन्होंने पैंग चू तांग से इन दोनों जोड़ों की पुरानी दर्द भरी कहानी सुनी और यह भी सुना

कि किस बहादुरी और उत्साह से इन्होंने संघर्ष किया है। पैंग चू तांग ने यह भी बतलाया कि इनका आपस का प्रेम खेती सुधार के दौरान में बढ़ता गया है।

इसके बाद शाओ सु चॉग ने उनसे कुछ व्यक्तिगत सवाल किये और इस बात को निश्चय मालूम किया कि वे लोग खुद अपनी मरजी और खुशी से ही यह शादी कर रहे हैं। तब उन्होंने मेज की दराज में से शादी सम्बन्धी फार्म निकाले और उसमें उनसे नाम, उम्र, घर, गांव वगैरह ठीक ठीक भर देने को कहा इसके बाद वे फार्म दफ्तर में क्लर्क के पास भेज दिये गये जहां से उन्हें अनुमति पत्र मिल गया।

इसी समय जिला कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री सिउंग पैंग भी आ पहुंचे। उन्होंने दोनों जोड़ों को बधाई दी। फिर बात चीत का सिलसिला शादी के बाद की योजनाओं पर घूम गया।

फू चुआन बोला, "मैंने और चुनसिंग ने तो पहिले ही तै कर लिया है, हम दोनों जवान हैं, मेरे परिवार में और कोई नहीं है, और इसकी सिर्फ मां है। यह दोनों काम करके अपना खुद गुजारा कर सकती हैं इसलिये मेरी आपसे प्रार्थना है कि मुझे जन मुक्ति सेना में शामिल होने की इजाजत दी जाय।"

"हम दोनों ने भी तै कर लिया है"। लीता मिंग भी अपनी जगह से खड़ा हुआ बोला, "जन मुक्ति सेना मुझे चाहे सिपाही के तौर पर या रसोइये की शकल में, या और किसी काम के लिये ले, मैं जाने के लिये तैयार हूँ।"

सिउंग पैंग ने पूछा, 'क्या आप चारों ही रक्षक दल के सदस्य नहीं हैं ?"

"हां !" फू चुआन ने जवाब दिया, "हम जमीदारों की निगरानी करने के लिये रक्षक दल में शामिल हुए थे। अब चूंकि खेती सुधार पूरा हो चुका है, किसान सभा उनकी देखभाल कर सकती है। हम जानते हैं कि चांगकाई शेक तमाम जमीदारों का सरदार है और

अमरीकी साम्राज्यवाद चाँगकाई शेक का भी सरगना है। जब तक उनके मालिकों का तख्ता नहीं पलट दिया जायगा, जमीदारों के होश ठिकाने नहीं आयेंगे।"

शाओ सु चाँग और सिउंग पैंग ने यह सुन कर चारों नौजवानों से अलग अलग हाथ मिलाया। सिउंग पैंगने कहा, "बेशक आजाद चीन फौज में तुम्हारे जैसे आजादी पाये हुए किसानों की जरूरत है जिनमें इतना अदम्य उत्साह, देशभक्ति और बड़ी ऊंची राजनैतिक चेतना भरी हुई है।

जब ये नवदम्पति वापिस लौटे तो घाट पर पूरा रक्षक दल उनसे मिलने आया। खाई की मरम्मत करने वाले भी कुछ जल्दी काम छोड़ कर अपने कन्धों पर कुल्हाड़ी, फावड़े और डालियां लादे, चल दिये। दोनों नवदम्पतियों के पीछे पीछे, पैंग चू के नगले की ओर, सब कोई चल पड़े। रास्ते में गीत गाते जा रहे थे।

मन्दिर के सामने फिर रौनक हो उठी। पंडाल सजाया गया। दोनों तरफ पोस्टर लगे हुए थे जिनमें लिखा था "शादी में आजादी" और "इन्कलाब के साथी"। खुले आसमान के नीचे पुराने पेड़ों पर भी लाल रेशमी पट्टियां बांधी गई थी। सूरज की किरनें माओ जे तुंग की तस्वीर से अठखेलियां खेल रही थीं।

गाजे ,बाजे, संगीत और नाचके बीच दोनों दम्पति स्टेज पर पहुंचे चुनसिंग और युलिऐन दोनों चटकदार धारियों वाले कपड़े के नये गाउन पहने हुए बैठी थीं। मां ली भी एक नीला रेशम गाउन पहने थी जिसमें मुलायम बालों की पट्टी थी और जो किसी जमीदार से जब्ती में मिला था। फू चुआन और लीतामिंग नई नीली पोशाक में थे।

पैंग चू तांग की देखरेख में चारों ने शादी की सनद पर दस्तखत किये। नीचे से किसानों ने मांग की "दूल्हा लोग आवें और कुछ बोलें।"

फू चुआन और ली ता मिंग ने खड़े होकर ऐलान किया कि उन दोनों ने फौज में भरती होने का निश्चय किया है, और उनकी पत्नियों ने इसके लिये इजाजत देदी है।

यह ऐलान सुनकर बड़े जोर की हर्ष ध्वनि हुई। इसी बीच ली चैन नान की आवाज सुनाई दी। "सभापति महोदय! में भी फौज में भरती होना चाहता हूं।" इसके साथ ही अनेकों हाथ यह जाहिर करने को उठे कि वे भी शामिल होना चाहते है।

यहां पर सिनवू ने यह महसूस किया कि सबको इस बारे में समझाने की जरूरत है। इसलिये उसने उठ कर स्टेज से कहा:—

"किसान साथियो! यह बड़ी अच्छी बात है कि आपमें से इतने सारे लोग जन सेना में शामिल होना चाहते है चूंकि आप लोग खेती सुधार के जरिये स्वतंत्र हो गये हैं। इसका मतलब यह है कि खेती सुधार ने न सिर्फ हम किसानों की आर्थिक बेड़ियां काट दी हैं वरन् इसने हमारी देशभक्ति को जगा दिया है। इसकी बदौलत हम यह समझ सके हैं कि यह सारा देश हमारा है और इसकी रक्षा करना हमारा ही काम है।

"फिर भी जन सेना में सिर्फ आवेश में आकर भरती होना उचित नहीं है। मैं आप लोगों से कहूंगा कि आप इन दोनों नये दम्पतियों की मिसाल से सबक लें। वे लोग आजादी वाले दिन की मीटिंग से ही इस बात पर गौर करते रहे हैं और काफी समझ बूझकर उन्होंने ये फैसला लिया है। उन्होंने हर बात ठीक ठीक निश्चित कर ली हैं। वे जानते हैं कि जन सेना में भरती होने के साथ ही पैदावार भी जारी रखनी है चूंकि अब पैदावार बढ़ाना उतना ही अहम है जितनी देश की रक्षा।

"अगर आपने भी इस सवाल पर खूब गौर कर लिया है, अगर आप अब भी यह समझते हैं कि आपको जन सेना में भरती होना चाहिये तो किसान सभा और गाँव की सरकार जरूर आपके मामले की सिफारिश करेगी बशर्ते कि आपकी तन्दुरुस्ती ठीक हो और आपके परिवार वालों को कोई ऐतराज न हो।"

इस पर फिर हर्ष ध्वनि हुई। इसके बाद पैंग कू चांग स्टेज पर आया। एक कागज की शीट खोलने के बाद उसने कहना शुरू किया :—

"पिछले दस दिनों से हमारे गाँव के अनेकों किसान, बूढ़े और नौजवान, माओ को खत भेजना चाह रहे थे। अब मैंने उन तमाम विचारों को एक जगह इकट्ठा कर लिया है और एक शामिल खत बना दिया है। मैंने आपकी मूल बातों को ज्यों का त्यों रहने दिया है; सिर्फ यह ध्यान रखा है कि कोई बात दुहराई न जाय। इस मौके पर मैं आपको उसे पढ़कर सुनाये देता हूँ। अगर आपको पसन्द न आये तो बता दीजिये ताकि मुनासिब संशोधन कर लिया जाय। अगर सब दुरुस्त हो तो टिकट लगाकर उसे लिफाफे में बंद करके भेज देंगे और पाँच रोज के अन्दर वह चेअरमैन माओ के पास पीकिंग पहुंच जायगा।"

फौरन ही सब लोग खामोश हो गये और ध्यान से सुनने को तैयार हो गये। यह उनका अपना खत था और इसलिये इसकी बड़ अहमियत थी। एक साफ और बुलन्द आवाज में पैग कू चांग ने हर शब्द को शुद्ध उच्चारण करते हुये पढ़ना शुरू किया।

"हमारे प्यारे नेता माओ, चीनी राष्ट्र के महान् रक्षक।"

"हम हुलिंग मण्डल में सिनलू गाँव के रहने वाले हैं। हम यह खत आपको अपनी कृतज्ञता स्वरूप लिख रहे हैं कि आपने आजादी के संघर्ष में हमें मदद दी। साथ ही हम आपको अपने भविष्य की योजनाओं की रिपोर्ट भी देना चाहते हैं।

"हमारे गाँव में अब भी ऐसे लोग हैं जिन्हें सन् १६२७ की याद है जब आपने प्रतिक्रियावादी युद्ध सामन्तों और जमीदारों के खिलाफ संघर्ष करने में हमारी रहनुमाई की थी। बाद में आपको मजबूरन छोड़कर जाना पड़ा चूंकि नालायक और बेईमान चांगकाईशेक ने इनक्लाब के साथ गद्दारी की। उसके बाद का जमाना हमारे लिये अन्धकार का था। एक तरफ तो जमीदार हमें चूसते थे, दूसरी

और हमें एक प्रतिक्रियावादी सरकार को टैक्स और आदमी देने पड़ते थे। उनके हर सम्भव असम्भव आदेशों को किसी न किसी प्रकार पूरा करना पड़ता था। करीब बीस साल तक हम चावल पैदा करने वालों को चावल का एक दाना खाने को नहीं मिला। हमें अपना पेट सूखे आलुओं और उसके छुकलों से भरना पड़ता था। हम फटे चीथड़ों में रहते थे। पैरों के लिये एक जोड़ी चप्पल तो हमारे लिये बड़ी भारी ऐश की चीज थी। रात को हम अपने बैलों और मवेशियों के बाड़े में गीली और गन्दी धरती पर सोते थे। असल में तो हमारी जिन्दगी जानवरों से भी गई गुजरी थी और हमें हमेशा चांगकाईशेक का आतंक रहता था।

"अगस्त १९४९ में आप वापिस आये जिसका मतलब है कि आपकी रहनुमाई में आजाद चीन फौज और दूसरे कार्यकर्त्ता, जिनको आपने राजनैतिक शिक्षा दी, वापिस आये। हम किसानों के लिए यह ऐसा लगा जैसे रेगिस्तान में हरियाली मिल गई हो।

"यह बताने की जरूरत नहीं है कि अब तक कुछ जमीदार ऐसे थे जिन्हें चांगकाईशेक के वापिस आने की उम्मीद थी। हमारे अंदर भी ऐसे पिछड़े लोग थे जो हर बात का दोष 'तकदीर' को देते थे और जमीदारों से संघर्ष करने में हिचकते थे। पर अन्त में हम सब उठ खड़े हुए—और इस बार उठकर खड़े हो जाने का अर्थ है, हम अब अखीर दम तक जी जान से क्रान्ति को सफल बनायेंगे।

"पिछले तीस सालों से आपने और आपकी रहनुमाई में दूसरे साथियों ने चीनी जनता को विदेशी पंजों से छुटकारा दिलाने के संघर्ष का नेतृत्व किया है। अब तक कई विदेशी ताकतों की बेड़ियां चीन को जकड़े हुए थीं। आपने उनसे छुटकारा दिलाने में चीन के राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया है। और आज हम उस आजादी का फल चख रहे हैं। हमारे लिये सुख का पहला सवेरा हुआ है। हम ये सब आपकी बदौलत पा रहे हैं। आपकी और कम्युनिस्ट पार्टी की शानदार मिसाल हमारे सामने है जिससे हम यह भली भांति समझ

चुके हैं कि 'तकदीर' और 'जन्मपत्री' की सभी बातें कोरी गप्प हैं।

"आपकी हिदायतों ने हमारे भाग्य पलट दिये हैं। हमारे गाँव में खेती सुधार हो चुका है और हमने सामन्तवाद व उसके शोषण का खातमा कर दिया है। इस प्रकार गुलामी की सब जंजीरें तोड़कर फैंक दी हैं। अब हम अपना सिर ऊँचा करके चल सकते हैं और अपने गाँव के मालिक खुद कहला सकते हैं।

"हम खास तौर आपको दो शादियों के बारे में बताना चाहते हैं। एक तो फूचुआन और चुनसिंग में और दूसरी लीतामिंग और युलिऐन में। यह चारों ही रक्षक दल के मैम्बर हैं। दोनों ही दूल्हे खेत मजूर थे जिन पर एक इंच जमीन भी अपनी न थी। अब हरेक को कुछ जमीन मिल गई है, घर मिल गया है और पत्नी मिल गई है। चुनसिंग एक बाल दुलहिन थी और युलिऐन एक नौकरानी। दोनों सामन्ती समाज से सीधे शोषित थीं। अब उन दोनों के पास जमीन है और अपने मकान हैं। उन्होंने अपनी अपनी मरजी से जीवन साथी चुन लिये हैं।

"हमारे गाँव में कुल मिलाकर १६२ परिवार हैं। इनमें ११५ परिवारों पर या तो बिल्कुल जमीन नहीं थी या किसी किसी पर एक दो बीघा थी। वे सब खेती सुधार से पहिले खेत मजूर थे या गरीब किसान थे।

"खेती सुधार के सिलसिले में हमने जमींदारों से ६७ एकड़ गीली जमीन, १५ एकड़ सूखी जमीन, ४५ खेती के औजार, ६ बैल, ५१ कमरे (छोटे बड़े मिलाकर) और बेशी गल्ले का ४००० यूनिट पाई। पुराने समय में हमारे सिर के ऊपर की छत और पैरों के नीचे की जमीन सभी कुछ दूसरों की थी। हममें शिकायत करने या आँसू बहाने की भी हिम्मत नहीं थी। अब हमारे खुद के मकान हैं, हमारी निजी जमीन है और एक सुनहरा भविष्य सामने है।

"अब चूंकि हमारी माली हालत कुछ सुधर गई है, हम अपना सांस्कृतिक जीवन भी ऊँचा उठाना चाहते हैं। वर्ग विश्लेषण के दिनों

से ही, हमारे गाँव में सबने पढ़ना शुरू कर दिया है। अब हम आपसे अभिमान पूर्वक कह सकते हैं कि पांच साल से छोटे बच्चों को छोड़कर बाकी सब अपने दस्तखत खुद कर सकते हैं। कुछ लोगों ने तो ३०० शब्द तक याद कर लिये हैं। यह बहुत बड़ी सफलता है और हमारी किसान संस्कृति के विकास का क ख ग है। हम मजबूती और धैर्य के साथ ऊपर बढ़ते जायेंगे। ऊपर की सीमा आसमान है।

"हम ये अच्छी तरह समझते हैं कि यह परिवर्तन–यह इनक़लाब पूरे देश के आजाद होने से ही सम्भव हुआ है। हमारी अपनी सरकार है तभी हम आज की हालत हासिल कर सके हैं। हम महसूस करते हैं कि हमारे राष्ट्र के भविष्य की सफलता हमारे पैदावार बढ़ाने की कोशिशों पर निर्भर करती है। साथ ही यह जरूरी है कि चीन के देहात में जनता की लोकशाही को मजबूत किया जाय।

"इसीलिये हमने यह निश्चय किया है कि हम अपनी सारी ताकत खाइयाँ और पानी के दूसरे निकासों की मरम्मत करने, जमीन को खाद देने और जोतने में लगायेंगे ताकि आने वाली कातिक की फसल बहुत बढ़िया हो और हम आपके प्रति अपनी कृतज्ञता अमली रूप में जाहिर कर सकें और चीन को आर्थिक मोर्चे पर मजबूत बना सकें।

"देश की रक्षा में भी हम अपना पूरा हाथ बटायेंगे। रक्षक दल के मैम्बर की हैसियत से, कोरिया के लिये वालन्टियर बन कर या आजाद चीन फौज में शामिल होकर, किसी न किसी रूप में हम अपना कर्त्तव्य निभायेंगे। हम खूब समझ चुके हैं कि सामन्त विरोधी संघर्ष के नतीजों और अपनी जीत को स्थायी बनाने के लिये देश की रक्षा निहायत जरूरी और पहिला काम है।

"और बहुत सी बातें हमें आपसे कहनी हैं। हम अपने लिए एक स्कूल बनाना चाहते हैं। जल्दी ही अपना एक सहकारी भंडार भी हम खोल रहे हैं। सेविन स्टार स्लोप के पास एक दवाखाना भी जल्दी ही खोला जायगा।

"हमने यह भी सुना है कि शहर से शीघ्र ही मवेशियों का इलाज करने वाले डाक्टरों का एक दल मय जरूरी सामान के—देहात में आने वाला है। इससे हमारे उपयोगी जानवरों का तमाम बीमारियों से बचाव हो सकेगा।

"कातिक की फसल के बाद, इस गांव की औरतें, सहकारी भंडार के सहयोग में एक कताई केन्द्र स्थापित करना चाहती हैं। हमें पूरा भरोसा है कि हमारे दिन बहतर होते चले जायेंगे। 'आज' तो एक बहुत ही शानदार 'कल' की सूचना मात्र है।

"हम जानते हैं कि अगर हम वास्तव में अपनी भलाई और खुशहाली चाहते हैं तो हमें अमरीका के मुकाबले कोरिया की मदद का आन्दोलन मजबूत बनाना चाहिये और तब तक गाफिल नहीं रहना चाहिये जब तक कि हम अपने दुश्मनों अमरीकी हमलावरों और उनके पिट्ठू चांगकाईशेक को बिल्कुल खतम न कर दें।

"इसलिये हम सिनलू गाँव के किसान नीचे लिखे कामों को पूरा करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

(१) तमाम खाइयों और पानी के निकासों की मरम्मत करना बैसाख की फसल के लिये जोतने बोने का इन्तजाम करना और खाद्य पदार्थों को अधिक से अधिक पैदा करना।

(२) किसान सभा और रक्षक दल के मेम्बरों की तादाद बढ़ाना और इन संगठनों को मजबूत करना। जनता के हितों की रक्षा करना और प्रतिक्रियावादियों पर कड़ी नजर रखना।

(३) अमरीका के प्रतिरोध और कोरिया के समर्थन में चलने वाले आन्दोलन की, आदमी व गल्ला आदि से पूरी पूरी मदद करना और इस प्रकार क्रान्ति को पूर्ण सफल बनाना।

"हमारी शुभ कामनायें आपके साथ हैं, आपका स्वास्थ्य च ान की तरह रहे और आप सूर्य की तरह चमकें।

(दस्तखत)—सिनलू गाँव के सब किसान

४ फरवरी, १६५१।"

———